चौथा अध्याय

नारी अस्मिता को अभिव्यक्त करनेवाली प्रमुख कहानियाँ

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानियों में नारी जीवन के समस्त पक्षों का प्रभावशाली चित्रण देखने को मिलता है। नारी के वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को यथार्थपूर्ण ढ़ंग से अभिव्यक्त करनेवाली कहानियॉ इस काल में हज़ारों की संख्या में प्रकाशित हो गयी हैं। इनमें नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति पर्याप्त मात्रा में हुई है। इन कहानियों में से कुछ श्रेष्ठ कहानियों का विश्लेषण एवं विवेचन इस अध्याय में किया जाता है।

'निशा'

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है। सत्तरोत्तर काल में नारी सामाजिक बन्धनों को तोड़कर बाहर आयी है। शैक्षिक आर्थिक और वैचारिक दृष्टि से वह सजग हुई है। इससे नारी संबन्धी परंपरागत मान्यताएँ बदल रही हैं। आज नर और नारी दोनों समान धरातल पर शिक्षा ग्रहण करते है और सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं। शिक्षा पाने पर आधुनिक युवतियॉ पुरानी मान्यताओं और परंपराओं को नकारने के लिए सशक्त बन जाती है। इतना ही नहीं; अपनी ही स्वतंत्र पहचान बनाना भी चाहती है।

मंजुल भगत द्वारा लिखित 'निशा' में निशा के रूप में एक सशक्त चरित्र की सृष्टि कहानीकार ने की है। पांच बहिनों के परिवार में निशा चौथे नंबर का है। चौथी बेटी होने के कारण उसे ज्यादा लाड़ प्यार नहीं मिला। स्वयं को वह खुशकिस्मत समझती है। शादी करवाने के लिए मेहमानों के सामने पॉच लड़कियों की प्रदर्शिनी निशा को अच्छा नहीं लगा। बी. ए के बाद निशा के लिए भी पिताजी जोर- शोर से वर ढूँठने लगे। व्यक्तित्व के विकास और आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षित होना अति आवश्यक है। यह पहचानकर निशा आगे पढ़ना चाहती है। तब निशा कहती है कि "शादी-वादी मुझे अभी नहीं करनी चाहे पिताजी मुझे जिन्दा ही क्यों न चुनवा दें''।[1] सफलता की उच्चतर सीढियॉ चढ़ने को वह आतुर है, दूसरे पर निर्भर रहना वह पसंद नहीं करती है और अपना जीवन अपनी मर्जी के अनुसार जीना चाहती है। एम. ए. के बाद पी.

---

1 गुलमोहर के गुच्छे -मंजुल भगत, पृ. 79।

एच. डी. के स्कॉलरशिप पर वह घर छोड़कर अमरीका जाती है और पी. एच. डी. करते करते एक नौकरी भी ले लेती है। निशा के 'क्वालिफिकेशन्स' के साथ सुयोग्य वर ढूँढने में कठिनाई होगा इसलिए पिताजी ने कई बार निशा को लौट आने को कहा, लेकिन वह तैयार नहीं है। इतने में परिवार के अन्य बहनों की नावें शादी के बाद तुफान में दिशा खोजती है।

थीसिस सबमिट कर वापस लौटने की तैयारियॉं करते समय पिताजी की मृत्यु की खबर उसे मिलती है और वह जल्दी ही घर लौट आती है। गृह-नाटक के निर्देशक-निर्माता के गायब हो जाने के बाद घर का खालीपन और मॉं का बेबसी रूप देककर उसे बहूत दुख होता है। वह इस घर का अभिभावक बनने का निर्णय लेती है और अपनी बहनों के लिए पीहर को बनाए रखना चाहती है। निशा मॉं से कहती है कि "तुम यहॉं ही रहोगी। मेरे पास। मुझे हॉल में तालियों की गड़गड़ाहट नहीं चाहिए। कोई दर्शक- प्रशंसक नहीं चाहिए। तुम चली जाओगी मॉं, तो दीपा और गुड़ड़ी के लिए भी कोई पीहर नहीं रह जाएगा।"[2] मॉं निशा को ही अपना अभिभावक मानी है और उसे बूढ़ापे का आसरा मानकर उसके पास ही रहने का निर्णय भी लेती है।

भारतीय समाज में पुत्र ही परिवार का उत्तरदायित्व निभाता है और लोग बेटे को ही श्रेष्ठ और बूढापे का सहारा मानते हैं। निशा की मां को बेटे की कमी थी। इस कमी को निशा बेटी होकर भी पूर्ण करती है। वह शिक्षा प्राप्त कर, आत्म निर्भर बनकर, आत्मसम्मान की जिन्दगी बिताती है। वह अपने आत्मबल और कार्य के आधार पर स्त्री की प्रतिष्ठा के लिए जागृत भी है।

'नागपाश'

साधारणत: मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक परिवेश के अनुरूप ही होता है। नारी को जीवन में अनेक समस्याओं का मुकाबला करना पड़ता है। जब पारिवरिक

---

2 गुलमोहर के गुच्छे -मंजुल भगत , पृ. **82**।

समस्याओं से जूझना पड़ता है तब वह पति से शारीरिक और मानसिक सहायता चाहती है। पति के साथ अच्छा संबन्ध न होने पर उसको यातनाओं की शिकार होना भी पड़ता है। संतुलित और परंपरागत जीवन जीना चाहनेवाली पत्नी भी ऐसे अवसर पर विद्रोही बन जाती है।

'नागपाश' मंजुल भगत की श्रेष्ठ कहानी है। नायिका शिवानी कॉलेज में अध्ययन के समय अपनी ही कक्षा की अति मॉडर्न युवक प्रशांत से प्रेम करती है। मॉ-बाप और प्रिय मित्र भी इसका घोर विरोध करते हैं। पर अम्त में वह प्रशांत से विवाह कर लेती है। विवाह के बाद उसे पति प्रशांत के चरित्र का खोखलापन समझ में आता है। प्रशांत शाराबी बन चुका है पत्नी को गाली देता है और उसे मारना भी उसका स्वभाव बन चुका है। सामान्य भारतीय नारी की तरह शिवानी भी मान- मर्यादा के नाम पर पति द्वारा की गयी हर पीड़ा को चुप-चाप सहन करती है। शादी के तीन सालों के बाद शिवानी को लगता है कि आज विवाह की वार्षिकी नहीं मौत की शोक मनाना चाहिए।

जब नारी पत्नी बनती है तब उसकी कल्पना, इच्छा, स्वप्न, भावनायें पुरूष से संबद्ध होती है। जब वह मॉ बनती है तब उसकी सारी कल्पनायें बच्चा एवं उसके भविष्य पर केन्द्रित होती है। शिवानी मॉ बननेवाली है। लेकिन इस पर उसे खुशी नहीं है। बच्चा के भविष्य पर चिन्ता करती है तो शिशु के कल्याण और सुरक्षा का भय उसे सताता है। जीवन की त्रासदी से वह इतनी ही दुखी है कि वह स्वयं ही अपने गर्भपात का निर्णय लेती है। गर्भपात में ही बच्चे की और अपनी ही मुक्ती देखती है। "उसे जन्म से पहले ही उस नागपाश से मुक्त कर दिया, जिससे वह स्वयं जकड़ी हुई थी"[3]

सामान्यत: कोई स्त्री अपनी संतान को समाप्त नहीं करती है। लेकिन शिवानी शिक्षित महिला है और आधुनिक विचारों पर आस्था रखनेवाली है। रूढी और परंपरा को तोड़ने की क्षमता उसी में है। वह अपनी ही अस्मिता को पहचाननेवाली है। इसलिए गर्भपात धार्मिक और परंपरागत नैतिकता को नकारनेवाले होने पर भी वह स्वयं निर्णय लेकर अजन्मे शिशु और

---

3 गुलमोहर के गुच्छे -मंजुल भगत, पृ. **67- 68**।

अपने लिए मुक्ती की नई राह ढूँढती है।इसप्रकार शिवानी अस्मिता की तलाश में छतपटाती भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है।परंपरागत नैतिक मूल्यों की तुलना में अस्मिता को अधिक महत्व देनेवाली शिक्षित एवं चिंतनशील नारी के रूप में वह सामने आती है।

'अंधे मोड़ से आगे'

आज की नारी अपने ही अस्तित्व और अस्मिता को सबसे महत्वपूर्ण मानती हैं। वह अपनी इच्छा और आकांक्षा के अनुरूप जीना चाहती है।पुरूष के उपभोग की वस्तु बनने से वह इनकार करती है।वह मात्र भौतिक साधन संपत्ती से तुष्ट नहीं हो सकती।केवल दैहिक प्रेम से उसे बांधकर नहीं रख सकता है।

'अंधे मोड़ से आगे' राजी सेठ की एक स्त्रीवादी कहानी है।कहानी की नायिका के लिए अपनी पहचान और अपना व्यक्तित्व बहूत मायने रखता है।कहानी की 'वह' ऑफिस में कार्यरत है।पति की उपेक्षा और प्रताड़ना से त्रस्त होकर वह बॅस मिश्रा के साथ विवाह कर लेती है जिसकी पहली पत्नी का देहांत हो चुका था।लेकिन वह अतीत को भूल नहीं सकती।इसलिए बॉस के साथ विवाह होने पर भी वह सुखी नहीं हुई है।बीच-बीच में वह अतीत और वर्तमान की तुलना करती है।इसके अलावा मिश्रा की मृत पत्नी की याद भी उसे बेचैन करती है।घर में सारे भौतिक सुख होने पर भी पति पर एकाधिकार न मिलने पर ये सब सुख उसे नगण्य लगने लगते हैं।वह तपन से मुक्त होने केलिए कमरे का दरवाज़ा और खिड़कियॉ खोल देती है।तब बाहर की रोशनी कक्ष में और घुस बैठती है जिससे उसमें नया आत्मविश्वास भर आता है।उसे लगता है कि जीने केलिए उसे किसी की ज़रूरत नहीं है।

भारत वर्ष में ऐसा माना जाता है कि मातृत्व ही नारीत्व की पराकाष्ठा है।पर उत्तराधुनिक युग में स्त्रियों के विचार में भारी बदलाव आया है।जिस पुरूष को वह अंतर्मन से प्रेम नहीं कर सकती उसकेलिए संपूर्ण समर्पण भी नहीं कर सकती है।उसके लिए पति का शारीरिक संबंध 'रेप' जैसा ही है।कथानायिका अस्पताल जाकर बेझिझक और निर्भीक होकर

डाक्टर के सामने गर्भपात का प्रस्ताव रखती है। "यह किसी की जिम्मेदारी नहीं है''। अकंप स्वर में उसने डाक्टर अग्निहोत्री की आखों में सीधे देखते हुए कहा

''यू मीन, यह.....''

''जी हॉ, यह रेप का केस है।''[4]

वह मिश्रा के बच्चे की मॉ बनना नहीं चाहती क्योंकि मन से वह मिश्रा से जुड़ी नहीं है। मातृत्व के नाम पर अपनी भावना और इच्छा को कुचलने के लिए वह तैयार नहीं है। वह अपने स्वाभिमान को आहत होने नहीं देती। स्वाभिमान और अस्मिता की रक्षा के लिए वह अपना अवांछित गर्भ तक नष्ट कर देती है। इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में अस्मिता की तलाश में एक पुरूष को छोड़कर दूसरे पुरूष को स्वीकारने पर भी अतृप्त रहनेवाली नारी का चित्रण हुआ है। अंत में दोनों पुरूषों को त्यागकर अस्मिता की रक्षा के लिए प्रयत्नशील स्वावलंबी नारी के रूप में 'वह' सामने आती है।

'सिसकते सपनों की शाम'

देश में कामकाजी नारियों की संख्या दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए आर्थिक दृष्टि से भी स्वावलंबी होना ज़रूरी है। भारत में आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने के बावजूद भी नारी को पारिवारिक परंपराओं, रूढियों, प्रथाओं, मान्यताओं एवं मर्यादाओं से मुक्ति नहीं मिली है। कामकाजी महिलाओं को दोहरा दायित्व वहन करना पड़ता है। उसे नौकरी के साथ साथ घर का दायित्व भी वहन करना पड़ता है। क्योंकि सहस्राधिक वर्षो का पूर्वग्रसित मानस में अभी भी पर्याप्त बदलाव नहीं आया है। आज भी मध्यवर्गीय परिवार में रसोई में स्त्री की सहायता करना पुरूष के लिए उचित कार्य नहीं माना जाता है।

कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा लिखित 'सिसकते सपनों की शाम' एक ऐसी नौकरीपेशा नारी की कहानी है। मीरा डिग्री कॉलेज में अंग्रज़ी की व्याख्याता है। पति संजीव स्कूल में काम करते है। बच्चे हैं चारू, शालू और गुड़िया। दिन भर नौकरी करने के साथ-साथ घर के सभी

---

4 अन्धे मोड़ से आगे- राजी सेठ पृ. 118

काम सुचारू रूप से नहीं चलने से मीरा सलोनी को नियुक्त करती है।पर सलोनी का तात्पर्य केवल तनख्वाह मिलने में है।कभी-कभी मीरा को पढ़ने केलिए समय भी नहीं मिलता है। पढने केलिए तैयार करते समय बच्चे या पति उसे मांगती है।कभी-कभी कॉलेज में पहूँचने में देरी हो जाती है।प्राचार्य और सहवर्तियॉ भी उसे कोसती है।इसके अलावा पति के परिवारवालों द्वारा दी जानेवाली मानसिक पीड़ाएँ भी वह आदर्श भारतीय नारी के रूप में चुपचाप सहन करती है।

एक दिन सबेरे से ही बच्चे और पति उसे विभिन्न कारणों से सताती है और उसका मन विद्रोह से भर जाता है।उस दिन तनाव के कारण वह छात्राओं से रूखे स्वर में बातें करती है।लौटकर घर पहूँची तो देखा कि दरवाज़े पर बडा सा ताला लगा है गुडिया मिटटी में खेल रही है चारू तथा शालू जाडे में केवल बनियान पहनकर ऊधम मचा रही है और ताला खोलकर देखती है तो जूठे बर्तन और गीला चौका देखकर वह हैरान हो जाती है।इतने में पति संजीव आता है।वह एक बार बिखरे घर को देखता है फिर पत्नी की ओर गुर्राकर देखते हुए और चाय का आदेश देता है।मीरा अनसुनी वहीं रहती है ।वह बच्चे को स्वेटर पहनाती है और बिस्कुट मॉगनेवाली गुडिया को पुचकारकर कमरे में लेट जाती है।यह देखकर संजीव क्रोध और ईष्या भरी शब्दों से उसे कोसता है।मीरा स्वावलंबी और स्वाभिमानी नारी है।वह कमाती है, बच्चों को पालती है और यातनाओं को भी सहती है।पर वह स्वाधीन होकर भी पराधीन है।संजीव की कटू की बातें सुनकर अब वह अपने को बस में नहीं रख सकी। "जो नहीं चाहती थी वही बोलने लगी; तो क्या तुम्हारी गुलाम हूँ ?तुम क्यों नहीं कुछ करते? तुम्हारे बच्चे नहीं है ये?''

''मैं ''संजीव ने ऑखें तरेरकर पूछा।

'हॉ तुम''।मीरा ने उत्तर दिया।''[5]

वास्तविकता यह है कि पुरूष की मानसिकता में अभी भी उल्लेखनीय बदलाव नहीं आया है।आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने पर भी पुरूष नारी को समकक्ष मानना नहीं

---

5 नौकरीपेशा नारी ः कहानी के आइने में, संपादक: पुष्पपाल सिंह, पृ. **53**।

चाहता है।वह स्त्री को अपने पैरों के नीचे दबाना चाहता है।यदि कोई स्त्री पुरूष के अधिकार को चुनौती देती है तो उसे पसंद नहीं आता।स्त्री के विद्रोही रूप को समझने या उसकी अस्मिता को मानने केलिए वे तैयार नहीं है।संजीव मीरा पर नौकरीपेशा होने के कारण घौंस होने का आरोप लगाते है तो मीरा क्रोध से भर जाती है और पति के अधिकार के आगे प्रश्नचिन्ह लगाती है कि ''नहीं तो क्या धौंस सहती रहूँगी?'' मीरा ने व्यंग से कहा।उसका शरीर कौंध से पत्ते की तरह कांप रहा था। ''घर का काम तुम्हारा हैं।बाहर का काम तुम्हारा है।तुमसे किसने कहा कि नौकरी करो।दुनिया के लोग जैसे दो सौ में रहते हैं, तुम भी रहो।''

'और तुम्हारी दिन- रात बातें सुनो।''मीरा मुँह चिढ़ाकर बोली।

'मैं कहता हूँ, चुप रहो।''वह दाँत पीसकर बोला

'नहीं तो क्या करोगे?''

'मेरे घर में यह सब नहीं चलेगा, तुम कहीं भी चली जाओ।''

'हाँ- हाँ चली जाऊँगी।''वह बूरी तरह हाँफ रही थी।

संजीव बाहर चला गया।वह बिस्तर पर पड़ी देर तक रोती रही।' [6]

नगरीय जीवन अपेक्षाकृत अधिक महंगा होता है।फलतः नगरों में पुरूषों के अतिरिक्त स्त्रियों को भी नौकरी करनी पडती है।इसलिए मीरा भी नौकरी करने केलिए तैयार हो जाती है।इसप्रकार घर का दोहरा दायित्व उसपर पड़ता है।लेकिन उसकी सहायता केलिए ज़रा हाथ बढाना नहीं चाहता है उसका पति संजीव।वह ऐसा जीवन जीना चाहता है बिना किसी बाधा और जिम्मेदारी के।यह पहचानकर मीरा के स्वाभिमान को चोट लगती है।वह अपनी अस्मिता को पहचानकर पति पर आक्रोश करती है।परिवार की जिम्मेदारियों के आधिक्य से कमर टूट जानेवाली नारियों का प्रतिनधित्व करती है प्रस्तुत कहानी की नायिका मीरा।वह पति

---

6 नौकरीपेशा नारी ः कहानी के आइने में, संपादक: पुष्पपाल सिंह, पृ. **54**।

के हाथ की कठपुतली बनने से साफ इनकार करती है। स्व के प्रति जागरूक होकर अपनी आत्मा और अस्मिता की रक्षा करने का श्रम भी करती है।

खोज'

आधुनिक नारी अपने व्यक्तित्व के प्रति अधिक सजग हुई है। स्त्री अगर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना चाहती है तो उसे स्वावलंबी होना पड़ता है। अपने व्यक्तित्व और अस्मिता की रक्षा स्त्री अपने को शिक्षित और स्वावलंबी बनाकर ही कर सकती है। परिवेश का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य होता है। अपने परिवेश में ही आज की नारी अस्मिता की खोज करती है।

मंजुल भगत द्वारा लिखित 'खोज' कहानी में निजी अस्तित्व की खोज करनेवाली नारी को देख सकता है। कहानी की नायिका नीलिमा शिक्षित कामकाजी तथा विवाहित है। वह 'धारा प्रवाह' नामक समाचार पत्र के रिपोर्टर है। साधारण कामकाजी नारी की तरह वह भी घर और नौकरी की दोहरी जिम्मेदारियों से व्यस्त है। दफ्तर से घर आने पर उसे लगता है कि आफिस की मिसेज़ वर्मा नीलिमा बनकर घरेलू कामकाज निपटाती है। पति केलिए वह नीलू बनती है। वह सोचती है "कभी तो ऐसा लगता है जैसे उसका कोई निजी अस्तित्व ही नहीं है; मिसेज़ वर्मा,नीलिमा, नीलू सब अलग -अलग नाटक में किए गए अलग -अलग 'रोल' हैं। उसके अन्दर का जो 'मैं' है, उसका 'रोल' क्या है ?"[7] दफ्तर के सहकर्मी, पति, माँ, बाप और घर के नौकर उसे अलग-अलग व्यक्तित्व बख्श देता है। जीवन की आपाधापी में वह अपने भीतर के 'मैं' को ढूँढना चाहती है। जी मैं हूँ। नीलिमा की त्रासदी यह है कि वह अपनी जिन्दगी को अपने आग्रह के अनुरूप नहीं जी पाती।

दफ्तर के काम से ऊबकर नीलिमा एक माह की 'एर्न्ड लीव' लेकर बंबई में माता के पास पहूँच गयी। लेकिन वहाँ उसे कोई 'चेंज' नहीं मिला। लोगों की नजरों में बडी ओहदे पर

---

7 नौकरीपेशा नारी ः कहानी के आइने में, संपादक: पुष्पपाल सिंह, पृ. **85**।

विराजित नारी होने पर भी वह तृप्त नहीं है। अन्त में जब वह जानती है कि वह मां बननेवाली है तब उसे पूर्णता का आभास होता है। गर्भवती नीलमा पति का, सास-ससुर का, मॉ-बाप का और प्रिय मित्रों का वात्सल्य चाहती है। इसलिए वह पति के घर लौटती है। दिन बीतने लगे और नीलिमा एक शिशु को जन्म देती है। नवजात शिशु को देखकर वह सोचती है कि "यही है क्या वह 'मैं' पकडाई में नहीं आ रहा था। यह तो साकार रूप में मेरे सम्मुख आ प्रस्तुत हुआ है। क्या मैं इसे ही खोजती फिर रही थी "[8]

मातृत्व की प्राप्ती स्त्री के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंश है। अस्मिता की खोज में बेचैन रहनेवाली नीलिमा मातृत्व को ही 'मैं' समझकर संतुष्ट होती है और उसे लगती हे कि उसकी 'स्व' की तलाश पूर्ण हुई है।

'उसी जंगल में'

भारतीय परंपरा में पत्नी का पति के प्रति निष्ठावान रहना सबसे पहला धर्म है। पति की क्रूरता, आक्रोश आदि को व्यवहार एवं विचार की भिन्नता के बावजूद भी उसे निशब्द झेलना पत्नी का कर्तव्य माना जाता है। शिक्षा, स्वावलंबन तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से स्त्रियों में बहूत बडाा परिवर्तन आया है। स्त्री अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग हुई है और विवाह का परंपरागत अर्थ भी बदलने लगा है। विवाह अब दो आत्माओं का मिलाप नहीं रहा। अब नारी अपने रूप और देह के प्रति सचेत हुई है। वह पति के व्यक्तित्व में पूर्णत: विलीन होना नहीं चाहती। अपने अस्तित्व के प्रति सचेत आज की नारी सारी सामाजिक परंपराओं और रूढ मूल्यों को चुनौती दे रही है। चारदीवारी में बंद नारी ने अपने लिए प्रगती के द्वार खोल दिए हैं।

'उसी जंगल में' राजी सेठ की प्रसिद्ध कहानी है। प्रस्तुत कहानी का केन्द्रीय पात्र 'वह' है। 'वह' को तुरंत आने केलिए घर से तार आया है। लेकिन उसे वहॉ जाने की तनिक भी इच्छा नहीं है। फोन करें तो भाई फिर भी जरूर आने का वादा करता है। लेकिन कभी नहीं आता। घर में भाई, भाभी और एक अन्य संबन्धी गगन आदि रहते हैं।

---

8 नौकरीपेशा नारी ः कहानी के आइने में, संपादक: पुष्पपाल सिंह, पृ **90**।

संवेदनशील और स्वाभिमानी 'वह' ससुराल जैसे जंगल में जानवर जैसे लोगों के साथ कैदी रहती है। पति का लोभी मन कभी संतुष्ट नहीं हुआ है। साधारण भारतीय नारी की तरह वह ससुरालवालों द्वारा दी गयी पीडा को चुप होकर सहने लगी। एक दिन जब उसे पति के दोस्त केलिए परोसना पडता है उस क्षण उसकी सहनशीलता समाप्त होती है। "जिस दिन वह किसी अनजान को लेकर आया था और लगा था कि वह आज रोटी नहीं, उसे ही परोसने के चक्कर में है। तो वह आख़िरी दिन हो गया था उसकेलिए । रात के ढ़ाई बजे थे। गेहूँ की बोरी के पीछे से लुकाए-छिपाए पैसे उसने बटोरे थे और बाहर निकल आयी थी।" [9] वह गर्भवती थी। मायके में आने के बाद उसे बच्चा हुआ है। लेकिन उसके मन में बच्चे के प्रति ज़रा भी लगाव नहीं है। क्योंकि वह उस वंश का था जिससे उसे सख्त नफरत है। वह कुछ दिनों में ट्रेनिंग पूर्ण करके दूसरे गांव में नौकरी करने लगती है। भाभी जो निःसंतान थी बच्ची की जिम्मेदारी लेती है।

तार मिलने से वह घर आती है। उसके पति ने तलाक के पेपर भेजे थे। तलाक देकर गगन से विवाह करने की सलाह भैया देता है। तब उसमें विद्रोही भावना जाग उठती है। वह पति को इतनी आसानी से मुक्त करना नहीं चाहती है। उसका तर्क है कि तलाक के बाद वह दूसरा विवाह कर लेगा। इसप्रकार एक दूसरी स्त्री की जिन्दगी को भी उजाड देगा। " ...मैं हस्ताक्षर नहीं करूँगी। कम- से-कम किसी औरे की जिन्दगी उजाडने केलिए वह हाथ झाड़कर स्वतंत्र तो नहीं हो सकता" [10] । तब भाई बताता है कि उसके पति ने किसी विधवा की बेटी को अपने पास रख लिया है जो माँ बननेवाली है। अगर वह तलाक के नोटिस पर हस्ताक्षर नहीं करती है तो बच्चा अवैद्य हो जाएगा। तब 'वह' के मन में उस अनजान औरत के प्रति सहानुभूति का उदय होता है और हस्ताक्षर करने केलिए तैयार हो जाती है।

आधुनिक नारियां पति को साथी मानती है। लेकिन उनका व्यवहार संगत न हो तो उसे छोडना बेहतर समझती है। आज की धारणा यह है कि किसी स्वावलंबी स्त्री को जीने केलिए

---

9 यात्रा मुक्त ःराजी सेठ पृ. **75**

10 वही, पृ. **79**

पुरूष या बच्चे की आवश्यकता नहीं है। वह स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है और अपने व्यक्तित्व और अस्मिता की रक्षा करना अवश्यक समझती है।

'त्रिशंकु'

विचार व्यक्तित्व का नियंता होता है। जैसे मनुष्य का विचार होता है वैसे ही उसका व्यक्तित्व रूपायित होता है। संबन्ध और संपत्ति के साथ-साथ विचार भी व्यक्तित्व का संचालन करते है। दुनिया में विभिन्न प्रकार के लोग एकसाथ मिलजुलकर रहते हैं। प्राचीन विचारधारा में आस्था रखनेवाले, आधुनिक विचारधारा में आस्था रखनेवाले और विशिष्ट विचारधारा या दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करनेवाले भी होते हैं। आधुनिकता संबन्धी मिथ्याबोध रखनेवाले भी होते हैं।

मन्नु भण्डारी द्वारा रचित 'त्रिशंकु' में तनु की मम्मी स्वयं को अत्याधुनिक विचारोंवाली मानती है। वह स्वयं अत्याधुनिक मानने के साथ साथ बेटी को भी आधुनिक विचारोंवाली बनाना चाहती है। तनु के मम्मी -पापा का प्रेम विवाह हुआ था। इसकेलिए उसे पिता से विद्रोह करना पडा था और इसका जिक्र ममी बडे गर्व से अब भी करती है। घर के ठीक सामने रहनेवाले लडके तनु को छेडते है। वह ममी से इसके बारे में कहती है। पर ममी लडकों को केवल बच्चे मानती है । उन लडकों को अपने घर पर चाय को बुलाकर तनु से दोस्ती करवाना चाहती है और दूसरों से बडे गर्व से इसके बारे में कहती है। इससे तनु की अस्मिता पर चोट लगती है। धीरे धीरे लडके तनु के घर में प्रतिदिन आते हैं और तनु की शेखर से बढती दोस्ती ममी को अच्छी नहीं लगती है। बीच बीच में तनु और शेखर को एकसाथ देखकर ममी परेशान हो जाती है। तनु का शेखर के घर जाना उसे अच्छा नहीं लगता, पर वह स्वयं शेखर को अपने घर बुला लाती है। कभी कभी तनु को कोसती भी है। ममी के इस तरह के व्यवहार देखकर उसे लगा कि "कई बार मन हुआ कि ममी से जाकर बात करूँ और साफ -साफ पूछूँ कि तुम इतना बिगड़ क्यों रही हो ?मेरी और शेखर की दोस्ती के बारे में तुम जानती तो हो। मैंने तो कभी कुछ छिपाया नहीं। और दोस्ती है तो वह सब तो होगा ही। तुम क्या समझ रही थीं कि हम भाई बहन

की तरह -पर तभी ख्याल आता कि ममी हैं ही कहॉ,जिनसे जाकर यह सब कहूँ।"[11] *ममी* तनु को शेखर के साथ पिक्चर देखने केलिए अनुमति नहीं देती क्योंकि वह स्वयं साथ जाना चाहती है।इस बात को लेकर मॉ -बेटी में तनाव उत्पन्न होता है।कुछ दिनों के बाद ममी फिर उसे कोसती है तो वह सोचती है कि "...पर इस बार मैं ने तय कर लिया है कि इस सारे मामले में ममी को यदि नाना बनकर ही व्यवहार करना है तो मुझे भी ममी की तरह मोर्चा लेना होगा उनसे ....और मैं ज़रूर लूँगी।दिखा तो दूँ कि मैं तुम्हारी ही बेटी हूँ और तुम्हारे ही नक्शे-कदम पर चली हूँ।"[12] *तनु गुमसुम* होकर अपने ही कमरे में पडी रहती है।और एकदम चुप होकर अपने में ही सिमट जाती है।अंत में ममी एकबार फिर शेखर और मित्रों को घर में बुलाकर खाना खिलाती है और पापा भी खुले ढ़ंग से मज़ाक करता है।

तनु की ममी स्वयं को अत्याधुनिक मानकर अपनी अस्मिता को प्रकट करने का श्रम करती है।इसके साथ तनु भी अपने अभिमान को जगाकर अस्मिता की पहचान करती है।

कथा हीन

आधुनिक युग में नारी घर से बाहर आती है।कुछ नारियॉ कमाने केलिए बाहर आती हैं तो और कुछ वैयक्तिक कारणों से।घर के अन्दर और बाहर उन्हें अनेक पुरूषों से संबन्ध रखना पड़ता है।पुरूष वर्ग में अधिकांश पुरूष नारी के अज्ञान का लाभ उठाकर शोषण करते हैं।यह नारी के लिए सबसे बड़ी यातना रही है।

इब्राहीम शरीफ द्वारा लिखित 'कथा हीन' कहानी की नायिका के पिता पाजी है।वह सोचता है कि लड़की किसी-न-किसी तरह टल जाएगी और हर महीने उसे कुछ मिलना काफी है।प्रस्तुत कहानी केरल में चलती है।नायिका तंकम के पत्र के अनुसार कहानीकार केरल में आता है।तंकम पिछले छह महीनों से यहां के स्कूल में पढाती है और किसी के घर में पेइंगगेस्ट के रूप में रही है।कहानीकार से कुछ ज़रूर बातें करने केलिए आमंत्रित करती है।बड़े

---

11 नायक खलनायक विदूषक ःमन्नु भण्डारी ,पृ. **478**

12 नायक खलनायक विदूषक ःमन्नु भण्डारी ,पृ. **482**

मुश्किल से वह तंकम का घर पहूँचता है।कहानीकार के दोस्त की प्रेमिका है तंकम।हालांकि विदेश जाने के साल भर बाद दोस्त ने वहीं की किसी लड़की से शादी कर ली है।पिछले परिचय की मातहत तंकम कहानीकार को कभी- कभार पत्र लिखती है।कहानीकार और तंकम की उम्र दुनियादारी के और लिहाजों से बड़ा है।इसलिए दोनों के बीच केवल भाईचारा है।बातचीत के बीच तंकम कहती है कि वह दूसरों को बोझ बनना नहीं पसंद करती है।अब उसे कोई नौकरी नहीं है।टेम्परेरी वेकेन्सी में काम करती है।डिग्री के बल पर केरल में नौकरी नहीं मिलता है।खाने के बाद कहानीकार लौटने केलिए तैयार हो जाता है।अचानक तंकम कहती है कि वह फौरन शादी करना चाहती है क्यों कि उसके घर की हालत बहूत बूरी है।पिता हर हालत में उसे चाचा के साथ भेजना चाहता है।चाचा तो बूरा आदमी है।जब तंकम को, अकेला पाता है दबोच लेता है।वह तंकम के शरीर का भूखा है।इसलिए उसके साथ जाए तो वह खत्म हो जाएगा।चाचा बीबी-बच्चे होनेवाला है।लेकिन कहानीकार शादी की बातों में कोई रूचि नहीं लेता है।ये सारी बातें पिताजी से बताने को कहता है।तब तंकम कहती है कि पिता भी पाजी है।उसकी बहन को पिता किसी परिचित के साथ बंबई भेज दिया है।अब वह एकदम वेश्या बन गयी है।वह घर लौटना चाहती है।पर पिता यह नहीं चाहता है।यह सब सुनने के बाद कहानीकार जानने केलिए तैयार हो जाता है।उसके लायक किसी लडके केलिए कोशिश करने का वादा करता है तो तंकम कहती है कि "वह तो ठीक है, लेकिन आप ज़्यादा परेशान मत होइए मैं कल ही घर जाऊँगी वहाँ जाकर देख तो लूँ कि मेरे पिता और चाचा क्या कहते हैं।यों भी आप इतना तो मानेगे कि उन दोनों की तुलना में मेरी इस जवान देह में शक्ति कम नहीं है मैं मैं" [13]

तंकम के पिता और चाचा भिन्न प्रकार से उसका शोषण करते हैं।वह इसके विरूद्ध आवाज़ उठाती है।शोषण की शिकार होकर उसकी बहन वेश्या हो जाती है।लेकिन वह इसके विरूद्ध ज़रा भी शब्द नहीं उठाती है।तंकम शोषण से बचने केलिए ज़्यादा

---

13 कई सूरजों के बीच ः इब्राहीम शरीफ,पृ. **79**

उम्र वाले पुरूष को शादी करना चाहती है ।अेत में अपनी शक्ति पहचानती है।अस्मिता के अनुसार व्यवहार भी बदलती है।

'पुरजा'

नारी के जीवन में पति की आकस्मिक मृत्यु हो जाए तो उसका जीवन तितर-बितर हो जाता है। बच्चे छोटे हो तो उसकी पीड़ा अधिक तीव्र होती है।बच्चों के पालन- पोषण केलिए उसे बेहद कुछ सहना पड़ता है।

इब्राहीम शरीफ द्वारा लिखित 'पुरजा' की मां का दाहिना हाथ सुन्न पड़ गया है।बहन भाई से कहती है कि पिताजी के श्राद्ध केलिए रखे रूपए लेकर मां को डाक्टर के पास ले जाना है।लकिन मां यह रूपए देने केलिए तैयार नहीं है।अंत में मां की अनुमती लेकर भाई डाक्टर के पास पहूँचता है।लकिन डाक्टर जॉच करने केलिए तैयार नहीं है क्यों कि वे गरीब लोग हैं।भाई लौट आता है।मां के रगों में खुन जम जाता है।बिना डाक्टर से मिलकर भाई लौटने पर बहन कुसुम कुपित हो जाती है और कहती है कि "मृत पिताजी का श्राद्ध कौन बडा ज़रूरी है? जब तक यह जिन्दा रहेगी, तब तक सही सलामत तो रही।" [14] भाई एकबार फिर डाक्टर के पास पहूँचता है।इस बार वह कोई ग्यारह बजे आकर मां को देख लेने का वादा करता है तो वह लौटता है।डाक्टर न आने पर माताजी को गुस्सा आता है और वह मृत्यु के बारे में कहें तो बहन फूट पडती है "और तेरे श्राद्ध केलिए हम रूपए कहॉ से लायें? न मेरे तुम लोग हमारे लिए कोई सहारा भी तो नहीं छोडकर जा रहे हो" [15] साढ़े बारह बजे होने पर भी डाक्टर नहीं आता है।भाई एक बार फिर डाक्टर के घर चल देता है।इस बार वह कहता है कि मॉ को शायद लकवे का हल्का सा दौरा पड़ा है और कागज़ का पुरजा उठाकर दवा का नाम लिखकर भाई को देता है।वह लौटकर बहन से सारी घटनायें बताता है तो वह फूत्कार उठती

---

14 कई सूरजों के बीच ः इब्राहीम शरीफ, पृ. **28**

15 वही,पृ. **29**

है- "उस बदतमीज को कैसे पता है कि लकवा है? उसने कोई सपना देखा है ?"[16] इसप्रकार वह अपना क्रोध पकट करती है।

इन सारी गड़बडियों के पीछे एक ओर कारण भी है।पिता जिन्दा रहते समय बहन की शादी नहीं हुई।जब वह बी.ए. के अंतिम वर्ष में थी तब पिताजी चल बसे।किसी भी आदमी से शादी केलिए वह तैयार नहीं है।ढंग का लडका चाहता है।कहती है कि "अपने ही स्टैटस के लडके से शादी करूँगी"।[17] ढंग का लडका मिलता नहीं है, और मिलता है तो उसकी माँग पूरी नहीं कर पाते हैं।

ठीक समय पर शादी न होने पर, अच्छा काम-धाम न मिलने पर कुसुम व्यथित हो जाती है।अपनी अस्मिता को चोट पहूँचाने केलिए वह तैयार नहीं है।माँ के विरूद्ध होनेवाले अत्याचारों पर वह क्रोध प्रकट करती है।मन-पसंद लडके को चनुने में भी जाग्रत रहती है।अपनी इच्छा खुलकर प्रकट करके अस्मिता को कायम करती है।

पूर्वाभास'

विचार ही व्यक्तित्व का नियंता होता है ।मनुष्य के विचार जिसप्रकार के होते है उस प्रकार है भावना और व्यक्तित्व।दूसरे शब्दों में, विचार और व्यक्तित्व के बीच अटूट संबन्ध है।जवानी में सबके मन में आशा और विचार है कि कोशिश करने पर इस उलटे-पुलटे समाज को सुधार कर सकें।

इब्राहीम शरीफ द्वारा लिखित 'पूर्वाभास' कहानी की नायिका समाज सेवी है।वह एक शहर से लगाकर काम करती है समानता स्थापित करने केलिए।खुद को हर तरह के त्याग केलिए तैयार करके चौराहे पर खड़े होकर वह लोगों से भाषण शुरू करती है।पर लोग उसकी बातों पर ध्यान न देते हैं।छोटे-छोटे पहियों की चौकीनुमा गाडी पर बैठा लॅगडा नौजवान बीच सडक पर अड़ा हुआ है।यह देखकर वाहनों में बैठे लोग आगे बढ़ कर बाधा बनानेवाले लंगड़े

---

16 वही, पृ. **31**

17 कई सूरजों के बीच ः इब्राहीम शरीफ, पृ. **24**

पर आक्रोश करते है।पर वह नौजवान लॅंगडा होते हुए भी पैरवालों से ज़्यादा जानदार है।वह आक्रोश के बदले कटू शब्दों में उत्तर देता है।पहला दिन पराजित हो जाने से 'वह' हारने केलिए तैयार नहीं है। "उसने फैसला कर लिया,वह इसी शहर में रहेगा।तब तक, इसका अभीष्ट पूरा नहीं होता ।"[18] यह देखकर वह सोचती है कि समाज में समानता लाने का श्रम में वह अकेला नहीं है।उसे लगता है कि प्रस्तुत कार्य में लंगडा नौजवान भी सहायता करेगा।निहायत गलत बातों में उलझे हुए लोगों को सुधारने केलिए वह तैयार हो जाती है।हिम्मत बांधकर अपनी बातें लोगों को सुनाने के लिए वह खड़ी होती है।वह चौंक उठाती है क्यों कि वह लंगडा आज भी नज़र आ जाता है।लंगडा और पुलीस के सिपाही के बीच झगड़ा होता है।अंत में पुलिसवाला सड़क के किनारे से गुज़ारने को कहता है और उसे बॉह से पकड़कर घसीटता है और मार-पीट भी देता है।यह देखकर समाज सेवी सोचती है कि अगर वह कोशिश करती तो बेचारे विकलांग को पिटने से बचा सकती थी।वह पुल के नीचे जाकर रोनेवाले लंगड़ा को सांत्वना देने की कोशिश करती है।वह दृढ़ शब्दों में परिचय करती है कि वह एक समाज सेवी है।समाज को सही रास्ता दिखाना उसका धर्म है। "समाज को सही रास्ते पर चलाने में मैं अपनी जिन्दगी लगा रहा हूँ।"[19] लेकिन वह नौजवान उसकी सहायता नहीं चाहता है।वह तनिक भी पुलिस से बदला लेने को तैयार होता है।सबेरे समाज सेवी उस आलीशान चौराहे पर पहूँचती है तो देखती है कि वह लॅंगडा नौजवान किसी सवारी के नीचे कुचलकर चौराहे पर मरा पड़ा है।यह दृश्य देखकर उस अत्याचार के विरूद्ध वह आवाज़ उठाती है कि "नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए था यह सरासर अत्याचार है एक मामूली इन्सान पर पूरे एक शहर का एक समूचे जन-समूह का..." कुछ ऐसी ही बातें उसके दिमाग में लोट-पोट

---

[18] कई सूरजों के बीच ः इब्राहीम शरीफ, पृ. 5

[19] वही, पृ. 8

होने लगीं। "मैं इस अत्याचार का भंड़ा फोड़ूँगा, ज़रूरत पड़े तो बदला लूँगा। यह गलत बात है यह सब इस शहर के वाहनवालों की साजिश है।ऐसा नहीं होना चाहिए था।"[20] लाश को, चौराहे पर गुज़रनेवाले सभी लोग एक तरह की तृप्त मुस्कुराहट के साथ घूर-घूरकर आगे बढ़ रहे हैं।अंत में समाज सेवी शहर छोड़ देती है।इससे बढ़कर कोई बदला ले नहीं सकती है।

विचारों में अस्मिता रखनेवाली नारी की कहानी है पूर्वाभास।वह, समाज में समानता स्थापित करने केलिए दृढ़ निश्चय लेती है।लेकिन अंत में व्यवहार में पराजित हो जाती है।फिर भी उसकी अस्मिता-बोध अंत तक जागृत रहता है।

'प्रलाप'

दशकों पहले बेकारी की समस्या गंभीर नहीं थी।दसवीं कक्षा पास होते ही कोई न कोई सफेदपोश नौकरी मिलती थी।लेकिन धीरे-धीरे इस स्थिति में बदलाव आया और आजकल स्थिति अत्यंत गंभीर हो गयी है।उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले युवक-युवतियॉं भी बेकार भटकने केलिए मज़बूर हैं।जीवन बिताने केलिए पैसे की ज़रूरत है।इसलिए कोई भी धन्धा मिलने केलिए लोग झगड़ा करते हैं।

'प्रलाप' इब्राहीम शरीफ द्वारा लिखित कहानी है।प्रस्तुत कहानी का नायक जीवन बिताने हेतु पैसा कमाने केलिए प्रेस खोलता है।वहॉं दो नारियॉं काम करती हैं।दोनों ने बी.ए. पास किया है।दोनों भरसक काम करती हैं।लेकिन स्वामी तृप्त नहीं।कहानीकार भी सहायता देने केलिए वहां ठहरता है।एक बार लडकियों द्वारा कंपोज किया हुआ एक फर्मा देखकर कहानीकार को लगा कि कंपोज़िंग बहूत अटपटी है और उसे सुधारकर छापने लायक बनाने में काफी मेहनत ज़रूरत है।वह अपनी निराशा साफ कर कहता है तो स्वामी लडकियों को गालियां देती हैं।दोनों थरथर कांपने लगती हैं।लेकिन उनमें से एक लडकी तीखे स्वर में कहती है कि "आप बदतमीज़ बातें मत कीजिए।नौकरी देकर आपने कौन सा-एहसान कर दिया है? यह भी कोई नौकरी है ?"[21]

---

[20] कई सूरजों के बीच : इब्राहीम शरीफ, पृ. 11

21 कई सूरजों के बीच : इब्राहीम शरीफ, पृ. 89

आचार-विचार में विनम्र नौकर को स्वामी पसंद करता है। व्यवहार में, काम में कुछ गड़बड़ी आती तो उसे नौकरी से निकाल देता है। बी. ए. तक पढ़ने पर, बहूत कोशिश करने पर भी इन लड़कियों को प्रेस की नौकरी मिलती है । पर स्वामी की गालियॉ सुनकर लड़की की अस्मिता जाग उठती है और उसके विरूद्ध आवाज़ भी उठाती है। अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति अस्मिता बोध से मिलती है।

'मरियम'

नारी में ममता या वात्सल्य की भावना सहज, स्वाभाविक और प्राकृतिक भी है। ममता की अनुभूति को नारी जिस तीव्रता के साथ अनुभव करती है उतनी तीव्रता के साथ पुरूष नहीं। पुरूष केवल मॉ का या नारी का वात्सल्यमय रूप देख सकता है ठीक उसी रूप में अनुभव नहीं कर सकता।

कमलेश्वर द्वारा लिखित 'मरियम' नारी अस्मिता की एक सशक्त कहानी है। प्रस्तुत कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी है। मैं या जावेद की पत्नी शाहीन-जो पॉच साल पहले रिश्ता खत्म करके तलाक लेकर दूसरी शादी करके लाहौर चली गयी थी-कुछ दिनों केलिए भारत में आती है। औरत कोई भी हो अपने छोड़े हुए घर को देखने केलिए वह एक बार ज़रूर आती है। शाहीन अठारह साल की है। वह अलीगढ़ से दिल्ली होती हुई पहली बार आती है। यहॉ उतरते ही उसके दॉत में तेज टीस होने के कारण उसको एयरपोर्ट से सीधे डाक्टर के पास ले जाता है। जावेद उसे आपा के साथ रखता है। सबेरे वह डिस्पिरिन मॉग कर कमरे में आती है जो उसकी पुरानी आदत है। जावेद यह पसंद नहीं करता है क्योंकि वह तलाकशुदा है। खाना खाने के बाद बातें करते समय शाहीन को बुलाता है। शाहीन कहती है कि बेटा के शब्द सुनकर उसे पहली बार लगा कि वह भारत में है। क्योंकि उसका बेटा पाकिस्तान में है। मॉ की ममता जल्दी ही पाकिस्तान लौटने केलिए उस पर दबाव डालती है। तब जावेद शाहीद के बारे में पूछता है कि क्या वह उसका बेटा है जिसे तलाक के बाद शाहीन ने अपनी कोख में दो महीने का लेकर गयी थी। लेकिन यह तो उसका बेटा नहीं है। शौहर को यह गर्भ मंजूर न लगने

के कारण शाहीन गर्भपात करा देती है। शाहीद को आस्पताल के यतीम खाने से उठा लायी है जो कराची के दंगों में मारे गए एक सिन्धी हिन्दु का बेटा है। तब वह सिर्फ दो दिन का है। यह सुनकर जावेद को गुस्सा आकर वह सवाल करता है कि क्या उसके शौहर कर्नल जैदी को काफिर के बच्चे अर्थात अन्य जाती के बच्चे को मंजूर करता है, अपनी ही खून का बच्चा मंजूर नहीं है। तब शाहीन जवाब देती है कि पति को यह बच्चा मंजूर न होने के कारण वह उसी दिन उसी वक्त तलाक कर सकता है। जावेद को लगा है कि वह उससे कुछ छिपा रही है। तब शाहीन कहती है कि "जावेद! औरत के पास छुपाने केलिए बहूत कुछ होता है, मॉ के पास कुछ भी नहीं .... दो दिन का मासूम शाहीद ठुनका था तो मैं ने उसके पतले-पतले आठे अपनी सूखी छाती से लगा लिए थे.... मेरी छातियॉ बहूत उमड़ी, पर दूध नहीं निकला, वो बेतरह रोने लगा। मैं ने फ्रिज से दूध निकाला, रूई की बत्ती बनाई, उसने हौले-हौले थोड़ा सा दूध पी लिया, वह सो गया था, पर उसने अपना नन्हा सा हाथ मेरी छाती पर रख लिया था, और तब जावेद उस आधी रात के बाद मेरे बदन में जगह-जगह दूध के सोते फूटने लगे थे, लगता था मेरा सारा खून दूध हो गया था और मेरी दोनों छातियों से दूध के झरने फूट पड़े थे।" [22]

छोटी लड़की शाहीन अनजाने, तलाक और गर्भपात कर लेती है। अब अठारह साल की शाहीन मॉ की ममता और अस्मिता पहचानती है, व्यवहार करती है। ममता के कारण वह दूसरी बार तलाक लेती है। अस्मिता बोध ही यही निर्णय लेने केलिए उसे सजग बनाती है।

'अवसान एक स्वप्न का'

विवाह पूर्व प्रेम संबन्ध या विवाह पूर्व यौन-संबन्ध पुरूष के पारिवारिक जीवन को किसी तरह छू नहीं सकता है। कुछ स्वार्थ भारतीय पुरूष किसी न किसी कारण से पत्नी पसंद न आने पर एक के बाद एक शादी रचता है या अवैध यौन संबंध स्थापित करता है। पर सभी पुरूष पत्नी ऐसी चाहता है, जो दूध सी धुली और गंगाजल-सी पवित्र हो।

---

22 देस परदेसः कमलेश्वर की पच्चीस कहानियॉ,कमलेश्वर, पृ. **84**

मालती जोशी द्वारा लिखित 'अवसान एक स्वप्न का' कहानी पुरूष के इस घिनौने और कुत्सित रूप को दिखाती है और इसके विरूद्ध आवाज़ उठनेवाली नारी को भी दर्शाती है। पिता रेवेन्यू में क्लास वन आफिसर थे और मॉ सुघड़ गृहिणी थी। उन्हें दो पुत्र और दो पुत्रियॉ हैं। पहला पुत्र इंजीनियर बन गए है और दूसरा पुत्र गगन बंगलौर में दाखिला दिलवाया है। बेटी एम. ए. कर रही है और नायिका आठवीं या नौवीं कक्षा में है। इतने में इंजिनियर भाई का विवाह 'सोने का टुकडा' से हुआ। बहू प्रसव केलिए पीहर जाते समय टूर पर गये पिताजी मर गया। जिस लडकी को वह परिवार 'सोने का टुकड़ा' सोचता है वह तो असल में 'आग का गोला' है। पिताजी की मृत्यु के बाद बड़ा बेटा समीर और उसकी पत्नी परिवार का बोझ ठोने केलिए तैयार नहीं है। बड़ा भाई गगन को बंगलौर वाला प्रोजक्ट छोड़ने को कहते हैं। तब बड़ी बेटी आरती परिवार की जिम्मेदारी स्वयं लेकर कहती है कि "भैया, छोटू की फिक्र मत करो। आज से उसका जिम्मा मैं ने लिया। पापा ने मेरी शादी केलिए कुछ रूपए रख छोड़े हैं। आज से वे मैं ने गगन के नाम पर दिए। रूपयों के अभाव में मेरी शादी न हो सकी, तो कोई बात नहीं, पर उसकी पढ़ाई नहीं रूकनी चाहिए। और भाभी, आज या कल मुझे नौकरी ज़रूर मिल जाएगी। तब मैं भरसक दादा का हाथ बॅटा सकूँगी लेकिन मेहरबानी करके मेरी मां की गृहस्थी को मत कोसिए ।" [23] बाद में आरती को नौकरी मिलती है। वेतन भी अच्छा है। और वह वेतन लाकर दादा के हाथ पर रख देती है। दूसरी बेटी भारती एम. कॉम करते हुए बैंक की परिक्षाएँ दे डालती है और एक में सेलेक्शन भी मिलती है। तब वह माताजी से कहती है कि "मॉ, अब आप दीदी की शादी की फिक्र कीजिए, आगे की नाव मैं खे लूँगी।" [24]

माताजी बेटी की शादी केलिए बड़ा बेटा समीर के हाथ पर सारे गहने निकालकर रख देती है तो भैया ये सब बेचकर शहर से दूर एक आलीशान बंगला बनाता है। उस बंगला को 'मातृछाया' नाम भी देता है। यह देखकर सब लोग दादा की मातृभक्ति की प्रशंसा करते है तो

---

23 औरत एक रात है ःमालती जोशी, पृ. **40**

24 वही, पृ. **51**

भारती जानबूझकर कहती है कि "चलो, इन लोगों ने ईमानदारी तो बरती है, मॉ की पूँजी से बने मकान को मॉ का नाम तो दिया।" [25]

गगन सात साल लगाकर बी. ई. पास करता है और उनकी शादी सहपाठी की इकलौती बहन के साथ हुई। दोनों दुबई में काम करते हैं। मॉ की मृत्यु के बाद तेरहवीं में फिर वह आता है और दोनों बहनों को दुबई में जिन्दगी बिताने केलिए निमंत्रण भी करते है लेकिन बहनें पहचानती है कि निमंत्रण केवल शब्द है, उस निमंत्रण में कोई ऊष्मा या आग्रह नहीं है। मॉ की वसीयत में मकान दोनों बेटियों के नाम पर लिखी है। इसलिए दोनों बहन साथ मिलकर वहां रहती हैं।

एक दिन बड़े भाई, बहनों को देखने केलिए यहॉ आता है। उनकी बेटी स्वीटी केलिए ताबड़तोड़ लड़के ढूँढ़े जा रहे है। इस बार जो आई. ए. एस. लडके को उन्होंने तलाश किया है उसकी बहन आरती की कॉलेज में ही पढ़ाती है। परसों सुबह लड़की देखने का कार्यक्रम है। इसलिए बहन को निमंत्रित करने केलिए भाई आता है। भारती मना करने पर भी आरती भाई के घर जाती है। लडकेवाले आरती को देखकर पसंद करते हैं और भाई से अपने एक तलाकशुदा भाई केलिए आरती का हाथ मॉगते हैं। भाई-भाभी इस पर नाराज़ होकर बरसों बाद घर में आती है और आरती को कोसती है। तब भारती कहती है कि "भाभी, मैं आपसे यही कहना चाहती थी, दीदी के पास अपनी ग्रेस है, गरिमा है, प्रतिभा है। दूसरों को इंप्रेस करने केलिए वह किसी साज-श्रृंगार की मोहताज नहीं हैं। वैसे भी इस उम्र में रूप-सज्जा कोई मायने नहीं रखती। वह तो मेरी जिद थी, जो उन्होंने पूरी की। दोष अगर देना है, तो मुझे दीजिए।" [26]

फिर भी वे लोग कोसना जारी रखते है। वह बहन की कन्यादान केलिए तैयार नहीं है और आरती क्षमा-याचना की मुद्रा में खडी है। ये सब देखकर भारती का खून उबलता है और वह रोष पूर्वक गंभीर स्वर में कहती है कि "तुम चुप रहो दीदी, हर बात पर क्षमा-याचना की मुद्रा में

---

25 औरत एक रात है ः मालती जोशी, पृ. **51-52**

26 औरत एक रात है ः मालती जोशी, पृ. **51**

खड़े होने की ज़रूरत नहीं है"।इस बार मैं ने दीदी को डपट दिया और फिर भाभी से मुख़तिब हुई,"हॉ, तो किस दान की बात कर रही थी आप ? दीदी कोई आलू-बैंगन हैं कि उन्होंने मांगा आपने उठाकर दे दिया।वैसे भी आपको कन्यादान का हक कहॉ पहूँचता है।यह अधिकार तो उसका होता है, जो कन्या का पालन-पोषण करता है।कम से कम आप लोग तो इसका दावा नहीं कर सकते।" [27]

दीदी कभी भी शादी केलिए तैयार नहीं है क्योंकि उसने मां को वचन दिया था कि सदा भारती के साथ रहेगी।भारती भी दीदी को प्यार करती है।इसलिए वह अगले दिन बैंक में न जाकर सीधे मिसेज़ प्रसाद के घर जाती है।पिता-जो रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज है-से मिलती है और बातें करती है।जज साहब के भाई सनातन लंदन में था और अब रिटायरमेंट लेकर स्वदेश लौट आता है।वह तलाकशुदा है और दो बेटियॉ भी होती है।बातचीत करते समय भारती दीदी के संबन्ध में भाई द्वारा बनाए गए गलत धारणाओं को ठीक करने का श्रम करता है।बातचीत ख़त्म होने के बाद सनातन के कार पर भारती घर चलती है।बीच में, सनातन कहता है कि भारती को देखकर उसका तलाश पूर्ण हो जाता है क्योंकि वह ऐसी पत्नी चाहता है जिसका कोई इतिहास न हो।यह सुनकर भारती का पूरा शरीर क्रोध से जल उठा।उसे लगा कि अभी इसी वक्त उस दंभी का गला दबा देना है ताकि वह ऐसी गंदी बात दुबारा न कह सके।वह अपना क्रोध प्रकट करके कहती है कि "डॉ. सनातन, मेरे बड़े भाई ने मेरी दीदी के कुँआरेपन को इतनी बड़ी गाली दी कि उसे सुनकर मेरा पूरा बजूद ही हिल गया था, पर आपकी बात सुनकर तो मैं एकदम, राख हो गई हूँ।आप ख़ुद तलाकशुदा है, दो बच्चों के बाप हैं, पर अपनी भावी पत्नी का तथाकथित अफेयर भी आपसे हजम नहीं हो रहा है।आश्चर्य है।"[28] विशुद्ध भारतीय संस्कारों की बात कहकर सनातन फिर भी अपनी बातों को मान्य बनाने का श्रम करता है तब

---

27 औरत एक रात है ःमालती जोशी, पृ. **58**

28 वही, पृ. **67**

भारती कहती है कि "इसमें तो कोई शक नहीं है। आप में भारतीय पुरूष के संस्कार कूट-कूटकर भरे हुए हैं। भारतीय-पुरूष, जो खुद तो एक के बाद एक शादी रचाता जाता है, पर पत्नी ऐसी चाहता है, जो दूध की धुली और गंगाजल-सी पवित्र हो। थैंक यू डॉक्टर, आपने मुझे अपना असली चेहरा दिखा दिया। थैंक्स एंड गुडबाय।" [29] वह गाड़ी से उतरकर और ऑखों में चदकर घर आती है। घर में दीदी को देखकर, उसके प्यार को देखकर ईश्वर को धन्यवाद देती है क्योंकि पुरूष के कुत्सित हाथों से वह और दीदी बाल-बाल बच गयी हैं।

स्वार्थी पुरूषों के असली मुँह खोलकर दिखाने का श्रम प्रस्तुत कहानी द्वारा, कहानीकार करती है। पुरूष किसी प्रकार का स्वभाववाला क्यों न हो अपनी पत्नी क्लीन स्वभाववाली होना चाहता है। भारती, पुरूष के सब छल, कपटों के विरूद्ध आवाज़ उठाती है। अपनी अस्मिता को बनाए रखने केलिए वह प्रयत्न करती है।

'स्मृति कल्प'

भारत में पति के बिना पत्नी का अस्तित्व शून्य माना जाता है। यदि पति लंगड़ा या कुबड़ा हो तब भी हिन्दुस्तानी पत्नी उसकी दीर्घायु की कामना करती है। लेकिन यदि पत्नी ऐसा है तो पुरूष दूसरी स्त्री की खोज करता है।

'स्मृति कल्प' मालती जोशी द्वारा कृत कहानी है। प्रस्तुत कहानी की नायिका रेणु अमेरिका से छुट्टी लकर स्वदेश आती है। उसके परिवार का, रजनीश भाई के परिवार से पुराना संबन्ध है। उसकी छोटी बहन आभा और रेणू हाईस्कूल से एम. एस. सी. तक एकसाथ पढ़ती थी। आज रजनीश भाई के बेटे का रिसेप्शन है। वहॉ जाकर रेणू रजनीश भाई, भाभी, आभा, मनीष भाई सबसे मिलती है। लेकिन मनीष की सुन्दर पत्नी सविता भाभी और बहन शोभा दीदी अनुपस्थित हैं। रिसेप्शन के बाद लौत जाते समय वह भैया-भाभी से इसके बारे में पूछती है तो जानती है कि बहूत भयानक एक्सीडेंट हुआ है। इसमें मनीष की दो पसलियॉ चटक गई

---

[29] औरत एक रात है ःमालती जोशी, पृ. 67

है।कुहनी में फ्रेक्चर हो गयाहै, घुटने पर चोट आई है।और सविता पूरे दो महीने कोमा में पड़ती है।अब होश में आती है लेकिन वह किसी को न जानती है, न पहचानती है।बस, बिटर-बिटर ताकती रहती है।न भूख-प्यास का होश है, न किसी और चीज़ का।सारा शरीर लुजपुंज हो जाता है।दर असल सिर में चोट लगी है, बियांड रिपेयर।सविता को इतने होने पर भी सभी लोग मनीष को बेचारा मानती है क्योंकि उनकी जिन्दगी तबाह हो गई है।अब सविता की बूढ़ी मां उसकी सेवा-शुश्रूषा करती है।बड़ी लड़कियां होस्टल में है और छोटी घर में।

शोभा दीदी का सारा जीवन पति की तीमारदारी करते ही कटा है।शोभा दीदी का पति अपार संपत्ति के इकलौता अधिकारी है।विवाह के बाद में पता चला कि लड़का रोग की पुड़िया है।शोभा इंग्लिश में एम.ए. है, संगीत की विशारद है, बैंडमिंटन की चौंपियन है पर अपनी सारी उपलब्धियों को उन्होंने ठंड़े बस्ते में ठाल दिया है और केवल पति की नर्स होकर रह गई है।इसी फरवरी में उनका देहांत हुआ है।इस कारण से सविता और शोभा शादी में भाग लेने केलिए न आती हैं।

एक दिन रेणू, शोभा दीदी के घर जाती है।बातों के बीच शोभा दीदी रेणू के अनब्याही चचेरी ननद, छोटी बुआ, सास साली के बारे में पूछती है।वह मनीष भाई के लिए इनके बारे में पूछती है। "... पता नहीं बेचारी कितना कष्ट लिखाकर लाई है।खुद भी भोग रही है, साथ में घरवालों को भी भुगतना पड़ रहा है।अच्छा सुन, मैं ने कहीं पढ़ा था कि मानसिक विकलांगता का सर्टिफिकेट हो, तो दूसरी शादी की परमिशन मिल जाती है।"[30] तब रेणू जी जीजाजी के बारे में पूछती है जो सोलह साल से बीमार होकर बिस्तर पर पड़ती है।शोभा दीदी कहती है कि वह सारे साल तन-मन लगाकर उसकी सेवा करती इसमें कोई ऊब या खजि कभी नहीं आता है।यह सुनकर रेणू सवाल करती है कि सविता भाभी केवल तीन वर्ष ही बिस्तर में पड़ती है, इतनी कम साल में क्या, मनीष भाई ऊब हो जाता है।यदि हादसा उलटा हो जाता मनीष भाई बिस्तर पर होते और भाभी ठीक-ठाक होती तो क्या भाभी उनकी मृत्यु की

---

[30] औरत एक रात है ःमालती जोशी, पृ. **83**

कामना करतीं।तब शोभा दीदी ऐसा कहीं नहीं होने का वायदा करती है तो रेणू कहती है कि "यही तो दु:ख है दीदी की ऐसा नहीं होता।पति चाहे लंगडा, लूला, काना, कुबड़ा हो, तब भी हिन्दुस्तानी पत्नी उसकी दीर्घायु की कामना करती है।उसके लिए व्रत-उपवास करती है।मनौतियॉ मानती है।जानती है क्यों ?क्योंकि उसे मालूम है कि पति के बिना उसका अस्तित्व शून्य है।घर- परिवार में उसका मान-सम्मान, समाज में उसकी प्रतिष्ठा सब पति के दम से होती है।सब से ताजा उदाहरण तो आपका ही है।परिवार के इकलौते बेटे की शादी थी और आप वहॉ नहीं थीं।"[31] कुछ दे तक बातचीत के बाद रेणू विदा लेकर घर लौटती है।भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति के बारे में अवगत होकर उसकी अस्मिता केलिए धीमी, किंतु स्पष्ट शब्दों में आवाज़ उठनेवाली नारी के रूप में रेणू सामने आती है।

मॉ तुझे सलाम'

परिवार में पति और पत्नी को समकक्ष स्थान मिलना है।लेकिन भारत में पति के बिना पत्नी को कोई मान-सम्मान या प्रतिष्ठा नहीं मिलता है।इस प्रकार प्रचलित परंपरा नारी अस्मिता को कुचलती है।

मालती जोशी द्वारा कृत 'मॉ तुझे सलाम' कहानी में नारी अस्मिता की झॉकियॉ दीख पड़ती है। वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी के बीच तीसरे का आगमन संघर्ष पैदा करता है।अपने पति का किसी ओर नारी से संबंध होने पर पत्नी सह नहीं सकती है।अपनी अस्मिता को पहचाननेवाली आधुनिक नारी इस अवस्था में पति को परित्याग करने केलिए तैयार हो जाती है।

अविनाश और वीणा पति-पत्नी है।बेटे अनुराग को वह चीनू नाम से पुकारती है।वीणा पी. एच. डी कर रही थी और अविनाश ऑफिस में काम करता है।तब सीमा उसके घर में आती है और जल्दी ही चीनू से दोस्ती करती है।पहले इस दोस्ती से चीनू की मॉ खुश

---

31 औरत एक रात है ःमालती जोशी, पृ. **84**

है।आगे चलकर अविनाश के मन में सीमा को स्थान मिलता है।लेकिन इसके बारे में सीमा अनभिज्ञ है।बाद में वह सारी बातें समझ लेती है। पतिव्रता पत्नी यह सह नहीं सकती।इसलिए वह सीमा से कहती है कि "चीनू को रिश्वत देने की अब कोई जरूरत नहीं है।उसे सीढ़ी बनाकर तुम्हें जो पाना था, वह तो तुम पा चुकी हो।"[32] सीमा को बात समझ में नहीं आती है।वह पूछती है तो वीणा कहती है कि "यही कि तुम्हारा प्यार चीनू तक ही सीमित रहता तो मुझे खुशी होती, पर तुमने तो उसके पापा को भी नहीं बख्शा।" [33] यह सुनकर सीमा सन्न रह गई और अपनी निरीहता साबित करने की कोशिश करने लगी।लेकिन हिन्दुस्तान की स्त्रियाँ, अपने प्यारे पति के मन में दूसरों की उपस्थिति सह नहीं सकती।यह उसकी अस्मिता पर चोट लगाती है।इसलिए वीणा कहती है कि "काश कि यह गलतफहमी ही होती, पर दुर्भाग्य से यह सच है, बहूत कड़वा सच।तुम मेरी गृहस्थी में आग लगा रही हो सीमा ईश्वर तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।" [34] यह सुनकर सीमा को भी क्रोध आता है।अपमानित होकर वह वीणा को खूब खरी खोटी सुनाती है और दुबारा उस घर में पॉव न देने का प्रण करके उस घर से अपने घर में लौटती है।

अविनाश दूसरे दिन सीमा के घर में जाता है और जिन्दगी साथ बिताने केलिए स्वागत भी करता है।यह सब जानकर स्वाभिमानी वीणा चुपचाप तलाक संबन्धी सारे पेपर्स साइन कर देती है।बेटे की देखरेख के लिए किसी तरह की सहायता लेने से वह इनकार करती है।अब उसकी जिन्दगी सिर्फ चीनू केलिए है। "यह मेरी जिम्मेदारी है।मैं इसे पाल लूँगी।बस, तुम लोग अपना साया इस पर न पड़ने देना"[35]

---

32 औरत एक रात है ःमालती जोशी, पृ. **30**

33 वही, पृ. **30**

34 वही, पृ. **30**

35 वही, पृ. **32**

वीणा अकेले ही चीनू को पालती है और दुर्भाग्य से हाल में उसकी मृत्यु हो गयी।अब चीनू ऑस्ट्रेलिया में नया जॉब लेता है और पापा को देखने केलिए 'मैं' के घर में आता है।

पति का सहारा न मिलने पर भी स्वाभिमानी वीणा ज़िन्दगी का नाव अकेली ही आगे बढ़ाती है ।अपने बच्चे को उच्च शिक्षा भी देती है।इसप्रकार अपनी अस्मिता को बनाए रखने के प्रयास में पति का परित्याग करने केलिए भी तैयार होकर वीणा सामने आती है।

'निर्वासित कर दी तुमने मेरी प्रीत'

आधुनिक युग में नारी पारिवारिक जीवन के संबन्ध में रंग-बिरंगे स्वप्न देखती है।लेकिन कभी-कभी पुरूष लोग विवाह को धन कमाने का आसान तरीका समझते हैं।दहेज के रूप में धन के अलावा वाशिंग मैशीन, फ्रिड्ज, ओवन आदि भी मांगते हैं।उस समय दुलहिन का बाप है दुनिया का सबसे निरीह और असहाय प्राणी।लड़की का अस्मिता-बोध निर्मम रूप से कुचल जाता है।

'निर्वासित कर दी तुमने मेरी प्रीत' मालती जोशी द्वारा कृत एक सशक्त कहानी है।कहानी की नायिका 'मैं' है जिसके बड़े भैया की बेटी दिव्या आत्महत्या कर ली।यह बात सुनकर 'मैं' भैया-भाभी को सांत्वना देने केलिए जल्दी ही निकलती है।ट्रेन में यात्रा करते समय वक्त काटने केलिए पिछली यात्राओं को याद करना शुरू करती है।भैया की बेटियॉ छाया, चित्रा और दिव्या की शादी के बारे में सोचती है।छाया का रंग थोड़ा दबा है इसलिए उसे प्रोफेसर जीतेंद्र ब्याह करते है।चित्रा के विवाह के समय, लड़के पापा का अपमान कर रहे थे, मखौल उड़ा रहे थे, बेजा फरमाइशें कर रहे थे।तब चित्रा स्टेज पर बैठकर मंद-मंद मुस्कुराकर अपने नए-नवेले पति से बातें करती है।तब 'मैं' अपनी शादी-जो अब तक अविवाहित है -के बारे में सोचती है।बाईस साल पहले 'मैं' शादी केलिए तैयारियॉ करती हैं। दूल्हा दूर सड़क पर खड़ा है।दूल्हे की घोड़ी दरवाज़े पर रोक दी गई है।पता नहीं किससे क्या बदसलूकी हो गई थी।और मान-मनोव्यय का दौर जारी रही है।ये खुसर- फूसर सुनकर 'दुल्हन मैं' कमरे में नहीं बैठ पाती

है।ऊपर से देखें तो बाबूजी, भैया, चाचाजी सब के सब हाथ जोड़कर प्रार्थना करते दिखते हैं और सामनेवाले तनी हुई मुद्रा में खड़े है।यह सब देखकर 'मैं' का खून तो उबलने लगा।वह दनादन सीढियॉ फलॉगती नीचे उतर आई और सभी लोगों से शादी केलिए 'तैयार नहीं' कहती है।यह सुनकर सब चौंकते हैं और सब लोग उसकी जिन्दगी तबाह न करने केलिए उपदेश भी देते हैं।लेकिन वह फिर भी दृढ़ स्वर में कुँआरी रहने का निश्चय बताती है। ' ....मुझे तो जैसे आग लग गई।मैं दनादन सीढ़ियॉ फलांगती नीचे उतर आई।बीच मंडप में आकर मैं ने ऐलान कर दिया, "बाबूजी, इन लोगों की बिदा कर दीजिए।यह शादी नहीं हो सकती।" [36] यह सुनकर सब लोग सन्न रहते है।अम्मा तो बेहोश हो गई।भैया, भाभी, चाचा सब उसे समझने की कोशिश करते हैं।लेकिन 'मै' अस्मिता से भरकर जिन्दगी भर कुँआरी रहने का निश्चय लेती है। " नहीं बाबूजी, यह मेरे लिए इतनी-सी बात नहीं है।ऐसे संस्कारहीन परिवार में मेरा गुजारा नहीं हेा सकता।इससे तो मैं कुँआरी हो भली हूँ।" [37] आगे चलकर 'मै' की बहन पम्मी भी किसी की जहमत नहीं देती है।वह खुद अपने पति को चुन लेती है और बाद में घरवालों को सूचना देती हैं।

भैया की दोनों बेटियों की शादी बड़ी धूम-धाम से संपन्न हुई हैं।तीसरी बेटी दिव्या की शादी पर घर में ज़रा भी चहल-पहल नहीं है।दिव्या के पति विदेश में काम करनेवाले डाक्टर है।घर की आखिरी शादी होने पर भी कोई धूम-धाम नहीं है।और गहने, कपड़े कुछ भी लेने से दिव्या इनकार भी करती है।'मैं' इसके बारे में पूछती है तो दिव्या कहती है कि "यह बताओ कि अब देने से लेई इन लोगों के पास कुछ शेष भी है? दोनों शादियों ने पापा को एकदम निचोड़कर रख दिया है।अब जो ग्रेच्यूटी और फंड वगैरह की रकम मिली है, वही उनकी जेब में कुलबुला रही है।वही सब मुझ पर खर्च कर देंगे, तो बाकी जिन्दगी क्या करेंगे?

---

36 औरत एक रात है ःमालती जोशी, पृ. **16- 17**

37 वही, पृ. **17**

किसका मुँह देखेंगे? अपने को फकीर बनाकर वे यदि मुझे कुछ देते भी है, तो वह मेरे साथ तो जाएगा नहीं। सास के लॉकर में पड़ा रहेगा। उनके वॉर्डरोब की शोभा बढ़ाएगा, इसमें क्या तुक है।"[38]

शादी के बाद दिव्या अमेरिका में आमाशय की किसी बीमारी पर रिसर्च करती है। उसके पति अविनाश का एक मरीज किसी गलत इंजेक्शन के कारण मर गया। इसलिए अधिकारी लोग उसे ससपैंड़ करते हैं और ड़ी. ई. चल रहा है। लाइसेंस भी छिन जाने का डर है। इसलिए वह जल्द से जल्द भारत लौटना चाहता है। यहाँ आकर अपना नर्सिंग होम खोलना चाहता है। इसके लिए दिव्या का ससुर, पिताजी से बड़ा रकम मांगता है। लेकिन देने केलिए उसके पास कुछ भी नहीं है। दिव्या जैसी खुददार लड़की अपमान और जिल्लत की जिन्दगी जी नहीं सकती है। इसलिए उसने आत्महत्या की है।

प्रस्तुत कहानी की लड़कियाँ अपनी अस्मिता को बचाए रखते हुए जीवन बिताती हैं । एक, दुल्हा के परिवार के संस्कारहीनता के कारण शादी भी छोड़कर जिन्दगी भर कुँआरी का जीवन बिताती है तो दूसरी लड़की, अपने मनमाने ढंग से वर को चुनती है। तीसरी लड़की दिव्या दहेज प्रथा के विरूद्ध अपनी पसंद से कैरियर और जीवन साथी को चुन लेती है। लेकिन शादी के बाद ससुरालवाले धन-दौलत माँगते हैं तो वह जीवन भी काटकर अस्मिता की रक्षा करती है। वह चुपचाप अन्याय सहने केलिए तैयार भी नहीं है।

'दूध और दवा'

संतुष्ट एवं संतुलित जीवन बिताने केलिए भोजन, कपड़ा और घर जरूरी हैं। इसके अभाव में जीवन बिताना कठिन है। पारिवारिक जीवन में स्त्री और पुरूष अपने में अपूर्ण है। विज्ञाान के अनुसार स्त्री की अपेक्षा पुरूष ही सेक्स को अधिक चाहते हैं। दिन ब दिन

---

38 वही, पृ. **22**

घरेलू जीवन की समस्याओं से जकड़े हुए नारी की कोमल भावनाएँ जल्दी ही मुरझा जाती हैं। फलत: पुरूष अतृप्त मानसिकता में जीने को विवश होता है।

मार्कण्डेय द्वारा लिखित 'दूध और दवा' कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं पर प्रकाश डालती है। लेखक अपनी पत्नी और बच्चों के बारे में रंग-भरे स्वप्न देखते हैं। मुन्नी और रूनकू बाल बच्चे हैं। लेखक चाहते है कि उनकी मुन्नी पढ़ लिखकर बड़ी चित्रकार बन जाए। वे बच्चों को स्कूल ले जाने केलिए एक मोटर खरीदना चाहते हैं और अच्छे कपड़े पहनकर स्कूल जाते देखना चाहते हैं। पर ये सब स्वप्न पूरी होती दिखाई नहीं देती। अर्थाभाव के कारण मुन्नी की ऑखों के मॉडे की दवा भी खरदि नहीं सकते।

लेखक के मन में लिखने केलिए कई अच्छी चीज़ें पड़ी रहती हैं। फिर भी वे कुछ नहीं लिख सकते हैं। घर में सभी सामान बिलकुल चुक गये हैं। पत्नी आग्रह प्रकट करती है कि वे कोई कहानी लिखकर किसी प्रकाशक को देकर कुछ रूपए कमायें मुन्नी भी दूध केलिए शिकायत करती है। लेखक कल्पनाओं में डुबे रहते हैं। वे पत्नी की उपस्थिती चाहते हैं। लेकिन पत्नी घरेलू कामों और बच्चों में व्यस्त रहती हैं। पत्नी के सीने में मुँह डालकर पल भर सांस लेना वे पसंद करते हैं। लेकिन पत्नी के पास इसके सुख की कल्पना नहीं रह गयी है। वह बटन बन्द करते-करते बोलने लगती है, "अब इसके सुख की कल्पना मेरे पास नहीं है, न ही तुम्हारे मन में है और अगर है, तो नहीं होनी चाहिए।" [39]

मुन्नी की ऑखों में बहूत दर्द है और वह दूध केलिए जिद भी करती है। लेकिन दूध और दवा खरीदने केलिए लेखक के पास पैसा नहीं है। कोई कहानी लिख भी नहीं सका। वह स्वप्नलोक में जीवन बिताते है। इस स्थिति में देखकर पत्नी में अस्मिता की भावना जाग उठती है। वह कोधी बनकर पति से प्रश्न करती है कि "आखिर इसमें क्या ऐसा रखा है, जो तुम्हें विचलित कर देता है? मैं रूकी नहीं, कुछ कहा नहीं, तो क्या ऐसा आस्मान फट पड़ा?

---

39 मानक कहानियॉ ःसं. मार्कण्डेय, पृ. **107**

मैं पूछती हूँ कि मुन्नी के दूध और दवाइयों का क्या हुआ? तुम कुछ लिखकर मुझे देनेवाले थे न?"[40] लेखक हर समय शिकायत करनेवाले बीवियों और मज़दूरों को मन में कोसता है।

असल में पुरूष के मालिकीय मनोभावों पर प्रस्तुत कहानी की नारी प्रश्न चिन्ह लगाती हैं। पति को परमेश्वर न मानकर, अपने बच्चों के प्रति पिता की जिम्मेदारी निभाने केलिए जागृत कराती है।

'बाहरी जन'

भारतीय समाज व्यवस्था में पुरूष को श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त है। स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद इतने अधिक साल बीत जाने पर भी, कई परिवारों में नारी की हैसियत और स्थिति नौकर के समान होती है। अपनी निजी बातों में भी निणेय लेने का अधिकार उन्हें न मिलता है। वह सास हो या बहू भारतीय पुरूष प्रधान परिवार व्यवस्था का केन्द्र और वश का अधिकारी पुरूष है। गृहस्थी मातृत्व, पतिसेवा और परिवार केलिए त्याग करना यही है आदर्श नारी का दायित्व। समाज इस प्रकार की गलत मान्यता रहने के कारण स्त्री का व्यक्तित्व विकसित नहीं होता। वह केवल पुरूष की सहायक या भोगवस्तु बनकर रह जाती है। अपने घर में कोई स्वतंत्र भूमिका निभाने का स्वातंत्रय भी प्रायः उसे नहीं मिलता। केवल अमरबेल के समान पुरूष की छाया में जीवन बिताने की अनुमति इसे मिलती है।

'बाहरी जन' मृदुला गर्ग द्वारा लिखी गयी एक सशक्त कहानी है। कहानी की नायिका नन्दिनी एक सभ्य, सुसंस्कृत, ऊँचे वर्ग के घराने की इकलौती बहू है। उसका पति बड़े घर का आदर्श बेटा, नितिन, पैसे कमाने नहीं, देश की प्रगती और विकास योजना की अंजाम देने केलिए एक लघु उद्योग स्थापित करने के सिलसिले में विदेश गया हुआ है। घर में वह सास-ससुर के साथ रहती है। उच्चवर्गीय संस्कृति और सभ्यता के मिथ्या आडंबरों का प्रतीक है ससुर राजेश्वर। वह अपनी पत्नी सरिता के बौडम मानते है। नन्दिनी मध्यवर्गीय परिवार की सदस्या है। पर सुन्दर होने के कारण इस उच्चवर्गीय घर की बहू बन गई है। उसके सास-ससुर की इच्छा

---

40 मानक कहानियॉ ःसं. मार्कण्डेय, पृ. 110

है कि उनका घर पोते-पोतियों की किलकारियों से गूँजे ।परन्तु दुर्भाग्य से उसे सात वर्ष तक कोई संतान नहीं होती।उनको घर में कोई कमी नहीं है कि आलीशान कोठी, नौकर-चाकर, गाड़ी, ड्राइवर छोडकर, पति की आय की मुताबिक, दो कमरों के फ्लैट में रहना।सास-ससुर द्वारा अच्छे से अच्छे स्त्री विशेषज्ञ को दिखाने की सलाह पर नन्दिनी परेशान हो जाती है।

वह एक डाक्टर के पास गयी और लौट आने पर ससुर पूछते है कि क्या कहा डाक्टर ने।नन्दिनी खाना खा रही है।ससुर के सवाल सुनकर उसकी अस्मिता जाग उठी कि वह अपनी जिन्दगी में बाहरी जनों का हस्तक्षेप नहीं होने देना चाहती।इसलिए जवाब के रूप में वह अपनी मन ही मन सोचती है कि 'आपको मतलब' यह मेरा निजी मामला है।बच्चा चाहती हूँ या नहीं, मेरा निर्णय है।हो सकता है या नहीं, मेरा भाग्य है।हो सकने केलिए कुछ करना, न करना मेरी समस्या है।आपका क्या अधिकार है मुझसे जिरह करने का।ठीक है, आप बच्चे के दादा-दादी बनेंगे।उसे प्यार देने लेंगे।आपको उसकी चाहत हो, इससे मुझे इनकार नहीं, हमदर्दी है, पर अपनी चाहत को मुझपर थोपकर मेरे जेलर बनने का अधिकार आपको नहीं है।' [41] दूसरों की इच्छा और चाहत को वह अपने ऊपर लादना नहीं चाहती है।बच्चा चाहिए या नहीं इसका निर्णय वह स्वयं लेगी।लेकिन कह तो नहीं दिया।

ससुर राजेश्वर दुबारा पूछते है कि डाक्टर ने क्या कहा।नन्दिनी का जवाब उसे पसंद नहीं आया।वह झपटकर बाहर निकल गये।तब नन्दिनी आवेश में आकर सोचती है कि ' .... नहीं चाहिए उसे बच्चा, नहीं जाएगी वह डाक्टरों के पास, नहीं करेगी किसी अप्राकृतिक प्रकिया का इस्तेमाल।उसकी गोद है, भरे न भरे, निर्णय लेने का अधिकार उसका है, सिर्फ उसका। " नहीं चाहिए मुझे बच्चा!" कह ही डाला उसने।' [42]

---

41 शहर के नाम ःमृदुला गर्ग, पृ. 62

42 वही,पृ. 64-65

सरिता अपने पति का अनुचित व्यवहार देखकर कोधित हो जाती है और अपनी मनोव्यथा को इन शब्दों में प्रकट कर सोचती है कि 'इनकी बहन न होती तो में ....इतनी नकारा न बनती।उसी ने मेरे भीतर हीन भावना पैदा करके मुझे बेकार कर दिया, वरना बी.ए. में फर्स्ट डिवीज़न में पास हुई थी।इच्छा थी आगे पढ़ूँ नौकरी करूं।यहाँ आई तो छुरी-कॉटे और बिल्लौरी कॉच में उलझकर रह गयी।बौडम मैं हूँ या ये और इनके ऊँचे कानदान के नकचढें लेग।क्यों इतना चीख- चिल्ला रही हैं बेचारी लड़की पर।न हुआ बच्चा, न सही गोद ले लेगी।क्या इतना भी अधिकार नहीं है इसे ?' [43] अन्त में अधिकारों की बात करते-करते सास और घरेलू जिन्दगी में उलझ जाती है।स्त्री स्वातंत्र्य की पक्षधर होने पर भी नन्दिनी की सास बेचारी सरिता पति के नियंत्रण में दबी हुई है।नन्दिनी चाहती है कि उसकी सास अपना शोबीला अस्तित्व दिखाए।

"आप क्या कहती है? मुझे क्या करना चाहिए? एक साल रूकी हुँ? बाद में ... हम बच्चा गोद भी ले सकते हैं।क्यों, बतलाइए न?" वह उन्हें दीवारा रोबीला देखना चाहती थी।

"मैं क्या कहूँ?" उन्होंने हारे स्वर में कहा।

"क्यों, बच्चा हम पैदा करती हैं।क्या हमारा कोई अधिकार नहीं है ?"

"अधिकार?"उन्होंने कड़वे स्वर में कहा,

"अधिकारों की क्या कमी है इस घर में।तुम और मैं..."[44]

इस प्रकार अपनी अस्मिता को पहचानते हुए भी इसके अनुसार व्यवहृत न होनेवाली दबी हुई अस्मिता से जीवन यापन करनेवाली सास और बहू को प्रस्तुत कहानी में देख सकते है।

---

43 शहर के नाम ःमृदुला गर्ग,पृ. **64**

44 वही, पृ. **65**

'विद्रोह'

कभी-कभी व्यक्ति समय और स्थिति के हाथ का खिलौना बनकर रह जाता है। आर्थिक अभाव और बच्चों की संख्या अधिक होने के कारण कभी-कभी लड़कियों की शादी सही उम्र पर नहीं हो पाती है। इससे बेचैन होकर वह विद्रोह करना चाहती है।

मेहरून्निसा परवेज़ द्वारा लिखित 'विद्रोह' नीना की विद्रोह की कहानी है। नीना प्रौढ़ कुमारिका है। वह ऑफिस में टाइपिस्ट है और अपने परिवार की अभिभावक बन जाती है। वह विवाह के रंग- भरे सपने देख रही है। वह घर और ऑफिस की दिनचर्या से ऊब जाती है। उसकी उम्र की लड़कियां चार-चार बच्चों की मॉ बन गई है। उसकी मॉ और बाबूजी उसके लिए वर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते थक जाती है। परिवार की जिम्मेदारी उसके सिर पर है। विवाह नीना केलिए केवल

सपना बनकर रह जाता है। वह इस स्थिति से विद्रोह करके विवाहिता बनना चाहती है। अब उसे लगता है कि उसके विवाह की चिंता परिवार में किसी को नहीं है। वह अपने अस्तित्व के प्रति सचेत होने लगती है। वह सोचती है कि उसकी जिन्दगी अब तो ऑफिस के सफेद चिकने कागज़ की तरह उदास होकर रह जाती है। वह परिवार के 'भरण-पोषण' का साधन बनना नहीं चाहती। वह ऑफिस के नायडू के साथ विवाह की कल्पना करती है और त्यागपत्र भी लिखती है। नौकरी छोड़कर विद्रोह करना चाहती है। उसी समय उसके पास बाबूजी आते हैं। वह रोते हुए कहते है कि चश्मे के बदले ऑपरेशन न करने से वह अंधा हो जाएगा। पिता की रूलाई देखकर वह मुट्ठी में रखे त्यागपत्र को टुकड़े-टुकड़े बनाती है। 'उसने देखा और उसे लगा, ये उसके पिता नहीं दुश्मन है, वरना जवान लडकी का बोझ सिर पर होते इत्मीनान से नहीं बचते। पर ये सोचते क्या है? क्या मैं इनके लिए अपना जीवन बरबाद कर दूँ? आज वह नौकरी का त्यागपत्र दिखाकर कल ऑफिस में दे जाएगी फिर घर की जो चाहे हालत हो।' [45]

---

[45] सोने का बेसर ः मेहरून्निसा परवेज़, पृ. 176

नीना, परिवार और पिता की स्थिति देखकर विद्रोह समाप्त करती है।ये नौकरीपेशा नारी परिवाार के लिए स्वयं की आहूति देती है।ऑफिस के नायडू से उसे सख्त चिढ़ है। देखने में काला भी हैं। विवाह के बारे में माता पिता कोई चिंतन न करती तो वह नायडू से विवाह की कल्पना करती है।क्योंकि वह दिल का बूरा नहीं है।शादी करके परिवारवालों से बदला लेना चाहती है।अंत में वह सभी विद्रोह समाप्त करती है।इस प्रकार नीना की जाग उठनेवाली अस्मिता परिस्थितियों के भॅवर में पड़कर मुरझा जाती है।

'मेरे आशिक का नाम'

पति-पत्नी का आपस में विश्वास, परिवार की दृढ़ता केलिए अनिवार्य है।शादी के बाद यदि शंका उत्पन्न होती है तो पति-पत्नी के संबन्धों में दरारें पड़ने लगता है।पति की शंकालू दृष्टि के कारण पत्नी को द्वंन्द्व एवं तनाव अधिक झेलना पड़ता है।

कुसुम अंसल की कहानी 'मेरे आशिक का नाम' की नायिका उपमा और सहेली तमन्ना पहली कक्षा से लेकर कालेज तक एकसाथ पढ़ती हैं।उन्हीं दिनों उनकी मित्रता तमन्ना का एक चचाज़ाद भाई सलमान, जो भी मेड़िकल कॉलेज में पढ़ता है, से पनपने लगी।एकबार वे 'नौचंदी' में घूमते समय शरीर पर नाम गोदनेवाले एक मीरासी को देखते हैं।तीनों बातें करते समय मीरासी झटके से उपमा का हाथ पकड़ता है और पलक झपकते ही उसकी साफ गौरी बांह पर काले रंग से 'अल्लाह' लिखता है।एकबार लिखा तो वह मिटा नहीं जाता है।उपमा रो रही है। वह हिन्दु लड़की है और मां- बाप न होने के कारण दादाजी के घर में रहती है।यह देखकर वे लोग उसे डॉटेगी और जीवित ही नहीं छोड़ेंगी।

तमन्ना और सलमान साथ आकर दादाजी से बातचीत करते हैं।दोपहर में दादाजी उसकी कोठरी में घूसकर मुँह पर पट्टी बॉधता है और हाथ पलंग की नीवाड़ से बॉधता है।वह उसके सभी वस्त्र फाड़कर या नोचकर फेंक देता है और सोटी से नंगे बदन पर मार बरसाता है।बेहोश होनेवाली उपमा को बुआ अस्पताल में भर्ती करती है और दिनों बाद घर लौटती है।एक दिन आधी रात को लंदन में मेहरा साहब के पास भेजती है।मेहरा अंकल उसे अस्पताल

और फिर कॉलेज तक ले जाती है।एम. बी. ए. के इम्तहान के बाद उन्हीं के बेटे हेमंत से उसकी शादी भी हो जाती है।अब वह नीलू की मॉ है।

एक दिन ख़बर मिलता है कि दादाजी का देहान्त हो गया है।हेमंद मेरठ जाने के लिए कहता है क्यों कि दादाजी के पास संपत्ती है।वह खुलकर कहता है कि केवल उस पैसे केलिए उसने उपमा से शादी की है।उसका विश्वास है कि मेरठ में उपमा का मुसलमान लड़के से इश्क था, वह भी तो काफी सेन्सेशनल होगा, उसकी बॉह में उसके आशिक का नाम उर्दू में लिखा है। वह हादसा, आधी मेडिकल की पढ़ाई छुड़वाकर रातों रात लंदन फिंकवा दिया है।यदि हेमंत के पापा सहारा न देता तो अब उपमा किसी मेंटल हॉस्पिटल में होती।उपमा कई बार सच बताती है पर हेमंत अपने विश्वास में दृढ़ रहता है।

उपमा मेरठ में अकेला लौटती है और तमन्ना उसे मिलने केलिए नहीं आती है।इसलिए वह तमन्ना के घर पहूँचती है।पर तमन्ना और बच्चे सिंगापूर जाती हैं।सलमान है उसके शौहर।सलमान से बातें करते समय, बाज़ार बन्द हो जाता है और कर्फ्यू लगने लगता है।उपमा, सलमान के घर में फंस जाती है।बातें करते समय, नौचंदी के बारे में कहते हैं और उपमा सारी बातें सलमान से कहती है और रोती है।सलमान धीरे-धीरे उपमा के कांपते शरीर को बॉहों में भर लेता है और उसे आश्वस्त भी करता है।तब झटके से दरवाज़ा खोलकर एक पुलिस ऑफिसर के साथ हेमंत आता है और निर्मम झटके से उपमा को सलमान की बॉहों से बाहर घसीट लेता है और एस.पी साहब से पूछता है कि आपके कानून में हिन्दु औरत की मुसलमान से प्रेम करने की क्या सज़ा होता है।वर्षों से यातना के एक समुद्र से गुज़रनेवाली उपमा, एक थप्पड़ मार हेमंत के गाल पर देकर कहती हैं कि "एस.पी साहब, पहले ये बताइए कि आपके कानून में बदचलन, जुल्म करनेवाले शौहर केलिए क्या सज़ा है?दूसरे हिन्दु नहीं हूँ एस.पी साहब, मुसलमान हूँ।देखिए मेरी बांह पर गुदा हुआ, ये मेरे 'आशिक' का नाम ।" [46] यह कहकर उपमा सबके सामने बड़ी शान से अपनी बॉह फैला देती है।

---

[46] वहआया था ः कुसुम अम्साल पृ **49**

परिवार केलिए सब चुपचाप सहन करनेवाली उपमा अंत में, अपने अंदर संचित यातना और पीड़ा के विरूद्ध आवाज़ उठाती है और अपनी अस्मिता प्रकट करती है।

'दूसरा कबूतर'

शादी के बाद, पति का दूसरा विवाह, कोई भी स्त्री झेल नहीं सकती। पति को अपनाने केलिए वह जागृत रहती है। पति का पर-स्त्री संबन्ध या दूसरी शादी कभी-कभी स्त्री को विद्रोही बनाती है।

'दूसरा कबूतर' नासिरा शर्मा द्वारा लिखित नारी अस्मिता की सशक्त कहानी है। संसद सदस्य सुल्तान अहमद की बेटी सादिया अंग्रेजी में एम. ए. पास है। पिता उसकी शादी मिडिल ईस्ट में पोस्टेड बहूराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत बरकत से करवाता है क्योंकि उसे महीने में तीन लाख तनख्वाह मिलती है। शादी के बाद बरकत, सादिया को अपने साथ ले जाता है। वहॉ जाकर सादिया को पता चलता है कि पति पहले से शादीशुदा है और तीन बच्चों का बाप भी है। अब उसके पास केवल तीन विकल्प हैं -तलाक ले ले, दूसरी पत्नी बनकर रहना स्वीकार कर ले और पहली पत्नी का जीना हराम कर दे, उसे उसके बच्चों समेत घर से बाहर निकाल दे या बगैर तलाक लिए पति की सारी संपत्ति लेकर भाग जाए, या दूसरी प्रेमी ढूँढ़ ले या आत्महत्या कर ले या पति को मार डाले या अन्य जो भी आप चाहें। पहली पत्नी रूकइया पाकिस्तान से है। पिता का बिज़नेज़ है। पति के पास ब्रिटेन की नागरिकता है। दोनों महिलाओं का एक ही दर्द होता है। जब दोनों नारियॉ समझती हैं कि शहाब और बरकत एक ही है। दोनों दुखी हो जाती है। पति झूठा बहाना बनाकर दोनों पत्नियों के साथ रहने की कोशिश करता है। वह दोनों को जो चाहा वही और प्यार भी देने का वादा करता है। पर अंत में बरकत या शहाब के सारे कयास गलत करते हुए दोनों पत्नियां पति को एक साथ तलाक दे देती हैं।

जिन्दगी में पुरूष को पराजित करनेवाली नारी की अस्मिता को प्रस्तुत कहानी में देख सकता है। दोनों पत्नियों समेत जिन्दगी बिताने का बरकत या शहाब की लोपन टूट जाती है।

'खुदा की वापसी'

आधुनिक काल की नारियॉ जिन्दगी को संजीदा रूप में देखती है।परिहास और तमाशा सभी पसंद नहीं करती हैं।अपने को अशक्त बनाने केलिए वह तैयार नहीं हो जाती है।केवल सशक्त अस्मितावादी नारी को ही समाज में प्रथम स्थान मिलता है।

'खुदा की वापसी' नासिरा शर्मा की एक सशक्त स्त्रीवादी कहानी है।फरज़ाना यूनिवर्सिटी में पढ़ती है।एम.ए. करने के बाद वह आई.ए.एस में बैठना चाहती है।पर अम्मी-अब्बू को एक लड़का पसंद आ जाता है और बिना पूछकर फरज़ाना की शादी की तारीख पककी हो जाती है।सुहागरात में जुबैर, फरज़ाने को फुसलाकर उससे मेहर की रकम माफा करता लेता है।मेहर माफ करवाये बगैर दुल्हा दुल्हन को हाथ नहीं लगाएगा।फरज़ाना बहूत थकी और उदास हो जाती है। वह ससुराल जाती है फिर मायके में आ जाती है।तब वह सारी बातें भाई से बताती है।भाई मौलवी अली इमाम से इसके बारे में चर्चा भी करती है।बाद में जुबैर बताता है कि वह तो केवल फरज़ाना को फुसलाता है।पर फरज़ाना मेहर-माफ कर देती है और निश्चय कर लेती है कि इस आदमी के बच्चे की मॉ कभी नहीं बनेगी। "मैं तो अपने को सज़ा दे रही हूँ अपनी हिमाकत की यह कोख हमेशा सूनी रखूँगी, उस मर्द का बच्चा हरगिज कोख में नहीं पलने दूँगी, जो मोहब्बत के नाम पर सत्ता का परचम लहराये जो औरत के अधिकार को अपनी चालाकी से छीन ले और उसे निहत्था बनाकर अपनी जीति जमीन का एलन करे वह जमीन अंकुर नहीं फोड़ेगी, कभी" [47] वह पति से यह बात साफ कह भी देती है और अंतत: पति का घर छोड़कर चली जाती है।अपने को खरू बनाना फरजाना वांछित नहीं करती है ।मूर्ख बनाने का पति का श्रम पराजित करके वह पीहर में लौट जाती है।कहानी में फरज़ाना की अस्मिता को उजागर किया गया है।

---

[47] खुदा की वापसी ःनासिरा शर्मा, पृ. **30-31**

'बिंदिया'

नारी का नैसर्गिक रूप है माता रूप।माता बनने में सारी स्त्रियॉं जीवन की सार्थकता मानती है।गरीब हो या अमीर सभी स्त्री की यही इच्छा होती है।

प्रीतम अरोड़ा द्वारा लिखित 'बिंदिया' की **15** वर्ष की युवती बिंदिया, सबेरे में कॉलोनी के **50** घरों के सामने झाड़ू लगानेवाली है।उसके बदले में उसे प्रत्येक घर से **5** रूपए प्रति महीना तथा **12** बजे के बाद प्रत्येक घर से **2** रोटियां मिलती हैं ।वह एक साधारण सी विरूप जमादारिन है।उसके अंदर भी चूडियां पहनने की, चॉंदी की पायल ख़रीदने की, जी भरकर सोने की प्रबल इच्छा है।पर कड़ी मेहनत से बिंदिया से नीचे के **5** बच्चों का पेट मॉं भरती है।

एक बार काम करने के बाद गली में से आते वक्त बिंदिया सहसा देखती है कि दो तीन गऊएं आपस में लड़ रही हैं और एक बच्चा रो रोकर गली के बीचों बीच खड़ा कांपते स्वर में मम्मी को सहायता केलिए पुकार रहा है।बिंदिया झट से जातीय-विभेद को भूलकर टोकरी फेंककर उस बच्चे की और दौडती है और उसे गोद में उठा लेती है। स्वीटी की मम्मी स्तब्ध हो जाती है और मुन्ना को उठाकर बार-बार चूमती रहती है।इतने में बाहर आनेवाले पति से वह घटना के बारे में कहती है।यह सुनकर स्वीटी के पप्पा जेब से एक रूपए का सिक्का निकालकर उसके सामने फेंक देता है।पर यह इनाम स्वीकारने केलिए बिंदिया तैयार नहीं हो जाती है। "नहीं रैहने दो जी, कह कर रूपया वहीं छोड़कर चल पड़ीं।" [48] पति-पत्नी को, जमादारिन बच्चे को छूना पसंद नहीं आता है।

बिंदिया के मन में स्वीटी के बारे में मधुर याद कभी-कभी आती है।वह स्वीटी जैसा प्यारा, सुन्दर, गोल सा बच्चा चाहती है।एक बार स्वीटी को देखकर वह जातीय-विभेद को और अपने अस्तित्व को भी भूलकर, झट से उसे गोद में उठाती है।उससे बातें करती है तो स्वीटी की मां आकर दस-पंद्रह गालियां एक ही सांस में कहती है।बिंदिया ख़बराकर उसे गोद से

---

[48] परछाइयां :प्रीतम अरोड़ा, पृ. **72**

उतार देती है।यह क्षुद्र भाषा सुनकर "चीख उठा उसका अन्तर्रमन, हा-हा कर उठी चेतना।" [49]

कुरूप और गरीब होने के कारण बिंदिया दु:खी है।स्वीटी जैसी गोल-मटोल, सुन्दर बच्चे की मां बनने केलिए वह आतुर है।बच्चे को पशु से बचाने के बदले एक रूपया स्वीकारना वह पसंद नहीं करती है।बडा रकम होने पर भी वहीं छोड़कर चलने की मन: स्थिति रखती है। इस प्रकार कहानी में बिंदिया के आत्मसम्मान और उसकी अस्मिता की अभिव्यक्ति हुई है।

'अधूरा स्वप्न'

प्रेम मानव जीवन को रंगीन बनाता है।प्राचीन काल से ही नर-नारी आपस में प्रेम करते आये हैं।प्राचीन काल में प्रेमी-प्रेमिका का संबंध दृढ़ था।पर आज प्रस्तुत मान्यता केवल प्रहसन या खेल बन जाता है।

'अधूरा स्वप्न' प्रीतम अरोड़ा की कहानी है।नायक कंवल कॉलिज में बी. ए. अन्तिम वर्ष का विद्यार्थी है।वह प्रोफेसरों तथा अन्य विद्यार्थियों की दृष्टि में एक प्रतिभाशाली युवक है।वह हर परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करके प्रथम वर्ग में पास होता है।गप्पें हांकना और प्रेम में पड़ना आदि बातों को वह व्यर्थ कार्य समझता है ।कुछ दिन बाद विद्युत नामक एक सीधी-सादी और संकोच रहित युवती उसकी कक्षा में ज्वायन करती है।कंवल उसी की ओर आकर्षित हो जाता है।विद्युत से बातें करते समय उसके हृदय में प्रेम का धक्-धक् शब्द भर जाता है।अंत में अंतिम विषय की परीक्षा समाप्त होने के बाद कंवल विद्युत के सामने हृदय खोलकर प्रेम की बात कहता है तो विद्युत कहती है कि "कल्पना की दुनिया में बहकर हम वास्तविकता से आंखें नहीं मूँद सकते। प्रेम करने से पहले हृदय की दृढ़ता, शुद्धता, धैर्य और बलिदान भावना का होना आवश्यक है।" [50] यह सुनकर कंवल, विद्युत केलिए सर्वस्व समर्पित करने की क्षमता प्रकट करता है तो वह कहती हे कि "तो सबसे बड़ा बलिदान यही है कि आप मेरा ख्याल छोड़

---

[49] परछाइयां :प्रीतम अरोड़ा, पृ. 74

[50] परछाइयां :प्रीतम अरोड़ा,पृ. 69

दीजिए, अपनी पढ़ाई में मन लगाइए, अपना कैरियर बनाइए वरन् आपके जीवन के सपने लुट जाएंगे और देखना मुझे पत्र आदि लिखने की कोशिश मत करना वैसे-कोई काम हो तो मुझे मिलना।एक क्लास फैलो के नाते आपकी अवश्य सहायता करूँगी।अच्छा तो अब बस का टईम हो चुका है ?"। [51] इसके अलावा अगले हफ्ते में होनेवाली उसकी शादी केलिए वह कंवल को आमंत्रित करती है। हल्के प्रेम-संबंधों में फॅसकर अपना भविष्य नष्ट न करनेवाली चिंतनशील नारी के रूप में विद्युत सामने आती है।आधुनिक नारी की दृढ़ता एवं विवेक उसमें देखने को मिलते हैं।

'विदा की वेला'

कहते हैं, शादी स्वर्ग में चलती है।पर दहेज के नाम पर होनेवाले अन्याय नारियों को दुखी बनाते हैं।नारी को एक वस्तु के रूप में देखने की, बिकने की, खरीदने की प्रवृत्ति परिष्कृत समाज में भी देखने को मिलती है।

प्रीतम अरोड़ा द्वारा लिखित 'विदा की वेला' कहानी की नायिका है निशि ।निशि का परिवार सामान्य परिवार है।उसके पिता बेटी की शादी केलिए अपनी क्षमता से अधिक दहेज और सामान देता है।पर दूल्हे के पिता के चेहरे पर प्रसन्नता का आभास नहीं दीख पड़ता है।अपना इंजीनियर लड़के केलिए वह ज़्यादा दहेज मांगता है।निशि के विवश पिता अपनी बेटी को सुखी देखने केलिए कुछ भी करने केलिए तैयार हो जाता है।पर इतने में अस्मिता पर चोट खाकर निशि कहती है कि "क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आप सोने चॉदी के टुकड़ों को अपनी इज्जत क्यों समझे बैठे हो? क्या? एक बहू का जिसने जीवन पर आपके घर की मान-मर्यादाओं की पालन करना है, जीवन भर आपके परिवार की सेवा में अपने को मिटा देना है इसी बात से स्वागत किया जाएगा कि वह कितने वर्षों केलिए अपने खान-पीने-पहनने का सामान साथ लाई है।" [52] पिताजी, भाई और परिवारवाले निशि को शांत करने का श्रम करते हैं।लेकिन वह

---

[51] परछाइयां: प्रीतम अरोड़ा, पृ. **68-69**

[52] परछाइयां: प्रीतम अरोड़ा, पृ. **35**

शांत होने केलिए तैयार न होकर कहती है। " नहीं, नहीं छोड़ो।मुझे कह लेने दो मन की बात।नाक कटने का बहाना बनाकर समाज के यह ठेकेदार दिन-ब-दिन अपनी भूख को बढ़ाते जा रहे हैं।और यह भूख बढ़ते-बढ़ते एक छुत बनती जा रही है, जिसकी भेंट आए दिन गरीब माता-पिता और उनकी निरपराध-कन्याओं की चढना पश्ता है।यह तो जीवित नर-बली है।ससुराल में घुसते ही बेचारी कन्याओं की वह व्यंग्य और ताने सुनने पडते हैं कि हृदय में जिस नए जीवन के सपने संजोकर वह नए घर में प्रवेश करती है।छिन्न-भिन्न होकर बिखर जाते हैं।टूटे हुए दिल आयु भर मिल नहीं पाते ।इस पाश्विक भूख को शांत करने के असफल प्रयास हमारे समाज को नर्क बनाए हुए हैं और करोड़ों बालिकाएँ सिसक रही हैं, क्यों कि वह अपने चिर-संचित स्वप्नों की पूर्ती दहेज के अभाव में नहीं कर पाती और आयु-पर्यन्त तपस्विनी सा जीवन व्यतीत करने को बाधित हो जाती है और कुछ मन-चाहे साथी न पाकर अन्दर ही अन्दर सिसकती रहती हैं।उन करोड़ों कन्याओं का शाप इन लंबी नाक वालों को मिटाकर छोडेंगा और अन्याय और झूठे ढकोसलों की दीवार टूट कर रहेगी अच्छा।भैया, यह सब सामान उठाकर अन्दर रखो और जाने दो इन लोगों को।निशि इनकी भूख के अग्नि-कुण्ड में आहूति नहीं देगी।"[53]

लड़की केलिए पति के घर रहना ही शोभा देता है, इस प्रकार कहकर माताजी निशि को समझाने की कोशिश करती है तो निशि कहती है कि "देखो मां मुझे मजबूर नहीं करो।जो घर में घुसने से पहले ही इस तरह स्वागत कर रहे हैं, व आगे जाकर क्या गुल खिलाएंगे, यह मैं भली-भांती जानती हूँ।तुम मुझे मेरे पथ से विचलित मत करो, मैं तुम पर बोझ नहीं बनूँगी ।आपने मुझे इस लायक तो बना ही दिया है कि अपनी रोटी केलिए कमा सकूँ।" [54] पिता भी सांत्वना देने का श्रम करते है तो निशि सधैर्य कहती है कि "नहीं पिताजी।मैं अपना मान-सम्मान इन ठीकरों के बल पर नहीं बनाऊँगी।लोगों को वापस भेज दो।कह दो।अपने लाड़ले का सौदा

[53] परछाइयां: प्रीतम अरोड़ा, पृ. **35-36**

[54] परछाइयां: प्रीतम अरोड़ा, पृ. **36**

कहीं और कर लें। "[55] और निशि लज्जित ससुर से कहती है कि "दहेज की मांग एक कलंक है और उस कलंक का ढिंढ़ोरा पीटने में मुझे कोई संकोच नहीं। आप लोग जा सकते हैं।" [56] यह कहकर कोध से जलती निशि, अपना कंगन तोड़कर फेंक देती है।

दहेज प्रथा के विरूद्ध आवाज़ उठाती है निशि। अपने को केवल वस्तु के रूप में बिकने से वह इनकार करती है। नारी अस्मिता की सशक्त अभिव्यक्ति प्रस्तुत कहानी में देखने को मिलती है।

'पोर्शिया'

'सादा जीवन : उच्च विचार' करनेवाली नारियॉ प्राचीन काल से ही भारत में रहती हैं। पर पारिवारिक जीवन में, वह प्राय: चुपचाप जीवन बिताती है। सही समय आने पर, अन्याय के विरूद्ध वह आक्रोश करती है।

प्रीतम अरोड़ा द्वारा लिखित 'पोर्शिया' कहानी की नायिका है वीणा। उसने बी. ए. पास करने के बाद लॉ किया है। वह न्याय की रक्षक है और अपराधियों केलिए पोर्शिया का अवतार भी है। इसके अलावा सशक्त स्त्रीवादी भी है / ' नारी जाती केलिए उसने नवीन पथ प्रशस्त किया था। सदियों के दासत्व से मुक्त होने की आकांक्षा से कितनी ही गौरवमयी ललनाओं को प्रेरणा मिली थी। नारी पुरूष की दासी नहीं, सहधर्मिणी है। कंधे से कंधा मिलाकर चलने का साहस रखती हैं।" [57] सन् **1946** में जब वह **22** वर्ष की है यह विचार एक बहूत बड़ा साहस है। बाद में वह राकेश की सहधर्मिणी बन जाती है और बेबी की मां भी बनती है। सुख-दु:ख सम्मिलित वैवाहिक जीवन, बेबी की शादी होने पर बिल्कुल सूना सा हो जाता है। अब **50** वर्ष की उम्र में दबी हुई चिनगारी उबलने लगती है। अब उसे फिर लगता है कि वह वीणा नहीं,

---

[55] परछाइयां: प्रीतम अरोड़ा, पृ. **36**
[56] वही, पृ. **36**
[57] वही, पृ. **36**

पोर्शिया है। ठीक समय आने पर वीणा के सुन्दर संचित उच्च विचारों की चिनगारी उबलती है। अन्याय और असमता के विरूद्ध आवाज़ उठाने केलिए वह तैयार भी हो जाती है।

'ग्रोथ'

पति या पत्नी की शंकालू दृष्टि वैवाहिक संबन्धों में तनाव उत्पन्न करती है। इससे नारी की स्थिति अधिक दयनीय बन जाती है। पति की शंकालू दृष्टि से पत्नी को ही तनाव एवं द्वन्द्व अधिक झेलना पड़ता है।

शशिप्रभा शास्त्री कृत 'ग्रोथ' नारी अस्मिता की एक सशक्त कहानी है। किशोरबाबू अस्पताल में पड़ा सड़ रहा है। पत्नी उमादेवी हाल में खरीदे नये मकान को अच्छा खासा बनाने में व्यस्त हो जाती है। अस्पताल के कर्मचारी विवश होकर उमादेवी को बुलाते है। वह अपने बहूत से काम छोड़कर, दुपहर को अस्पताल पहूँचती है और सीधे डाक्टर से बातचीत करती है। वह चाहती है कि किशोर बाबू एक लंबे अरसे तक अस्पताल में रहते रहें।

शादी के बाद घर की आर्थिक मज़बूरी के कारण उमादेवी भी नौकरी करती है। पर किशोर बाबू उसे बेहया, बेगैरत और देह बेचनेवाली मानता है। पति का अविश्वास भाव वह सहन नहीं कर सकती। उनके बीच झगड़ा बढ़ते जाते हैं। किशोर बाबू फ्लैश खेलता है और रात में देर तक बाहर रहता है। वह साल भर बीमार होकर बिस्तर पर पड़ता है। पत्नी स्वयं अपनी परिस्थितियों से जूझती है। वह कहती है कि "फिर मेरी भी कुछ भूख तो-साथ की भूख-साथी की प्यास-किशोर बाबू से मुझे कुछ नहीं मिल पाता था, सिर्फ संशय, तोहमतें और भर्त्सना। मैं उस सबको भूलने केलिए पुरूष साथियों की अब खुद आमंत्रित करने लगी, उनके साथ घूमने जाने और ऑफिस की तरफ से आयोजित पिकनिक-पिक्चर में जाने में अब मुझे कोई संकोच हिचक नहीं रही। डाक्टर मुझे नहीं मालूम, कितने पुरूष जानते हैं, कि औरतें चाहे कितनी भी खुली खर्राटे हो, पर देह वे हर किसी के हाथ नहीं बेच सकतीं। और फिर डाक्टर मैं तो यह

मानती हूँ कि स्त्रियों को अगर मन की संतुष्टि मिल जाए तो देह के आदान-प्रदान उनकेलिए महत्वपूर्ण नहीं रह जाता।"[58]

अब किशोर बाबू और उमादेवी एक छत के नीचे रहते हैं।पर दंपति के रूप में नहीं एक दूसरे के दुश्मन की तरह जिन्दगी बिताते हैं।कई सालों तक पति की पीड़ा उमादेवी चुपचाप झेलती है।सभी विपरीत परिस्थितियों से जूझकर अंत में वह विजयी हो जाती है।दो-चार साल से बेटा बाहर जाता है।और वह अपना तबादला बाहर करवा लेता है।लेकिन पति बीमार होने के कारण तुरन्त बाहर जा नहीं पायेगी।इतना दुख झेलकर भी उमादेवी अब भी जिन्दा रहना चाहती है।यह उसकी अस्मिता का सबूत है।

'सुमित्तरा की बेटियाँ'

भारतीय मान्यता के अनुसार पति के प्रति ईमानदार रहना आदर्श पत्नी का धर्म है।लेकिन पत्नी के प्रति ईमानदार रहने केलिए पति अक्सर तैयार नहीं होता।खाना तैयार कर, बिना सोचे आधी रात तक पति की प्रतीक्षा करनेवाली असंख्य नारियाँ यहाँ रहती हैं।पति कभी-कभी शराब पीकर उनको पीटते हैं और पैसे बरबाद करते हैं।फिर भी हिन्दुस्तानी नारियाँ पति के प्रति प्राय: निष्ठावान रहती हैं।

नारी अस्मिता को अभिव्यक्त करनेवाली एक सशक्त कहानी है सूर्यबाला कृत 'सुमित्तरा की बेटियाँ'।सुमित्तरा किसान परिवार की सदस्या है।वह गोबर पाथी है, धान कूटती है।लेकिन वह आम औरत की तरह न फुसफुसाती है और वतियाती है।कोई कुछ पूछता, कहता तो बड़ी खुशदिल से लेकिन अति-संक्षिप्त-सा जवाब देती है।उसकी दो बेटियाँ हैं-पियरिया और झुमरिया।गंदी मैली कुर्तियों और खेरहे भूरे बालों वाली लड़कियाँ अपनी या किसी और की गाय-भैंस चराकर लौट रही हैं।दोनों के पिता 'ढ़ोढ़ेलाल' की कोई खबर नहीं है।चिट्ठी भी नहीं आती है।सुमित्तरा और बेटियाँ काम करके जिन्दगी बिताती हैं।इतने में खबर फैलती है कि ढ़ोढ़ेलाल आता है।इधर नहीं, कोस-भर पीछे लाइन बाजार में ठहरा है।वह अकेले नहीं, एक

---

[58] अनुत्तरित : शशिप्रभा शास्त्री, पृ. **24-25**

बजबजवाली बंगालिन के साथ है। पासवालों के कटू शब्द सुनने पर भी सुमिन्तरा धान कुटाई, बासन जूठन और गाय-गौरू की सानी-पानी करती है। मल्लाही टोले में ढ़ोढ़े की शादी चल रही है। मल्लाहिनें दुल्हिन को टैक्सि में बिठा रही है। यह सब देखकर झुमरिया क्रोध से भरकर ढ़ोढ़े की टैक्सि पर धूल फेंक कर भागती है। "गाड़ी स्टार्ट होने की थी कि अचानक तीर की तेजी से सुमरिया निगोड़ी से नीचे उतरी और जमीन की खसखसी रेता मिट्टी, कीचड़ जो भी उसके हाथों में समाया, भरपुर उठाकर स्टार्ट होती टेक्सि पर फेंककर चिल्लाई " ढ़ोढ़े मर गिया, उठी लहास"- जब तक लोग चपतियाने को दौड़े वह उसी तेजी से हाँकती हुई बाड़े की दीवार फलाँगती गायब।" [59] सारी टोले में ये सब जल्दी ही फैलते हैं। प्रस्तुत घटना के बाद दोनों लड़कियाँ खेल में मग्न है। दोनों एक दूसरे की मुंडी से मुंड़ी सटाये मिट्टी का लंबा सा दूह अपने छोटे- छोटे हाथों से बड़ी तन्मयता से धोप रही है। इसके बारे में पूछने पर वह कहती हैं कि 'ये तो ढ़ोढ़े की कब्बर है।'सुमिन्तरा बेटियों को कलेजे से लगा लेते हैं।

मुहल्ले में रहनेवाले होने पर भी, पढ़ी-लिखी नहीं होने पर भी पिताजी की दूसरी शादी के बारे में सुनकर विद्रोही बन जाती हैं। झुमरिया जो एक छोटी सी लडकी है, अस्मिता के बारे में सुनती भी नहीं है। पर ठीक ही समय वह अस्मिता को पहचानती है और विद्रोह करने की क्षमता भी प्राप्त करती है।

'संज्ञाहीनता से ज्ञानशून्यता तक'

अनेक प्रकार की प्यारी-सी कल्पनाएँ लेकर नारियाँ वैवाहिक जीवन शुरू करती हैं। प्रेमिका, पत्नी, गृहिणी और मां बनने की कल्पना। लेकिन अपने आपको पूरी तरह समर्पित करने के बाद भी कभी-कभी पति को अपना नहीं बना सकती हैं। यदि पति की मृत्यु हो जाय तो जिन्दगी में वह अकेली बन जाती है। भारतीय मान्यता के अनुसार विधवा सिन्दूर नहीं भरती है, साज-संवार नहीं करती है। विधवा की उपस्थिति मंगल कर्मों में असुभ मानी जाती है।

---

[59] सांझवाती : सूर्यबाला, पृ. 20

'संज्ञाहीनता से ज्ञानशून्यता तक' विजय चौहान की कहानी है। प्रस्तुत कहानी में 'मै' नें अपना नाम देवकी रखा है। कहानी पूर्व दीप्ति पद्धति में लिखी गयी है। विदेश में रहते समय देवकी के मन में अतीत की स्मृतियॉ जाग उठती हैं। कहानी की नायिका मनीषा है। अपने आपको पूरी तरह समर्पित करने पर भी, वह विपिन को अपना नहीं बना पायी है। विपिन की मृत्यु के बाद उसके जीवन का एक ही अवशेष बच रहा है। देवकी मनीषा को प्रसव केलिए अस्पताल में भरती करवाती है। अगले दिन आती तो देवकी समझती है कि मनीषा जीजे विपिनकुमार का बेटा बचा नहीं जा सकता है। प्रसूतीगृह से छुट्टी मिलने पर देवकी उसे विपिन के कमरे में छोड़ देता है। वहॉ उसे अतीत की घटनायें याद आती हैं। अगले दिन वह देवकी के यहॉ आती है। उसे विश्वास है कि देवकी उसे फिर से काम दिलवा देगा और वह फिर से रेडियो-स्टेशन जायेगी। साज-संवार आधुनिक लड़की की तरह है। "मनीषा सिल्क की गुलाबी साड़ी पहिने थी, और हल्के नीले रंग का ब्लाउज। दोनों कलाइयॉ, कॉच की चमकती चूडियों से भरी थीं। नाखूनों पर नेल-पालिश थी, गालों और होटों पर सुर्खी। ऑखों में काजल था। माथे पर बिन्दी और मांग में सिन्दूर।" [60] उसे इस रूप में देखकर देवकी चकित हो जाती है। बातचीत के बीच देवकी मांग में सिन्दूर भरने के बारे में असन्तुष्टि प्रकट करती है तो मनीषा कहती है कि "क्यों कि मैं सदा सुहागिन हूँ...जब विपिन जिन्दा था, तब उसने भी एक बार मुझ से सिन्दूर भरने केलिए कहा था। और अब तो मुझे किसी से पूछना भी नहीं पड़ेगा।" [61] वह आगे बातचीत में बतलाती है कि विपिन उसे शादी नहीं करती है। धीरे-धीरे उसका मानसिक स्वास्थ्य बिगाड़ जाता है। सभी व्यक्तियों में वह विपिन को देखती है। इलाज केलिए देवकी उसे डाक्टर के पास भेजती है। पहले दिन उसके साथ देवकी जाती है। शेष छह दिन में एक टैक्सीवाला के साथ वह अस्पताल में पहूँचती है। लौटते वक्त वह टैक्सीवाले को विपिन सोचकर रास्ता देखने का वादा करता है।

---

[60] एकान्तवास ः विजय चौहान, पृ. **21**

[61] वही, पृ. **23**

पुरानी मान्यताओं को तोडकर मनीषा शादी के बिना पुरूष के साथ जीवन बिताती है।पुरूष और बच्चे मर जाने पर भी साज-संवार करने की ताकत उसमें है।पुरूष की मृत्यु के बाद, पति की स्मृतियों के सहारे जीवन-यापन करने केलिए वह तैयार नहीं है।बच्चे की मृत्यु के अगले दिन वह नौकरी करने केलिए तैयार हो जाती है।अपनी ताकत और अस्मिता को वह पहचानती है।

'उत्तरार्द्ध'

नारी अपने जीवन काल में प्राय: पुरूष की आश्रिता रहती है।कन्या के समय पिता पर, पत्नी के समय पति पर और मां के समय पुत्र पर वह आश्रिता रहती है।कभी-कभी यह पराधीनता उसे विवशता की स्थिति में डाल देती है।बच्चे बड़े होने पर अपने भविष्य निर्माण में व्यस्त हो जाते हैं।ब्याह के बाद हिस्सेदार के साथ अपने हिसाब से जीवन जीना प्रारंभ करते हैं।इसमें मॉ घर में उपेक्षित, विवश तथा फालतू हो जाती है।फलत: वह अपनी ममता का, चाहकर भी, पूरा उपयोग नहीम् कर पाती है।

सूर्यबाला द्वारा लिखित 'उत्तरार्द्ध' मां की अस्मिता की सशक्त कहानी है।कहानीकार अपने बेड़रूम की खिड़की से नायिका, जो आसपास के घर में रहती है, को देखती है।वह औरत सारे समय घर में काम करती है।घर में पति, दो बेटे और बहू भी होते हैं।इन लोगों के कपड़े धुनकर कपाट में रखती है।कपड़े पर निशान लगकर भी कभी-कभी बड़े की कपाट में छोटे के बनियानें और छोटे की कपाट में बड़े की कुर्ता रखती है।अंत में एक अदद चश्मा खरदि देती है।क्योंकि उसकी नज़र धुंधलायी लगती है।बेटे, बहू या पति भी उसको सुख-दु:ख के बारे में पूछता ही नहीं।उसे लगा कि केवल मां, जो कोने में रखी तस्वीर पर ठहर जाती है, उसे बड़े दुलार से लगातार देखे जा रही है, पुचकार रही है और दु:ख-सुख पूछना चाह रही है।बेट- बहू उसके सवालों का बराबर हॉ, न में जवाब देते रहते है।छोटा छोड़ देता है, बाकी सारा समय मकान बेचने खरीदने की दलाली साइड़ बिज़नेस करता है।वे कभी-कभी मॉ की शिकायत करते है कि छोटे केलिए आने फोन के बारे में न कहती है।पिता अखबार पढ़कर दिन

बिताते हैं। वह औरत चाहती है कि घर के सब एक साथ बैठकर बातें करें, खाना पीना भी करें ।एक दिन बड़ा बेटा मम्मी से अमृतांजन मांगता है। मम्मी खबराकर पूछती है कि क्या उसके सिर में दर्द है। बेटे को नहीं, बहू के सिर में दर्द है। वह जल्दी से जल्दी बहू के पास जाकर सिर दबा देना चाहती है। इसके साथ यह भी चाहती है कि बेटा उससे भी पूछें कि वह क्यों अमृतांजन लाई है। क्या उसके सिर में भी दर्द है। लेकिन बेटा इसके बारे में नहीं पूछता है। पति सुबह का आधा पढ़ा अखबार उठा लेता है। वह उसे बियर की झाग भरी ग्लास और पापड़ सेंककर देती है। पापड़ सेंकते समय भी वह बहू के बारे में सोचती है। बहू के पास उसे फौरन पहूँचना चाहिए। बहू को न द्वंद्व जालों में उलझना ही नहीं चाहिए क्योंकि वह तो दूसरे घर की बेटी है।

मां को लगा कि मां की तस्वीर उसके सुख-दु:ख के बारे में खाने-पीने के बारे में पूछती है। अब वह मुक्ति चाहती है। इसलिए वह अधूरे पढ़कर छोड़ी पुस्तक उठकर, दुबारा शुरू करना चाहती है। वह चुपचाप लेटकर पढ़ना शुरू करती है। "पलटी है वह। सिर्फ इतनी कि-मां की तस्वीर के पास रखी पुस्तकों की कतार से उसने एक पुस्तक निकाली। देखकर याद आया कभी, बहूत पहले यह पुस्तक शुरू कर अधूरे घर पर छोड़ देनी पड़ी थी, आज दुबारा शुरू की और चुपचाप लेटकर पढ़ने लगी"[62] ये दृश्य पति, बहू और दोनों बेटे हतप्रभ और विस्मित नजरों से देख रहे हैं।

प्रस्तुत कहानी में मम्मी चुपचाप, निशब्द रूप में अस्मिता प्रकट करती है। पति, बेटे और बहू से वह प्यार चाहती है, कुशल पूछना चाहती है। लेकिन घरवाले मम्मी को केवल उपकरण के रूप में देखते है। इसके विरोध में वह निशब्द रूप में विद्रोह प्रकट करती है।

'नई मा'

वात्सल्य का भाव नारी का सहज, स्वाभाविक और प्राकृतिक गुण है। माता का प्यार अपने सभी बेटे-बेटियों के साथ रहता है। बच्चा या बच्ची मां का प्यार चाहते हैं। पुचकारना, कहानी सुनाना, पकवान खिलाना, प्यार भरी नामों से बुलाना ये सब लड़कपन में पसन्द करते

---

[62] सांझवाती ःसूर्यबाला, पृ. **39**

हैं।बच्चपन में मां की ममता या भरपूर प्रेम की जरूरत है।जीवन में ठीक तरह से आगे बढ़ने केलिए यह परम आवश्यक है।मां के स्थान पर दूसरों की प्रतिष्ठा की कल्पना भी नहीं कर सकता।यदि मां के स्थान पर सौतेली मां आती है तो स्थिति उलट जायेगी।

'नई मा' सविता चड्ढ़ा द्वारा लिखित कहानी है।मध्यवर्गीय परिवार के कपड़े का व्यापार करनेवाला नन्दलाल की बेटी है छठी में पढ़ती किरण।किरण की मां की मृत्यु होती है।दु:खी किरण को उसकी सहेली अंजना अपने घर ले जाती है।छ: महीने के बाद पिताजी दूसरा ब्याह करता है।सौतेली मां ललिता किरण की ओर ध्यान भी नहीं देती है।अंजना और मां किरण से सहानुभूति प्रकट करती हैं, प्यार भी देती हैं।जब किरण तेरह वर्ष की है वह घर के काम में ललिता की सहायता करती है।पर ललिता बात-बेबात उसे डांटती है।छोटी-छोटी बात पर, ज़रा सी भूल पर उसे कई बार मार भी खानी पड़ जाती है।एक बार बिना कहे चीनी खाने पर ललिता उसे घर से बाहर खड़ा कर देती है और अंदर जाकर सबको गालियां देती है।अंजना और मां, किरण को बचाने, की कोशिश करती हैं।उक्त घटना के दो दिन बाद ललिता किरण को अपने साथ अमृतसर ले जाती है।अंजना बार-बार किरण का पता लेने की कोशिश करती है। दस साल के बाद अंजना को किरण की शादी का कार्ड मिलता है।शादी दिल्ली की एक धर्म शाला में होगी।कार्ड़ में दिये पते पर अंजना माता-पिता के साथ पहूंचती है।किरण, कमरे में बिछी दरी पर एक नुक्कड़ में दीवार का सहारा लेकर सिकुड़ी बैठती है।भागकर अंजना उससे लिपट जाती है।बातचीत के बीच किरण कहती है कि वह घृणों से धरती पर बोझ है।उसे लगा कि केवल दस बरस ही नहीं, जब संसार बना है तभी से वह रोती है, चिल्लाती है, मार खाती है और सहती भी है।अंजना उसे सांत्वना देने की कोशिश करती है।शादी के बाद किरण ससुराल पहूँचती है तो सास एक चार बरस की सुन्दर सी बच्ची को किरण की गोद में बिठाती है।किरण खुद सौतेली बच्ची थी और अब वह स्वयं पराई बच्ची की सोतेली मां है।सोचते-सोचते अंजना गुमसुम हो जाती है।तब किरण कहती है कि "यह मेरी हाथ की लकीरों में ही था शायद, न उससे कोई गिला है न इससे कोई गिला है, जो लिखा था लकीरों में मुझको वही मिला है।पर मैं

इससे बिलकुल दु:खी नहीं हूँ।जो मुझे अपनी नई मां से नहीं मिला था वे सब मैं मिट्ठू को दूँगी। मेरी नई मां ने मुझे कभी बेटी नहीं कहा, सिर्फ किरण थी मैं वहाँ लेकिन सब मैं नहीं दोहराऊँगी।मैं समझती हूँ, मुझे क्या करना चाहिए।"[63] कहकर वह मिट्ठू को गोद में बिठाती है।किरण की सौतेली मां जिसप्रकार का दुर्वव्यवहार किरण से करती थी वह उसकी पुनरावृत्ति नहीं चाहती है।किरण की मिट्ठू डाक्टर बनती है और वह चाहती है कि हर जन्म में किरण ही उसकी मां बने।

सौतेली मां किरण को यातनायें देती है।फिर भी किरण उसको घृणा नहीं करती।आगे चलकर वह भी सौतेली मां बनती है।लकिन वह उस व्यवहार की पुनरावृत्ति नहीं करती है।वह समझती है कि बच्चों के भविष्य की जिम्मेदारी मां पर ही होती है।इसलिए वह मिट्ठू को मां की ममता से पालन-पोषण करती है।दुर्व्यवहार की पुनरावृत्ति करना नारी अस्मिता के विरूद्ध है।खुद को समझकर दूसरी की भलाई केलिए काम करना ही सच्ची अस्मिता है।

'प्रश्नचिन्ह

भारतीय परंपरा में बेटियाँ माता-पिता केलिए बोझ है।अधिकांश माता-पिता अपनी लड़की को अठारह वर्ष होने पर उसके लिए लड़का तलाश लेकर शीघ्र ही ऋण-मुक्त होना चाहते हैं।मध्यवर्गीय परिवारवाले लड़का सजातीय होना चाहते हैं।यदि बेटी का कोई प्रेम संबन्ध हो, वह विजातीय परिवारवाला भी हो तो ज़रूर ज्वालामुखी फूट पड़ेगा।

सविता चड्ढा की 'प्रश्नचिन्ह' कहानी की नायिका उमा स्वेच्छा से राजन वर्मा को प्यार करती है।उमा भली-भाँती जानती है कि उसका परिवार इसके लिए आसानी से सहमती नहीं देगा।उमा के पिता अपनी बेटी का विवाह किसी उच्च-जाती के ब्राह्मण लड़के से करना चाहता है।सारी दुनिया उमा और राजन के प्रेम पर ध्यान लेने से उमा पढ़ाई छोड़ देती है।पिता उमा के लिए एक सजातीय लड़का तलाश कर लेता है।लेकिन उमा प्रस्तुत शादी के लिए तैयार नहीं है।पिता नाराज़ होकर छड़ी से उसे मारता है।उमा को समझाने केलिए उसकी बुआ को बुलाता

---

[63] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियाँःसविता चड्ढा, पृ. **95**

है।बुआ एक अच्छे संस्थान में प्राध्यापिका है।बातचीत से बुआ जानती है कि उमा राजन केलिए पूर्ण मन से समर्पित है।

बुआ की शादी सजातीय लड़का से हुआ है।लेकिन वह बहूत शराब पीनेवाला है और कोई उसे पीने से रोक नहीं सकता।शराब पी-पीकर वह अपना पुरूषत्व भी खो चुका है।बुआ न तो मॉ ही बन सकी और न उसकी सुहागिन बन सकी।उसके मन में मॉ बनने की अथाह ललक है।एक दिन वह पति से पूछती है कि "आप घर में क्यों नहीं बता देते वे लोग मुझे बॉझ समझते हैं? आप उन्हें सच कह क्यों नहीं देते।मैं कल ही दुनिया को बता दूँगी बॉझ मैं नहीं आप।"[64] यह सुनकर लात और घूसों देकर पति उसे घर से निकाल देता है।दूसरी शादी में वह विधुर पुरूष की पत्नी बन जाती है।पति के पहले ब्याह में होनेवाले बच्चे के पालन-पोषण के लिए वह गर्भपात कराती है।बाहर के लोग आज तक उन्हें बॉझ कहते हैं।उनकी राय में "हमारे देश की औरत तभी आदर्श और पूजनीय बनती है जब उसने अनेक कठिनाइयॉ सही होती हैं।अनेक त्याग भी करती हैं जहॉ उसने विरोध किया, वह कुलटा बन जाती है, मानो भगवान ने औरत को केवल कष्ट सहने के लिए बनाया है। "[65] कायर न बनने का, भावुकता से निर्णय न लेने का सलाह सुनकर उमा पाषाण बन जाती है।एक बार राजन के घर जाकर निर्णय लेना सही मानकर बुआ और उमा की मां राजन के घर चली जाती हैं।अच्छा परिवार होने के कारण उमा का विवाह राजन के साथ चलता है।विदा लेते समय अनुभवी बुआ उससे कहती है कि "आज मैं ने एक साहस भरा और अच्छा काम किया है, जिसके लिए मैं सदा प्रसन्न रहूँगी।तुम आज की नारी हो। बेवजह न तो विरोध करना, न ही अपने अधिकारों को छोड़ना, न कर्तव्यों को.न ज्यादा मीठी बनना, न ज्यादा कड़वी।"[66]

औरत को क्या-क्या सहना पड़ता है।शादी के बाद बच्चा न होने पर सारी दुनिया औरत को कोसती है।गडबड़ी, स्त्री का है या पुरूष का लोगों की दृष्टि में नारी ही इसका

---

[64] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. 98

[65] वही, पृ. 99

[66] वही, पृ. 100

जिम्मेदार है। ।सन् उन्नीस सौ सत्तर के पहले की स्थिति यही है।और स्त्री चुपचाप यह सब सहती है।पति के विरूद्ध आवाज़ उठना संभव भी नहीं है।प्रस्तुत कहानी में बुआ पति के विरूद्ध आक्रोश व्यक्त करती है।और मां से सलाह के रूप में सभी घटनायें और हिन्दुस्तान की नारियों की दु:स्थिति के बारे में भी बताती है।पति के विरूद्ध, समाज के विरूद्ध, स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचारों के विरूद्ध वह आवाज़ उठती है।अस्मिता को कायम करने केलिए उमा को यथार्थपरक उपदेश भी देती है।

प्रेम'

सभी नारियों के मन में दूल्हा के प्रति तरह-तरह की आशाएँ और प्रतीक्षाएँ होती है।नारी राजकुँवर जैसे पति को चाहती है।आज की नारी शादी के बारे में भी रंग-बिरंगे सपने देखती है।विकल अगों वाले को जीवन साथी बनाने के लिए साधारणत: वह तैयार नहीं है।तोतला, लंगड़ा, अंधा, बहरा या पागल को पति के रूप में मानने के लिए वे सन्नद्ध नहीं है।फिर भी आज ऐसी नारियां भी है, जो सारी दुनिया कोसने पर भी हिम्मत के साथ ऐसे लोगों का वरण कर खुशी से जीवन बिताती हैं और दूसरों को सहारा भी देती हैं।

'प्रेम' सविता चड्ढा द्वारा लिखित प्रेम कहानी है।प्रेम नामक युवक जो लंगड़ा है-किसी सरकारी दफ्तर में सहायक है। 'मैं' नौकरी के पहले दिन घर लौटने केलिए बस में चढ़ती है।बस में बहूत भीड़ है।तब प्रेम अपनी जगह से खड़ा होकर 'मै' को सीट ऑफर करता है।प्रेम आकर्ष क चेहरेवाला है। 'मैं' पहले उससे डरती है।धीरे-धीरे दोनों अनजाने प्यार में पड़ती है।एक दिन ड्राइवर बस, स्टैण्ड से थोड़ी आगे रूकी तो 'मैं' पहचानती है कि उसकी एक टांग खराब है। 'मै' को सीट न मिलती तो प्रेम उठकर सीट देता है।उसकी शालीनता और विनम्र भाव 'मै' को आकर्षित करता है।दिन-प्रतिदिन वे बस में मिलते है।एक बार शादी के समय अपने घर आने का निमंत्रण देती है तो प्रेम परेशान हो जाता है।कई दिन बीत जाते हैं।एक दिन दोनों एक ही सीट पर बैठते है और मैं की शादी कुछ समय के बाद होनेवाली कहें तो प्रेम खुश हो जाता है और 'मैं' का हाथ पकड लेता है।अब भी निर्णय न लेने के कारण 'मैं' धीरे से अपना हाथ छुड़ा

लेता है।वह सॉरी भी कहता है। 'मैं' ओर प्रेम के बीच होनेवाले बातचीतों से मैं समझती है कि प्रेम का केवल एक अंग ही खराब है।उसका मन साफ सुथरा है और वह दया नहीं, प्रेम और खुशियॉ चाहता है।वह सारी उम्र केलिए नहीं केवल कुछ देर केलिए ही 'मैं' का सहारा चाहता है।क्या यह भी देने केलिए मैं तैयार नहीं है? तब 'मैं' ठीक निर्णय लेती है कि सारी जिन्दगी प्रेम के साथ बितायेगी। " मैं ने देखा प्रेम अब भी मेरे जवाब की आशा में मुझे देख रहा है।मैं ने धीरे से प्रेम का हाथ अपने हाथ में ले लिया, उसने मेरे हाथ पर अपना दूसरा तपता हुआ हाथ रख दिया।"[67]

सौंदर्य को प्रथम स्थान देनेवाले आधुनिक नारी से बिलकुल भिन्न है 'प्रेम' कहानी की नायिका 'मैं'।प्रेमी लंगड़ा है, पर उसका मन बहूत सुन्दर है।मैं यह पहचानती है और माता-पिता या परिवार का सहारा न लेकर ठीक समय पर सही निर्णय लेती है। 'मैं' शिक्षित है और नौकरीपेशा भी है।ठीक निर्णय लेने में ये बातें उसे सहारा देती हैं।अस्मिता को पहचानकर, समझकर दूल्हे को खुद ही चुनने की हिम्मत भी दिखाती है।

'सत्य की खोज'

हिन्दुस्तान में नारी केलिए पति परमेश्वर है और सतीत्व की भावना ही उसका धर्म है।प्रस्तुत अवधारणा के कारण वह सदैव शोषण की शिकार रही है।यदि पति कोई मारक बीमारी ले जानेवाला हो, पत्नी चुपचाप झेलती है।

'सत्य की खोज' सविता चड्ढा द्वारा लिखित नारी अस्मिता की एक कहानी है।कहानीकार 'मैं' की छोटी बहन अस्पताल में काम करती है।'मैं' कई बार उसके साथ अस्पतालों में घूमती है- वार्डो में ऑपरेशन थियेटर में और ऑपरेशन थियेटर के बाहर भी।मरीजों से बातें करने में 'मैं' बहूत उत्सुक है।एक बार वे संतोष नामक एक औरत से मिलती है।संतोष को वी. डी. का रोग है।वह कहती है उसे यह रोग अपने पति से लगा है।लेकिन उसके परिवार के लोग यह मानने को तैयार नहीं है।उसे देखने केलिए कोई नहीं आता है और उसके पति को

---

[67] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. **107**

घर के किसी सदस्य ने सूचित भी नहीं किया।इसलिए पति भी नहीं आता है।दुखी संतोष को देखने केलिए कभी-कभी उसकी सास आ जाती है और खुब लडकर जाती है।गालियॉं देकर घर लौटने से इनकार भी करती है।अस्पताल पहूँचने के पहले माताजी ने गहनें उतार ली है।इन सब से संतोष बहूत दुखी है।

'मैं' संतोष से पूछताछ करती है।बातचीत के बीच संतोष कहती है कि उनकी सास के मत में यह छुत की बीमारी संतोष अपनी मायके से लायी है।तब 'मैं' संतोष से पति के अलावा कभी किसी और के साथ शरीरिक संपर्क के बारे में पूछें तो वह कहती है वह पतिव्रता है और यह कटू सत्य भी बताती है "क्या पुरूष की हर गलती की सजा सदैव औरत को ही भोगनी होगी। यह परिवर्तन कब आयेगा जब औरत कमजोर नहीं रहेगी, सच बोलते-बोलते थक जाती है, रो- रोकर ऑंखों की ज्योति गंवा देती है तब भी कोई सुख-चैन नहीं है, उफ् ये जान लेवा प्रश्न।" [68] वह एक बार फिर प्रश्न करती है कि उसका कोई दोष नहीं है, फिर भी यह सजा क्या? 'मैं' निरूत्तर हो जाती है।कई हफ्ते बीत जाने पर छोटी बहन आकर कहती है कि संतोष का पति आकर उसको अपने साथ मुंबई ले जायेगा।

हॉं, ठीक है भारत में कभी-कभी पुरूष की गलती की सजा औरत को ही भोगनी पडती है।हिन्दुस्तानी औरत बरसों से चुपचाप इस अन्याय को झेलती है।लेकिन प्रस्तुत कहानी में संतोष सच बताने की कोशिश करती है ।ऊँची आवाज़ में इस गलत मनोभाव पर प्रश्न डालने का हिम्मत भी दिखाती है।बरसों से नारी मन को दबोचने वालों से विद्रोह कर नारी अस्मिता केलिए प्रयास भी करती है।

'एकान्तवास'

कई कारणों से नारी का, शादी के बाद, पर-पुरूष से संबंध होता है।पति द्वारा उपेक्षित होना, पति या परिवार की यातनायें, यौन असन्तुष्टता आदि इसके मूलकारण है।एक ही दफ्तर

---

[68] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉं ःसविता चड्ढा, पृ.**76**

में काम करने पर परपुरूष की ओर आकर्षित हो जाना, सहज है।दुर्बल नारियॉ ऐसी जाल में फंसकर जिन्दगी बरबाद करती हैं।

सविता चड्ढा द्वारा लिखित 'एकान्तवास' की नायिका रजनी दफ्तर में केवल सहायक है।पचास वर्ष की आयु में पहली बार वह अकेली हरिद्वार जा रही है।पति-बच्चे को घर छोड़कर हरिद्वार के स्वर्ग आश्रम में दस दिन अकेले घूमने की तीव्र इच्छा से रेल द्वारा जाती है।डिब्बे में वह रोशन की पत्नी को पहचानती है।वह पति के फूल प्रवाहने केलिए जाती है।उसे देखकर रजनी के मन में रोशन की याद आ रही है।रोशन दफ्तर में जनरल मैनेजर है और रजनी वहॉ की सहायक।रोशन दो सुन्दर बच्चियों के पिता है।अच्छी सुन्दर पत्नी होने पर भी रोशन रजनी की ओर आकर्षित हो जाता है।

रोशन बहूत आकर्षित करनेवाला व्यक्ति है।सुख में और दर्द में रोशन रजनी के दिमाग में रहता है।काम के समय और बिना काम के उनके कमरे में वह जाने लगती है।उससे सुख-दु:ख की बातें भी करती है।सात वर्ष इकट्ठे काम करने के बाद रोशन की ट्रांसफर दिल्ली से बाहर होती है।जाने से पहले वह, पत्नी को तलाक देकर रजनी से शादी करने केलिए तैयार होता है क्यों कि वह अपनी पत्नी से ज़्यादा उसे प्यार करता है।वह भी रोशन से बहूत प्यार करती है।आखिरी दिन मन चिल्लाता रहा, ऑखें भीतर ही भीतर बरसती रही, फिर भी वह झूठ ही कहकर अपना मान बचाता है। "मैं तुम से ज़्यादा प्यार अपने पति को, अपने बच्चों को करती हूँ और तुम्हें भी अपनी पत्नी से उतना ही प्रेम करना चाहिए।उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।"[69] रोशन चल जाता है और अकेले ऑफिस में काम नहीं कर सकने के कारण रजनी भी नौकरी छोड देती है ।इसके बारे में बाद में वह सोचती है कि "पर एक बात का संतोष मन में बना रहा मैं ने कुछ गलत नहीं किया।अगर मैं रोशन के साथ जो मैं कभी नहीं कर सकती थी।मैं जानती हूँ प्रेम तो अनजाने में हो जाता है पर शादी, तलाक या शरीरिक संबन्ध तो होशी

[69] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. **81**

हवास में किये जाते हैं और ऐसा करना मेरे मन ने कभी नहीं चाहा। पर उसी संतुष्टि के आधार पर सारा जीवन बीत गया।"[70]

डिब्बे में रजनी और रोशन की पत्नी बातें करती हैं और दोनों मिलकर रोशन के फूल प्रवाहने केलिए उतर जाती है। यदि रजनी, रोशन के साथ जाती तो दो परिवारों का विघटन हो जाता। ठीक समय पर, ठीक निर्णय लेने से वह नारी मन की शक्ति एवं अस्मिता को प्रकट करती है। रोशन से मन ही मन प्यार करती है, लेकिन सब कुछ बिगाड़ने केलिए वह तैयार नहीं है। नारी मन की जाग्रता को खुद ही जानती है और जिन्दगी द्वारा प्रकट भी करती है।

'भूख'

नर-नारी के बीच आकर्षण होना स्वाभाविक है। प्रेम में सब कुछ न्यौछावर करना भी संभव है। प्रेम का यह रूप समय और परिस्थिति की सीमा में नहीं बँधता। कभी-कभी यह प्रेम मोह और आसक्ती का रूप धारण करता है। ऐसे प्रेम के कारण नारी त्याग एवं बलिदान करके अपनी जिन्दगी अतीत की स्मृतियों में व्यतीत करती है। वह अपनी जिन्दगी में किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं जुड़ पाती है।

सविता चड्ढा द्वारा लिखित 'भूख' कहानी प्रेम केलिए त्याग एवं बलिदान करनेवाली नारी की कहानी है। दिल्ली में अनेक हत्यायें और दुर्घटनायें होने के कारण हत्यारों और उग्रवादियों को पकड़ने के प्रयास में पुलिस चौकन्नी हो जाते है। पुलिसवाले किसी को ढूँढकर घूमनेवाले मणका और मुनिया को लेकर थाने में जाते हैं। थानेदार के पूछने पर लड़कियां कहती हैं कि वे महाराष्ट्रा के कोटा नं इक्कहत्तर से आयी हैं। उनके कोटे पर पुलिस ने छापा मारा है, बाई को पकड़ लिया है और वे दोनों पिछली खिड़की से भाग आयी हैं। अब दिल्ली में मुकेश कुमार नामक एक आदमी की तलाश में है जो बहूत पहले से ही कोठे पर आता है और लड़कियों से कोई ज़रूरत होने पर उसके पास आने को कहता है। इसलिए वे दिल्ली की गलियों

---

[70] वही, पृ. **81**

में घूम रही है। लेकिन मुकेश कुमार, गली नं:11, लारेंस रोड़, चौराहा पता पर कोई सिमेंट की दूकान नहीं है। इसलिए थानेदार दोनों लड़कियों को अपने साथ लेकर घर जाता है। थानेदार की बेटी रश्मि के साथ उसके कमरे में दोनों लड़कियां सोती है। किसी बुरे सपने से मणका की नींद उचट जाती है। वह मुकेश से हुई सारी बातें याद करती है। मुकेश है पहला आदमी जो मणका के सब कुछ लूटता है। याद करते-करते मणका रोती है। तब मुनिया उठती है। वह भी मुकेश के बारे में सोचती है और रोती है। मणका को अपने वृद्ध माता-पिता और बहनों और मुनिया को कई बरस बाद अपने पति की याद आती है। दोनों उठकर घर से भाग जाती है। सुबह मणका और मुनिया के लापता होने से रश्मि और थानेदार चकित हो जाते है। उसी शाम रोहित अपने मात-पिता के साथ रश्मि को देखने आता है। रश्मि की शादी रोहित के साथ चलती है। एक दिन रश्मि और रोहित घर में आते हैं और रात खाने की मेज़ पर कई चचचिंपल निकली है। थानेदार बेटी को खुद ही देखभाल करने के बारे में कहें तो रश्मि विरोध करती है और स्त्री की तरह पुरूषों पर भी निगरानी करना चाहती है। बातचीत के बीच रोहित कहता है कि शुरू से आज तक पुरूष पर न तो कोई रोक लगा सका है और न ही कभी लगा सकेगा। यह सुनकर रश्मि की अस्मिता जाग उठती है। वह कहती है कि "क्या पवित्रता सिर्फ पुरूषों को ही पसन्द है, क्या हम औरतें नहीं चाहती कि हमारे पति सिर्फ एक ही हों, और..." [71] वह रूक जाती है क्योंकि पिता भी वहॉ उपस्थित है।

रोहित की अनुपस्थिति में रश्मि ननद को स्वीकारने केलिए रेलवे स्टेशन चल पड़ती है। गाड़ी एक -डेढ़ घण्टा लेट होने के कारण वह स्टेशन पर इधर-उधर घूमने लगती है। अचानक वह देखती है कि सामने वाली बेंच पर मुनिया सोती है। बातचीत के बीच रश्मि समझती है कि मरने केलिए मणका और मुनिया जमना में छलांग लगा ली। मणका की लाश भी नहीं मिली और मुनिया को लोगों ने बचाया है। अब वह पेट भरने केलिए भीख मांगती है और

[71] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. 50

तन भी बेचती है। घर से भागने से रश्मि मुनिया को कोसती है। पर आगे बातचीत करने से मुनिया रश्मि को रोकती है क्योंकि ससुरालवाले देखने पर अनर्थ हो जाएगा। मुनिया रश्मि को बेबी नाम से पुकारती है। रश्मि को यह अच्छा नहीं लगा। तब मुनिया अपने अनुभव के आधार पर कहती है "जानती हूँ पर तुम नहीं जानती, औरत हमेशा बेबी ही रहती है। बेबी मायने बच्चा नासमझ समझ गई।" [72] ड्राईवर रश्मि को घर जाने केलिए बुलाता है। गाड़ी के निकट रोहित उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। रोहित को, रश्मि का मुनिया से बातचीत करना पसन्द नहीं है। वह अपनी नापसन्द रश्मि से कहता है तो रश्मि का कहना है "रोहित यह सब कहना तुम्हारे लिए भी ठीक नहीं मुझे उस बेबस लाचार से क्यों बात नहीं करनी चाहिए बताओ तो / "[73]

रश्मि रोहित के साथ बेमन चलने लगी तो उसने देखा मुनिया उसके पास से निकलकर जा रही है। वह ज़ोर से पुकारने, पर भी मुनिया रूकी नहीं। रोहित भी, वह मुनिया से बातें करने से रोकता है। रश्मि और रोहित कार में बैठते है। मुनिया को लगा कि रोहित का छल लोगों से बताना है। पर इससे रश्मि को सारे दोष आता है। मुनिया ने देखा रोहित और रश्मि कार में बैठे हैं। वह दूर से उन्हें देखती रही। उसका मन बार-बार उसे धिक्कार रहा था 'जा पकड़ ले रोहित को और उससे पूछ "क्यों हमें धोखे में रखा बदमाश सिमेंट वाला व्यापारी बताकर झूठा-मूठा नाम गढ़कर मणका को बेवकूफ बनाता रहा और अब रश्मि जैसी अच्छी लड़की के साथ शादी, धोखा, धोखा, धोखा।" ऑखों के रास्ते अश्रृधारा बह रही थी लेकिन मुनिया रोहित के सामने भी नहीं गई। अब इसमें रश्मि का क्या दोष "उसे अपने पति की सच्चाई का पता चल गया तो हो सकता है वह कहीं भाग जाये या आत्महत्या ही कर ले।[74]"वह छिपकर रोहित के कार को

---

[72] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. **52**

[73] वही, पृ. **52**

[74] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. **52-53**

देख रही है।कार अत्यधिक ट्रैफिक के कारण घिरी हुई है।रोहित के चेहरे पर परेशानी है।यह देखकर मुनिया रोहित की ओर हाथ उठाकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगती है।रश्मि उसे देखकर उतरने का प्रयास करें तो रोहित पागल जैसा झूठा आरोपण देकर रश्मि को डॉटता है।लेकिन रश्मि जानती है कि वह पागल नहीं है।

प्रस्तुत कहानी की दो नारियां रश्मि और मुनिया नारी अस्मिता को पहचानती हैं।मुनिया, परित्यक्ता है साथ ही प्रेमी द्वारा दी गयी छल भी भोगती है।रश्मि, शोषित नारियों का सहायक है।उनके लिए आवाज़ उठाती है।अनजान खुद शोषण की शिकार बन जाती है।मुनिया, धोखे में डालनेवाला पुरूष को बदला देना चाहती है।पर यह बदला रश्मि की जिन्दगी को नष्ट करेगा।इसलिए वह पागल का वेष धारण करती है।

'यादें'

यौवन काल में पुरूष मस्त भरी जिन्दगी बिताते है।उस काल में तंन्दुरूस्ती, अर्थ या सुख-सुविधाओं की प्राय: कोई कमी नहीं है।तब वह ईश्वर और परिवारवालों को भूलकर जीवन बिताते है।पत्नी या बच्चों को यातनायें देते हैं।लेकिन जब वह मनुष्य बीमार हो जाते हैं या तंदुरूस्ती खराब हो जाती है तब उन्हें परिवारवालों की मुख्यत: पत्नी की सहायता की ज़रूरत होती है।

'यादें' सविता चड्ढा की नारी अस्मिता की एक सशक्त कहानी है।कमला अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है।लेकिन मां-बाप उसके आग्रह की ज़रा भी परवाह न कर योगेश के साथ शादी तय करते हैं।शादी के पहले सोचती है कि वह अपने पति की सेवा करेगी क्यों कि पति परमेश्वर होता है।योगेश तो रंगीन मिजाज के है।कमला बहूत मना करने पर भी वह उसकी कोई बात नहीं मानता है।अक्सर देर से घर आता है और आकर अपनी बकवास पत्नी को सुनाता है।योगेश पत्नी को केवल गंवार ही समझता है।वह उसे भीतर से तोड़ने केलिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता है।सब समझौता एकतरफा ही हुआ करते है।एकतरफा समझौता कभी कामयाब नहीं होता है।कमला धीर- धीरे टूटने लगती है।एक दिन योगेश बाहर जाने से पहले

पत्नी के पास आकर उस शाम को किसी को घर लाने की धमकी देता है। यदि घर रहना ठीक समझे तो रहना, नहीं तो कहीं चले जाने को कहकर एक बार भी सात बजे की याद करके वह बाहर चले जाते है। यह सुनकर उसे लगा कि किसी पहाड़ के सिरे से खड्ड से उसे जबरदस्ती धकेला जा रहा है। उसकी जगह कोई ओर होती तो शाय्द उसी दिन मर गई होती। लेकिन कमला ऐसे नहीं कर सका क्योंकि वह आत्महत्या को पाप समझती है। वह वहँ रहने का तय करती है। आठ बजे के बाद योगेश घर में प्रवेश करता है। दोस्तों भी है। उमा सुन्दर है और कालेज में उसकी खासे लड़कों से दोस्ती करने में प्रवीण है। कमला के सामने योगेश और उमा सुन्दर है और कालेज में उसकी खासे लडकों से दोस्ती करने में है। कमला के सामने योगेश और उमा अवैध संबन्ध में भाग लेते है। अंत में योगेश कमला और उमा को आपस में परिचित कराते है। कमला दु:खी हो जाती है। अगर वह पढ़ी लिखी होती या आत्मनिर्भर होती तो शायद उसे ऐसी हालत नहीं होती। उसने उस घर हो छोड दिया और सोच लिया है कि भविष्य में कभी किसी से कोई समझौता नहीं करेगी। "एक विषभरी मुस्कान लिए मैं ने वह घर छोड़ दिया और सोच लिया था कि भविष्य में कभी किसी से कोई समझौता नहीं करूँगी।" [75] रात वह अपने घर के बाहर ही बिताती है । सुबह होने पर वह शहर छोड देती है। वहां से निकलकर वह एक ट्रैवल एजेंसी में नौकरी करती है और नौकरी के साथ पढ़ाई भी शुरू करती है। उसकी एम्पलायर सभी समर्थन और निवास स्थान भी देता है। आज कमला एक वकील है। पति के घर से निकलकर बीस साल बिताती है। योगेश बीमार हो जाता है। अब उसे पत्नी की याद आती है। योगेश को उसकी सख्त ज़रूरत है। उमा की बहन शीला आज उसके घर में आकर पति के पास चले जाने के लिए कहती है क्योंकि उमा भी अब नहीं है। लेकिन कमला की चोट अब भी सूखा नहीं है। इसलिए वह कोध से भरकर सोचती है कि 'लेकिन मैं किसी की ज़रूरत का साधन क्यों बनूँ ? उस घिसी-पिटी कहानी को फिर क्यों दोहराऊँ? क्यों मान लूँ कि औरत क्षमा की

[75] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. 8

मूर्ति होती है? नहीं, नहीं यह कभी नहीं हो सकता।मैने साफ इनकार कर दिया।'[76]निराश होकर शीला लौट रही है।

हिन्दुस्तानी पत्नियां पति को भगवान के रूप में देखती हैं, आदर करती हैं।पति के सभी कुकर्मो को चुपचाप सहन करती हैं।लेकिन आधुनिक नारियों को अपनी अस्मिता एवं स्वतंत्रता का बहूत विचार है।वह समझती है कि परिस्थिति का वह अकेली रहकर भी मुकाबला कर सकती है।और परिस्थितियों का हिम्मत के साथ सामना करती है।

'बिब्बा'

कभी-कभी पुरूष लोग अपनी इच्छा की पूर्ति केलिए स्त्रीयों को इस्तेमाल करते हैं।स्त्री का चाह या अनचाह, मन या बेमन इसके बारे में वह नहीं सोचता है।सविता चड्ढा द्वारा लिखित 'बिब्बो' नामक कहानी में बिब्बो झाड़ूकार है।पूरी गली साफ करना उसका काम है।एक दिन सबेरे अपने काम केलिए बाबूजी के यहां आती है।बाबूजी की पत्नी अब मायके में है।शादी के बरसों बाद वह मां बननेवाली है।बिब्बो को देखकर बाबूजी स्वयं भूलता है और बलात्कार भी करता है।बिब्बो को लगता है कि एक बदबू उसके शरीर के भीतर पहूँच चुकी है।उस दिन रोती कलपती मन ही मन कोसती सीधे बिब्बो घर चली जाती है।दो महीनों के बाद फिर वह लौटती है।बिब्बो बहूत कमज़ोर लग रही है।उसका मन विद्रोह से भरा है।बातचीत के बीच बिब्बो कहती है कि "बाबूजी, तेरा मैला मेरे भीतर पलेगा।मेरी सारी पुश्तें मैल उठाकर मर गई पर ऐसा मैला ईश्वर न करे किसी को ढ़ोना पड़े, बोल कहाँ ले जाकर फेंकू तेरे मैले को।"[77] बिब्बो अपने पीट पर हाथ जमाते हुए कहती है।यह सुनकर बाबूजी अपन कमरे में जाकर अलमारी में से कुछ रूपए निकालकर बिब्बो को देता है।क्रोध और घृणा भरकर बिब्बो बाबूजी

---

[76] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियाँ ःसविता चड़ढा, पृ. 8

[77] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियाँ ःसविता चड़ढा, पृ. 22

से ये रूपए स्वीकारने से इनकार करती है । "अरे बाबू, ज़रा सुन" बिब्बो ने पुकारा, "ये अपने रूपये लेता जा, तुझे तो बार-बार पेसाब आएगा, जीरू मना कर दे तो धन्धे वाली के पास चला जाईयो ये रूपये लेकर और सुन तेरा मैल में फेंकूंजी नहीं, इसका क्या होगा ये तू देख देखकर जलता रहियों"[78] कहकर बिब्बो तेजी से चली जाती है।

बाबूजी की पत्नी को लड़का पैदा हुआ और बिब्बो को लड़की।एक दिन अपने बेटे को छत पर चहलकदमी करता रहे है।तब बिब्बो बच्ची को लेकर वहां आती है और बाबूजी के बेटे की ओर इशारा करते हुए बच्ची को ये तेरा लाजा भैया कहकर परिचय करवाती है।बाबूजी से कहती है कि "हॉ बाबू ये...ऐसी सुन्दर बच्ची तो हमारे पूरे खानदान में नहीं हुई, तेरा खुन है न, बड़ी होकर बड़ी जवान और सुन्दर बनेगी, पर सोचती हूँ बाबू इसका जवान होना खतरनाक है, तेरे जैसा कोई इसे भी बिगाड़ गया है..।[79]" बिब्बो ने धीरे से कहा और बाहर चलने लगी।काम पूरे करने के बाद वह आखिर मिलने का वादा या धमकी बीबीजी को देते है।कई बरस बीत जाते है।बाबूजी का बेटा जवान हो जाता है।और उसकी पत्नी का देहान्त भी हो गया है।अब बाबूजी को सख्त बीमार है।चारपाई से हिलना भी मुश्किल है।बेटा अपने में ही मस्त रहता है।उसे बाप की कोई चिन्ता नहीं है।कहॉ जाता, क्या करता कुछ पता नहीं।एक दिन बिब्बो की बेटी माताजी की इलाज के लिए रूपये मांगकर बाबूजी के यहॉ आती है।बाबूजी से मिलती है और रूपए लेकर लौटती है।तब बाबूजी का बेटा गेट के रास्ते में उसे बलात्कार करने की कोशिश करता है।बेटी ज़ोर से चीखती है।चीख सुनकर बाबूजी वहॉ दौड़कर आता है और उस 'अनर्थ' को माप्ता है।पुलिस बाप-बेटे दोनों को हिरासत में ले लेता है।बाबूजी अपन जूर्म कुबूल कर लेता है।अंत में वह उम्र-कैद हो जाता है।जेल से आने के बाद वह एक बार बिब्बो को देखता है।तब वह बिब्बो से, यदि वह पेट से गिरवा देती तो ये सब न होना कहता है।तब बिब्बो सधैर्य कहती है कि "और अगर तूने उस दिन मुझ पर हाथ न धरा होता तो, तो

---

[78]नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. **22-23**

[79]नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. **23**

भी यह सब न होता... तेरा मैल साफ नहीं हो सकता, बेटी को मारकर तूने क्या सब टीक कर दिया? अरे तू जनम- जनम तक नरक भोगेगा।"[80] बाबूजी कुछ कहने से पहले बिब्बो चली जाती है।कुछ देर बाद ख़बर लग गई कि बाबूजी जेल में चल बसे।बेटे का अता-पता नहीं है।इसलिए मेहल्लेवाले बाबूजी का अंतिम संस्कार करवाते है।फूल चुनने के तीसरे दिन में बिब्बो सुबह सब से पहले श्मशान पहूँचती है और बाबूजी का कंगाल देखने केलिए हाथ मार-मारकर ढूँढती है।पर वहॉ केवल राख ही राख है।वह सोचती है कि "यहॉ जो कुछ भी है उसे मैं ऐसी जगह दबा दूँगी कि अगले जनम में इसे मरदानगी न मिले।"[81] कुछ न मिलने के कारण बिब्बो का प्रतिशोध अथूरा रह जाता है।पर जीवित रहने पर ज्यादा से ज्यादा प्रतिशोध वह बाबूजी को देती है।वह अनपढ़ है और आधुनिक जीवन की रीति-रिवाजों से परिचित नहीं है।फिर भी नारी अस्मिता के बारे में वह सचेत है।इसलिए वह अपनी तरीके से जिन्दगी नष्ट करनेवाले पुरूष को बदला देती है।अवैद्य संबन्ध से जन्मी बच्ची का पालन-पोषण करने केलिए पुरूष के सामने गिड़गिडाती भी नहीं है।

'एक और एक'

भारतीय मान्यता के अनुसार पति की मृत्यु के बाद, नारी को कोई स्वतंत्रता नहीं मिलती है।उसको सफेद वस्त्र पहनकर घर के चार दीवारों के भीतर रहना पड़ता है।रंग-बिरंगे वस्त्र और आभूषण उसके लिए निषिद्ध है।किसी मंगल कर्म में उसकी उपस्थिति अशुभ मानी जाती है।उसे पति की स्मृतियों के सहारे जीवन यापन करना पड़ता है।ऊँचे आवाज़ में बातें करना या खिाल खिलाकर हॅसना उसके लिए वर्जित है।

शशिप्रभा शास्त्री कृत 'एक और एक' कहानी में दो विधवायें होती हैं।नायिका रमोला केशव की पत्नी है।केशव फौज में काम करता है।रमोला को अपने पति पर गर्व है क्यों कि वह देश की सेवा में निरत है और वह उसकी पत्नी है।विवाह के दो महीने बाद केशव की नियुक्ति

---

[80] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. 27

[81] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ःसविता चड़ढा, पृ. 27

उत्तरकाशी में हो जाती है। वहॉ फैमिली स्टेशन न होने के कारण रमोला को केशव के घर में सास के पास ही रहना पड़ता है। घर में सास के अलावा ददिया सास भी है, जो विधवा है। ददिया किसी से कोई उम्मीद नहीं लगाती, पर पोतबहू ने ददिया सास को संभाल लिया है। सास उसे जब तब टोकती तो उसकी फब्तियों को वह हॅसी में उड़ा देती है। वह सुबह राम के अलावा भी ददिया सास के पास जा-जाकर बैठती और उनका मन बहलाती रहती है। हैड इंजरी के कारण केशव की मृत्यु हो जाती है। लाश, पहाड़ी इलाके से दो-चार पहाड़ी मिलकर नीचे उतर लेती है। सास, ददिया सास, रिश्तेदार, संबन्धी, पास पडोसी, बहू सब रोते हैं। तेरहवीं के दिन में रिश्तेदार औरतें बातों के बीच कहती हैं कि बुढिया और विधवा ददिया की सेवा करने से वह भी विधवा बन जाती है। यह सुनकर रमोला सोचती है कि क्या बड़े-बूढ़ों की सेवा करना पाप होता है। एक पतिविहीन स्त्री की सेवा करने से क्या प्रतिदान में वैध्व्य ही मिलता है। किसी ने पूछा कि उसकी क्या ज़रूरत है बुढिया ददिया की कुठरिया में घुसकर? यह सुनकर कांप उठती है रमोला। " शायद हॉ, शायद नहीं । पगली हूँ मैं, यह क्या सोचने लगी हूँ, कौन कहता है कि वृद्धजन का फूटा भाग्य से उस प्रकार जुड़ जाता है। जुड़ सकता है?अगर यही सच हो तो बूढ़ों की सेवा कौन करोगा, उनके भी तो दिल होता है, उनकी भी ज़रूरतें होती हैं, वे भी हॅसना बोलना चाहते हैं, वे भी..."[82]

रमोला के पहूँचने के पहले बुढ़िया ददिया अपनी कुठरिया में ही ठहरती है। सबके सोते-सोते ही अपनी ज़रूरतें पूरी कर लेती है। फूटी थालिया में कोई चावल डाल जाता, कभी दाल, कभी सूखी रोटियॉ भरकर खाती है। सेवा करने से पोतबहू विधवा हो जाने पर वह दुखी हो जाती है। वह वहॉ से दूर जाने की कोशिश करती है। यह देखकर रमोला दौड़कर उन्हें समेटकर ले आती है और कहती है कि "नहीं ददिया, यह सब झूठ है, गलत है, आपने कैसे समझ लिया कि मैं भी वही सब कुछ सोचती हूँ, वैसा ही मानती हूँ? नहीं ददिया नहीं, आप तो मेरी दादीजी

[82] चर्चित महिला कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियां ःसंपादक मीना अग्रवाल, पृ. 126

है, मैं आपकी बेटी, बहू, बच्ची, हम दोनों जिन्दा रहेंगे, इन लोगों के कहने से नहीं मरेंगे न ददिया? मैं आपकी इस कोठरी में, नहीं-नहीं ददिया, आप मेरे कमरे में मेरे साथ रहूँगी।"[83]

विधवा होने पर भी रमोला अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठाती है।ददिया सास की तरह वह भी विधवा बन जाती है।वह परिस्थितियों से संघर्ष करती है, पर हताश नहीं होती है।इस प्रकार वह अपनी अस्मिता को बनाए रखती है।

'जॉच अभी जारी है

स्वतंत्रता के पहले नारी का व्यक्तित्व केवल सेक्स, प्रेम और विवाह के इद-गिर्द घूमता था।लेकिन आज नारी में आर्थिक स्वावलंबन की भावना का जन्म हुआ है।इसके परिणाम स्वरूप नारी के जीवन में काफी बदलाव आया है।वह आत्मनिर्भर होकर सामाजिक क्षेत्रों में कार्य कर रही है।इससे पुरूष के अहं को चोट पहूँचती है।

'जॉच अभी जारी है' ममता कालिया कृत एक सशक्त कहानी है।नायिका अपर्णा को एक सम्मानित शब्दीयकृत बैंक में नौकरी मिलती है।इसके छः महीनें पहले अपणो की नियुक्ति विश्वकर्मा डिग्री कालेज में हो चुकी है।बैंक में नौकरी मिलने पर उसने लेक्चररशिप छोड़ दी है।उसे लगा कि शक्ति, सच्चाई और नैतिकता जैसे मूल्यों का एहसान जितना बैंक में हो सकता है, उतना अन्य किसी नौकरी में नहीं।काम में मेहनत और एकाग्रता की ज़रूत है।दोनों गुण अपर्णा में है।

राष्ट्रीयकृत बैंक शहर के हृदय में स्थित है।बैंक के शाखा प्रबन्धक एक नाटे-मोटे चश्मेवाले मिस्टर खन्ना है।दफ्तर की अन्य महिलाएँ चेतावनी देती हैं कि शादीशुदा मर्द बड़े खतरनाक होते हैं।वे पहले आतुर बनेगे, फिर कातर, एकदम पन्नालाल हैं सबके-सब।अपर्णा बुद्धु नहीं है।मां की बीमारी और पिता का प्रवास रक्षाकवच बनाकर बैंक के हर छोड़े बड़े अधिकारी से अपने को सुरक्षित बचाती है।लेकिन एक शाम वह चपेट में आ ही जाती है।हम उम्र सहयोगी सिन्हा के बेटे का जन्मदिन दफ्तर में मनाता है।सिन्हा अपर्णा को भी आमंत्रित

[83]चर्चित महिला कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियां ःसंपादक मीना अग्रवाल, पृ. **127**

करता है।पार्टी के बीच, जब व्हिस्की की बॉटल खोलने पर अपर्णा उठ जाती है।सिन्हा उसे रोकने का प्रयास करता है।अपर्णा दृढ-निश्चय लेकर वहॉ से उतरती है और घर पहूँचती है।साल बीतने पर वह भी एल. टी. सी.प्राप्त करनेवालों में हकदार हो जाती है।वह मां की मर्जी के अनुसार जगन्नाथपुरी जाना चाहती है।वह दफ्तर से एड्वांस लेती है।पर यात्रा की सुबह पिताजी को अचानक घबराहट और सीने में दर्द होता है।वे तीनों स्टेशन के बजाय अस्पताल पहूँच जाते हैं।अपर्णा की दस दिन की छुट्टी यह बीमारी निकल लेती है।इस बीच अपर्णा ने दफ्तर फोन कर अपने अधिकारी को उत्तला दे दी थी कि वह छुट्टी में घूमने नहीं जा सकी है।उसने सोचा वह छुट्टी के बाद जब दफ्तर जाएगी, एड़वांस वापस कर देगी।दस दिन के बाद ऑफिस पहूँचती है तो, बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय से एक रिजस्टर्ड लिफाफा उसे मिलती है।एल.टी.सी.का झूठा बिल पेश कर बैंक के धोखाघडी और धन के दुरूपयोग करने के कारण, उसकी अपना स्पष्टीकरण तत्काल देना है।अन्यथा अनुशासनात्मक कार्रवाई करने केलिए वे बाध्य होंगे।अपर्णा खन्ना के केबिन में जाकर फोन पर इसकी सूचना पहले देने के बारे में कहती है।लेकिन खन्ना, सुनने केलिए तैयार नहीं है।सिन्हा भी खन्ना के पक्ष में है। "अपर्णा अभी भी डरी नहीं।उसे लगा, सच्चाई उसके साथ है, उसकी नीयत में कोई खराबी नहीं है, फिर वह क्यों घबराए।"[84]

केवल माता-पिता ही उसके पक्ष में है।अपर्णा क्षेत्रीय कार्यालय, कानपूर में जाकर कनिष्ठ अधिकारी से मिलती है।बातों के बीच अन्याय के बारे में कहती है।लेकिन वह भी अपर्णा के विरूद्ध है।जांच जारी है और अपर्णा लखनऊ और कानपुर के बीच प्रतिदिन यात्रा करती है।क्षेत्रयि कार्यालय के एक अधिकारी प्रीतम सिंह, यूनियन के एक प्रतिनिधि समीर सक्सेना और एक अन्य अधिकारी के सामने बयान देती है।पर वे भी गलतफहमी में है।अब अपर्णा के चेहरे पर न पहले का नूर था, न नरमी, वह एक ऐसे कुचक्र में पड़ गई है कि फाइल दिखाने से न तो वह मना कर सकती है न विद्रोह।किसी भी अधिकारी उसे सुनने केलिए तैयार

[84] नौकरीपेशा नारी कहानी के आईने में : संपादक पुष्पपाल सिंह, पृ. 95

नहीं है। अपर्णा के मन में विद्रोह की भावना जाग उठती है। लेकिन वह विवश है। जिन दिनों जांच की कार्रवाई स्थगित रहती, अपर्णा के मन में बेहद आक्रोश इकट्ठा होता रहता। वह सोचती, उस खन्ना के केबिन में घुसकर एक दिन उसे तावड़-तोड़ मारना है। सिन्हा के स्कूटर के सामने उसे पत्थर रख देना है। एक दिन कुर्सी पर खड़े होकर वह चीख- चीककर सबको बताएगी कि "इस राष्ट्रीय कृत बैंक में कैसे घपले और सौदेबाजी होती है। झूठे बिल के जरिए हर आदमी हज़ारों रूपए डकारता है, चाहे वे मेडिकल बिल हो या यात्रा बिल या स्टेशनरी बिल। इस सबकी कोई शिकायत नहीं होती। इस सब पर जांच नहीं बैठाई। जांच उसके अठारह सौ के बिल पर बैठाई गई है जिस पर अब तक अठारह हजार रूपए खचे हो चुके होगे।"[85] त्यागपत्र देने से नौकरी मिलना मुश्किल है। इसके अलावा जांच की खबर सारे शहर में फैलती है। इसलिए दूर के किसी दफ्तर में काम करने केलिए वह तैयार हो जाती है।

क्रूर अन्याय के विरूद्ध अपर्णा विद्रोह करना चाहती है। अंत तक उसकी अस्मिता जागृत है। पर सशक्त ब्यूरोकेसी के सामने खुला विद्रोह न करती है, केवल मन ही मन विद्रोह करती है। पुरूष अधिकारियों के सामने पराजित होने पर भी वह अपनी अस्मिता को नहीं छोड़ती है।

'शाम के वक्त'

स्वतंत्रता के पहले नारी पुरूष को मुँह दिखाने केलिए भी तैयार नहीं थीं। अकेले रहनेवाली स्त्रियों को समाज संशय भरी निगाहों से देखता था। अकेले रहकर वह जिन्दगी में तनाव अनुभव करती थी। पर आज की कई नारियॉ अकेले रहना पसंद करती हैं। वह पुरूष का सहाय नहीं चाहती है।

'शाम के वक्त' विजय चौहान द्वारा कृत नारी अस्मिता की एक सशक्त कहानी है। प्रस्तुत कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी है। 'मैं' बस अड्डे पर बस का इन्तज़ार करता है। बस आने में देर लगती है तो सहयात्रियों के जीवन के बारे में सोच रहा है। जापानी

---

[85]नौकरीपेशा नारी कहानी के आईने में : संपादक पुष्पपाल सिंह, पृ. 101

लड़की, मारिया सब के बारे में कल्पित घटनायें जोड़ देती है। अपार्टमेंट पहूँचा तो अंधेरा हो चुका है। उसके अपार्टमेंट के ठीक सामने के अपार्टमेंट में लीसा अपने कुत्ते के साथ टहल रही है। वह एक जासूसी उपन्यास पढ़ रही है। बातचीत के बीच 'मैं' कह रहा है कि उसे लोगों के विचार पढ़ लेना आता है। बाद म, शराब पीने के बाद, वह टेलीफोन पर लीसा को अपने अपार्ट मेंट में आमंत्रित करता है। लीसा उसके दरवाजे पर दस्तक देती है तो वह दरवाजा खोलकर उसे बांहों में लेने का वादा देता है। तब लीसा कहती है कि "तुम बहूत अकेले हो। इस समय और कुछ नहीं, तुम मेरे शरीर का संभोग करना चाहते हो। मुझे तुमसे सहानुभूति है, लेकिन मैं तुम्हारे लिए गिनी-पिग नहीं बनना चाहती। मैं प्यार चाहती हूँ और तुम अपने शरीर के तनाव से छुटकारा।" [86] सूरज की किरणों में गुलाब की पंखुडियां खोलकर मुस्कुराता है वह किसी से कुछ नहीं मांगता। उस फूल के समान, मैं, लीसा से संबन्ध बनाना चाहता है। तब लीसा कहती है कि, ऐसे प्यार बिना संबन्ध ठीक नहीं है और वह इसके लिए तैयार भी नहीं है। "आज तुम मुझ से कुछ मांग रहे हो। बिना प्यार के यह संबन्ध ठीक नहीं।" [87]

पुरूष के सामने खड़े होकर मन की बातें निड़रतापूर्वक ही प्रकट करने केलिए आज की नारियॉ तैयार हो जाती हैं। अस्मिता की रक्षा करते हुए पुरूषों से संपर्क स्थापित करने केलिए नारियॉ तैयार हैं। नारी के सोच-विचार एवं रहन-सहन में आए बड़े परिवर्तन का यह सूचक है।

'अन्तिम कारावास'

सामान्यत: समाज नारी को केवल अबला और चपला समझता है। पुरूष शक्तिशाली है और नारी पुरूष की आश्रिता है। पर आज इस अवधारणा में बदलाव आ रहा है। स्त्री भी पुरूष के समान, शक्तिशाली है। यह ठीक है, सभी पुरूषों के विजय के पीछे प्राय: स्त्री की प्रेरणा, बुद्धि आदि होती है।

---

[86] एकान्तवास ःविजय चौहान, पृ. **53**

[87] वही, पृ. **54**

'अन्तिम कारावास' शीर्षक विजय चौहान की कहानी में नायिका सुशीला पति रामनाथ के मन को शक्ति प्रदान करती है। रामनाथ लेखक है और कहानीकार भी है। वह रेडियो स्टेशन में काम करता है। एक बार हिन्दी की एक पत्रिका में रामनाथ का एक लेख छपा है। यह देककर दफ्तर में उसके निरीक्षक उसे अपने कमरे में बुलाकर चेतावनी देता है कि वह सरकारी रेडियो स्टेशन का छद्म क्रान्ती का अड्डा बनाता है और इस अपराध केलिए उसे नौकरी से निकाल देगा। यह सुनकर भाषा ज्ञाान पर और उससे अधिक जीवन के दृष्टिकोण पर गर्व करनेवाला रामनाथ निराश हो जाता है। यह घटना सुनकर पत्नी सुशीला रामनाथ का चेहरा अपने हथेलियों में लेकर, उसके मन को शक्ति प्रदान करते हुए कहती है कि "एक मूढ़ व्यक्ति की बात का इतना बुरा न मानो। फिर तुमने भी तो उसे टके-सा जवाब दे फिर तुम मेरे स्वामी हो, मेरे देवता हो। केवल इस कारण मैं तुम्हारी कहानियों की प्रशंसक नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम बहूत ही अच्छे लेखक हो। एक सरकारी अफसर के हथकडे तुम्हारे अन्तरतम की कियात्मक आग नहीं बुझा सकते।"[88] रामनाथ केवल साहित्य रचना करना चाहता है- थियेटर में काम करना चाहता है। रेडियो का काम उसे नीरस प्रतीत होने लगता है। तब सुशीला कहती है "मैं ने तो तुम से कई बार कहा है कि तुम घर बैठकर लिखो। स्कूल में पढाने की नौकरी मुझे कभी भी मिल सकती है।"[89] आगे कहानी की चाल दूसरी दिशा की ओर चलती है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका सुशीला अस्मिता पहचानकर पति के आत्मविश्वास को बढ़ाने केलिए श्रम करती है। निराश पति के मन में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास जगाने केलिए वह प्रयास करती है। पति के विजय और पराजय में वह भागीदार बन जाती है। खुद नौकरी करके परिवार को संभालने का वादा भी करती है।

'तीन मित्र और चमेलीबाई '

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद नारी सामाजिक क्षेत्र में काफी बाहर आयी है। इससे उसका अनेक पुरूषों के साथ संपर्क बढ़ा है। विवाहपूर्व, कभी-कभी विवाह के बाद भी उसका आकर्षण

---

[88] एकान्तवास ः विजय चौहान, पृ. 79

[89] वही, पृ. 79

अन्य पुरूषों की ओर बढ़ जाता है। प्राचीन काल में समाज इसको बडा अपराध मानता था। पर आज समाज की मन:स्थिति में काफी बदलाव आय है। फलतः विवाह की पवित्रता भी आज नष्ट हो रही है।

'तीन मित्र और चमेलीबाई' नामक विजय चौहान की कहानी में अस्मिता बोध से युक्त तीन नारियों को देख सकते है। प्रस्तुत कहानी आत्मकथात्मक शैली में ल्खी गयी है। मैं, ड़ेविड़ और पीटर मित्र हैं। महीने में एकबार, एक निश्चित दिन तीनों मित्र एक शाम केलिए मिलते हैं। डेविड़ का जन्म आफ्रिका के अंगोला में हुआ है। हाईस्कूल ख्त्म करने के बाद, कालेज जाने से पहले, वियतनाम में होनेवाला अनैतिक युद्ध के ख्लाफ वह आवाज़ उठता है। पुलिस गिरफ्तार करके डेविड और अन्य लोगों को शहर के बाहर तीस मील की दूरी पर छोड़ देते हैं। सब गाने गाते-गाते वापस लौटते हैं। जिस लडकी का हाथ थामकर डेविड़ गाने गा रहा है उसका नाम किम है। मैं जब डेविड से मिलता है, तब उसका और किम का संबन्ध मित्रता से कुछ कदम आगे बढ़ चुका है। अपने संबन्धों के विषय में कई महीनों बौद्धिक तर्क करने के बाद डेविड ने किम के सामने विवाह का प्रस्ताव रख्ा है। किम ने कुछ महीनों का अवकाश मांगा है क्योंकि भविष्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से देख्कर वह उत्तर देना चाहती है। "विवाह जैसे पवित्र और स्थायी बन्धन में बंधने के पहले, इसके बारे में पूरी तरह सोचने केलिए, मैं कुछ समय चाहती हूँ। और जिस दौरान मैं विचार कर रही हूँगी, मैं तुम से बिल्कुल अलग रहना चाहती हूँ।"[90] कुछ दिनों के बाद, जब वह किम के पास जाता है तो वह आहिस्ता से दरवाज़ा ख्रोलती है। तब डेविड देख्ता है कि किम किसी अन्य पुरूष के साथ सोने लगी है। यह दृश्य देख्कर डेविड़ को बहूत बडा धक्का लगता है और मानव संबन्धों के स्थायित्व पर उसका विश्वास भी टूट जाता है। अब वह विर्जिनिया में स्थित एक मठ में भरती होकर ब्रह्मचारी का जीवन व्यतीत कर रहा है और ब्रदर डेविड़ के नाम से जाना जाता है।

[90] एकान्तवास ःविजय चौहान, पृ. **96**

दूसरा मित्र पीटर का निवास स्थान न्यूयार्क राज्य के उत्तरी शहर बफलों में है।वह बुद्धिवादी किस्म का आदमी है।वह कुमारी सिन्थिया जोन्स से प्रेम करता है।शहर की प्रमुख दूकान 'जान्सन एण्ड जान्सन' के मालिक विलियम जान्सन भी सिन्थिया को चाहता है और उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव भी रखता है।पर सिन्थिया पीटर को स्वीकार करती है।बीमारी या मृत्यु में एक-दूसरे से जुदा नहीं होंगे, ऐसा शपथ लेने पर भी दस वर्ष बाद पत्नी तलाक चाहती है।वह कहती है कि "यातना के दस वर्ष, हम दोनों को बरबाद कर रहे हैं।इसके पहले कि हम खत्म हो जाये, मैं इस संबन्ध का अंत कर देना चाहती हूँ।" [91] वह वकील नोटीस देकर चली जाती है।निराशा के कारण, पीटर एक बार ढेर-सी नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या करने का प्रयत्न करता है।अब पीटर वाशिंगटन के ओबलेट कालेज में शिक्षा प्राप्त कर, कैथलिक पादरी बन जाता है।और उसे फादर पीटर कहा जाता है।

'मैं' अपूर्व सुन्दरी जैसमिन से प्रेम करता है।'मैं', उन्हें चमेलीबाई कहने लगता है।एक शाम मैं और जैसमिन के बीच काफी देर तक बातचीत होती है।तब उसे पता चलता है कि उसके पिता अमरीकी है और मां जापानी है।वह वेश्या है।एक बार 'मैं' उसके पास आता है।आत्मविश्वास के लिए 'मैं' स्त्री-शरीर का संभोग करना बहूत ज़रूरी कार्य मानता है।बतचीत के बीच जैसमिन कहती है "प्यार से सब कुछ टूटता है।मैं हिंसा का पात्र हूँ।हिंसा का पात्र न टूटता है, और न ही भस्म होता है।वह 'मज़बूत' होता जाता है।और मेरा जो धरातल है, वहां के मूल्य भिन्न हैं।जो लोग मेरे पास आते हैं, उनकी स्थिति केलिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।मैं न तो उनकी मां हूँ और न ही उनकी पत्नी!मैं ने उनके संस्कार नहीं बनाये।इसलिए मुझ में दोष की भावना है ही नहीं।मैं निश्चय झरने के समान हूँ।मुझे कोई भी दूषित नहीं कर सकता।"[92] दूसरे दिन सुबह 'मैं' उनके बिस्तर से जागता है।

किम विवाह को पवित्र मानकर भी स्वेच्छा से अन्य पुरूष के साथ सोने केलिए धैर्यवान हो जाती है।सिन्थिया, आधुनिक विचारोंवाली है।परंपरागत स्त्री के समान वह यातनायें सहने

---

[91] एकान्तवास ःविजय चौहान, पृ. **99**

[92] एकान्तवास ःविजय चौहान, पृ. **103**

केलिए तैयार नहीं है। अस्मिता की रक्षा केलिए वह तलाक चाहती है। जैसमिन वेश्या है। वेश्या का पुरूषों से कोई स्थायी सम्बन्ध नहीं है। अन्य लोगों के पारिवारिक विघटनों पर उनका कोई उत्तरदायित्व भी नहीं है और इस तथ्य को वह स्वयं व्यक्त करती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी की नारियां विभिन्न प्रकार से अपनी अस्मिता व्यक्त करती हैं।

'तितली के पंख'

जिन्दगी और कल्पना के बीच सामान्यत: संबन्ध नहीं होता है। व्यक्ति चाहे पुरूष हो या नारी, एक विशेष उम्र में कल्पना लोक में विचरण करते हैं। पुरूष से अधिक स्त्री ही कल्पना करती है। कभी-कभी ज्यादा कल्पना करने के कारण जिन्दगी बरबाद करती हैं।

'तितली के पंख' रमेश बक्षी द्वारा कृत कहानी है। कहानी का नायक 'मैं' आफिस में काम करता है। गेलरी में बैठकर कोई अच्छी-कल्पना करना पसंद करता है। आस्मान की ओर देखते-देखते उसे लगता है कि बादल का एक टुकड़ा तितली पंखी हो रहा है।

उसको तीन बच्चियां होती हैं। गोरी, भूरी और चॉदनी। उसे लगा कि तीनों बड़ी गन्दी है, नहाने और मुँह धोने का एकाध माह से निराहार उपवास है। वह फिर भी तितली और पंख के बारे में सोच रहा है। इतने में पत्नी आकर भूरी को डाक्टर के पास लाने को कहती है। उसका जुकाम बिगड़ रहा है, नहीं तो इमोन्या, निमोन्या हो जाता है। कुछ और काम के बारे में भी पत्नी बताती है पर वह अब भी आकाश की ओर देख रहा है। यह देखकर पत्नी को गुस्सा आता है और कहती है कि "यह आसमान कहीं भाग नहीं जाएगा। न ही इसे उधार लाये है कि लौटा देने का डर पड़ा हैं।"[93]यह सुनकर भी वह चिन्ता में डुबा रहता है। कल्पना लोक में निमग्न जाता है तो पत्नी इसके बारे में पूछती है और गुस्से में बीच में पड़ी पेटी को लात मारकर कोने में रख देती है। यह देखकर 'मैं' चिढ़ जाता है। पत्नी और बच्चियों के गंदे कपड़े देखकर उसे कोध आता है और इसके बारे में पूछता है। तब पत्नी का चेहरा मारे कोध से तमतमा आता है- "कभी यही सब करने लगूँ तो घर की जगह जंगल नजर आयेगा।"यह सुनकर उसे बड़ी चोट लगती है

[93] टुकड़े टुकड़ेः रमेश बक्षी पृ. **76**

और कहता है कि कल्पना करते समय यथार्थ की टॉग भी अड़ा दती है। आगे वह साड़ी और तितली के पंख के बारे में कहता है। इतने कहने पर पत्नी तीनों बच्चियों को दा-दो, तीन-तीन जमा देती है और भरी हुई कह रही है "तुम्हारे घर की ये तितलियॉ मेरी साड़ी के ही रंग की तो हो गयी है।" [94]ये सुनकर पति उठता है और बाज़ारें जाने केलिए तैयार हो जाता है।

बच्चियां तितली की तरह है। रंग भरे इन तितलियों को ज़रूरी चीज़ें देकर बड़ी बनाना मां-बाप का धर्म है। बच्चों के बारे में मां-बाप का अलग-अलग कर्तव्य है। पत्नी बच्चों को ठीक तरह से निभाना भी चाहती है। प्रस्तुत कहानी में पिताजी बच्चियों के स्वास्थ्य के बारे में उदास हो जाता है। तब माता धर्म निभाने केलिए पिता को हट करती है। अपनी अस्मिता भी प्रकट करती है।

'कोई एक खिलौना

कई बातों में फैसला लेना नारी केलिए मुश्किल बात है। ठीक तरह से निर्णय लेने पर जिन्दगी की गति भी बदल सकती है।

रमेश बक्षी कृत 'कोई एक खिलौना' कहानी की मम्मी अपनी बच्ची को माता-पिता की तरह नहीं बनाना चाहती है। मां-बाप, दोनों विवाह का निर्णय लेते समय कागज की चिटें की सहायता से फैसला लेते हैं। मैट्रिक पास करने के बाद लड़की से मन पसंद जीवन साथी को चुनने का अवसर घरवाले देते हैं। निर्णय लेने में मुश्किल होने से वह सहेली की सहायता से हज़ारवें हिस्से में एक चिट उठाती है। चिट के अनुसार अख़बार में विज्ञापन छपा। इस समय लड़के के सामने पैंतीस चिटें उड़ती रहती हैं। उस दिन मैंट्रिमोनियल में पैंतीस विज्ञापन हैं। पैंतीस में से एक को कागज़ की चिट की सहायता से चुनती है और दोनों की शादी भी चलती है। आज उनकी बेटी की तीसरी सालगिरह हैं। ख़ुशी का दिन है ओर 'गुडिया' केलिए खिलौने खरीदने केलिए वे तीनों दूकान पर आते हैं। डॉल, जहाज़, सिपाही, शेर, बॉल आदि से कौन-सा खिलौना लेना है। गुडिया को निर्णय लेने में कठिनाई होती है। यह देखकर मम्मी नाराज़ हो जाती है और

[94] टुकड़े टुकड़ेः रमेश बक्षी ।पृ. 77

बच्ची को गुस्से में चपत लगा दी है।एक खिलौना पसन्द कर लेने में भी निश्चय नहीं कर पायी तो आगे बढ़कर क्या हो जाएगा? पिता पांचों खिलौने खरीदने केलिए तैयार है लेकिन मम्मी केवल एक खिलौना खरीदना चाहती है।निर्णय न लेने के कारण कोई भी गुडिया न खरीदता है। "मैं इसे कोई खिलौना नहीं खरीदने दूँगी।"मैं ने गुडिया को उनके पास से ले लिया है।वह चुप हो गई है।सहसा मैं बड़बड़ाये जा रही हूँ "आप चाहते हैं कि यह भी हम जैसे ही बने।नहीं, नहीं, मैं इसे नहीं बनने दूँगी।"[95]

ठीक समय पर सही निर्णय लेना जिन्दगी की जीत केलिए आवश्यक है।बचपन में किसी ने भी चपत मारकर मम्मी को उचित रास्ता नहीं दिखाया।निर्णय लेने में पिता को भी कठिनाई लगती है।इसलिए मम्मी चाहती है कि बच्ची उसी तरह न हो जाय।इसलिए मम्मी निश्चय न करनेवाली गुडिया को कोई भी खिलौना नहीं खरीद देती है।अस्मिता को पहचानकर, उसके अनुसार जीवन बिताने केलिए गुडिया को यह सजा देती है।

'एक शरीर'

आधुनिक युग में नैतिकता संबन्धि धारणायें बदली है।एक व्यक्ति से प्रतिबद्ध रहकर प्रेम करना और उसी से जड़कर रहने की धारणा आज खण्डित हुई है।आज की अनेक नारियां विवाह के पूर्व यौन-संबन्धों के प्रति स्वच्छन्द दृष्टि रखनेवाली हैं।कभी-कभी वे बिना किसी संकोच के सहज, स्वाभाविक और निर्द्वन्द्व भाव से अपने प्रेमी के साथ घूमती हैं, कभी-कभी शारीरिक संबन्ध भी रखती हैं।

'एक शरीर' रमेश बक्षी द्वारा लिखित कहानी है।प्रस्तुत कहानी का नायक यौन संबन्धों के प्रति स्वच्छन्ध दृष्टि रखनेवाला है।वह तो मुक्त संबन्ध की अनिवार्यता पर ज़ोर देना चाहता है।सेक्स को लेकर मन में कुँठाएँ पालना, सतीत्व के नष्ट हो जाना जैसी घटिया बात सोचना और भरी जवानी में मास्टरवेशन करना उनकी दृष्टि में जुर्म है।यौन-संबन्धों के बारे में उसकी ई

[95] टुकड़े टुकड़ेः रमेश बक्षी, पृ. 71

मानदारी केवल इतनी है कि पहचान के पहले ही वह लड़की के सामने स्पष्ट कर देता है कि वह उससे शादी नहीं कर सकेगा। लड़की राजी नहीं होती है तो वह उसे छोड़ देगा।

एक बार गर्मी के दिन में नायक छत पर सो रहा है।उस परिवार में एक लड़की खासी जवान है।उसने उस लड़की को अजीब स्थिति में देखा है।लड़की अपनी साड़ी को ऊपर सरकाकर सीधे उँगलियाँ योनि में डाल देती है।ऊपर चादर ओढ़कर वह उँगली चलाती रहती है।वह थकती जा रही है और करवट पर करवट बदल रही है।यह देखकर नायक को बहूत बेचैनी होती है।उसे लगा है कि यह उसका धर्म है, एक युवा और अनुभवी होने के नाते कि उसकी सहायता करें।दूसरे दिन नायक उससे साफ-साफ बात की और यह भी कहते हैं कि उसके रहते वह यह करती है तो यह उसका अपमान है।जब तक वह वहाँ रहेगा तब तक उससे संबन्ध रखने की वादा भी देता है।यह सुनकर लड़की कहती है कि 'उसकी सगाई हो चुकी है और सर्दियों में शादी भी हो जाएगी।विवाह-पूर्व यौन-संबन्ध में उसे इच्छा नहीं है क्यों कि जिससे उसकी शादी हो जाएगी वह बहूत अच्छा लड़का है।"[96] उम्र में बडा होने के नाते वह उसे आशिर्वा भी देकर लौट जाता है।

भारतीय मान्यता के अनुसार पति के प्रति निष्ठावान रखना पत्नी का पहला धर्म है।प्रस्तुत कहानी की लड़की को यौन-संबन्ध में भाग लेने केलिए सभी परिस्थितियाँ अनुकूल हैं।नायक के साथ शारीरिक संबन्ध में पड़े तो कोई देखे ही नहीं।फिर भी पतिवता रहने में वह अपनी अस्मिता समझती है।जिससे उसकी शादी हो रही है, उसके लिए अपनी देह को निर्मल रूप में समर्पित करने की इच्छुक भी है।

'वह'

उत्तराधुनिक युग में युवा वर्ग दांपत्य संबन्धों की सीमा से बाहर भी काम-सुख या सेक्स तृप्ति को एक आवश्यकता के रूप में निसंकोच भाव से स्वीकार करता है।शारीरिक सुख को

---

[96] टुकड़े टुकड़ेः रमेश बक्षी, पृ. **39**

पाने केलिए स्त्री और पुरूष व्यग्र हैं।पुरूष तो अपने विवाहेतर काम संबन्ध को गर्वित-सा अनुभव करता हुआ दूसरों को सुनाता है।आज नारी भी, युग-युग के दमन और शोषण के बाद, अपने काम संबन्धों की खुली चर्चा कर रही है।स्त्री और पुरूष का मिलन स्तर केवल स्त्री-पुरूष के प्रकृत रूप में होना चाहिए उसके लिए दांपत्य का बन्धन आवश्यक नहीं है।

'वह' दीप्ति खण्डेलवाल कृत कहानी है।कथानायक 'वह' दफ्तर में काम करता है।पत्नी का नाम है नीलम।तीन ही महीने तो हुए हैं उसके विवाह को।आजकल वह हनीमून मना रहे है।नीलम में वह पत्नी को नहीं ढूँढ़ता है।उसे विश्वास है कि नीलम भी उसमें पति नहीं ढूँढा होगा।नीलम के और अपने संबन्ध को वह नाटक मानता है।बच्चा तो वे दोनों नहीं चाहते है।नीलम बच्चे केलिए 'फॅसना' शब्द इस्तेमाल करती है।कथानायक दफ्तर में कंपनी के मालिक की सेक्रेटरी मिस जूली से उलझा हुआ है।एक बार वह अपने मिलन के चरम क्षणों में नीलम से पूछता है, "बाई द वे, तुम मेरे पहले कितनों के साथ सोई हो डार्लिंग" वह नीलम को बांहों में भींचकर पूछता है। "मैं ने कोई अकाउण्ड नहीं रखा।"नीलम अपने उभार उसके वक्ष पर दबाकर कहती है, "लेकिन तुम्हारे बाद अब कोई नहीं" अपने कथन को बढ़ाती आगे कहती है, इट हार्डली मैटर्स।"[97]

वह में इस तरह कहने का साहस नहीं है।नीलम वैवाहिक संबन्ध को 'बन्धन' मानती है और बच्चे को 'फॅसना' भी।अपने भावों को खुलकर प्रकट करने केलिए वह तैयार भी है।आधुनिक विचार रखनेवाली नीलम यौन-स्वतंत्रता को अपनी अस्मिता का पर्याय मानती है।

'कठफोडवा'

स्वतंत्रता के पहले नारी पति को परमेश्वर मानती थी।पुरूष की कमियॉ चुपचाप सहन करती थी।पर आज नारी आधुनिक विचारधारा में आस्था रखती है।शिक्षित होने के कारण परंपरागत मान्यताओं का विरोध करती है।वह पुरूषों से दिन-ब-दिन समानता का दावा भी करती हैं।

---

[97] वह तीसरा ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ **118**

शैलेश मटियानी की 'कठफोडवा' की नायिका है सुप्रिया। वह शिक्षित तथा कामकाजी महिला है। वह ईसाई धर्म से संबन्ध रखती है और उसके पति धरणीधर ब्राह्मण है। धरणीधर नौकरी नहीं करता है। पत्नी कामकाजी होने के कारण धरणीधर के मन में सुप्रिया के प्रति शंका और संदेह की भावना पैदा हो जाती है। पति की इस मनस्थिति को देखकर स्वाभिमानी सुप्रिया चुप नहीं बैठती है। उन्हें प्रताडित करती हुई कहती है "तुम तो कुछ बोलोगे नहीं। न तुम नौकरी करोगे, न मुझे करने देंगे। मैं तुम्हें बहूत 'प्रोग्रेसीव' और 'लिबरल माइंडेड' समझती थी, डी. डी ,मगर लगता है तुम्हारे भीतर का पंडितपना ज्यों-का-त्यों बना है। तुम मुझे अब 'डलरेट' नहीं कर पा रहे-डी. डी. ।"[98] लेकिन धरणीधर का उसके प्रति संदेह लगातार बढ़ता जाता है। पति की शंकालू मन: स्थिति को देखकर उसकी अस्मिता जाग उठती है। "लेकिन डी. डी .,वजह तो यही है न कि तुम्हारे मन में कहीं यह सुहाग भर पाया है कि मैं 'लूज़ करेक्टर' की हो गई। रियली, इट इज़ ए वंडर फार मी, डी. डी. कि मेरे लिए अपने हिन्दु धर्म और सारी जात-बिरादरी को छोड़ देनेवाले तुम अब इस कदर शक्की होते जा रहे? कभी तुमने इसी बात पर अपनी 'वाइफ' को छोड़ दिया कि वह निहायत बैकवर्ड और दकियानूसी औरत है। तुम्हें 'डीपली लव' नहीं करती। तुम्हें आमलेट बनाकर नहीं देती, तुम्हारे सामने घूमने-फिरने नहीं जाती है और अपने हिन्दु धर्म को तुम 'हट' करते कि तुम्हारे बिराधरी ब्राह्मण बहूत ही ज़्यादा दकियानूस और 'मीन मेटे लिटी' वाले, तुम्हारे-मेरे बीच के लव एफेयर से चिढते हैं? मगर मुझे लगता है, वह सब तुम्हारा दिखावा ही था। एम तो तुम्हारा जैसे-तैसे 'कनविंस' करके, मुझसे अपनी 'लस्ट' की पूरा करना था, बस।"[99]

सुप्रिया आधुनिक विचारधारा में आस्था रखनेवाली है। इसलिए वह परंपरागत मान्यता को तोड़कर दूसरे धर्म के व्यक्ति से शादी करती है। कभी-कभी दोनों के रहन-सहन और विचारों में धर्म मूल केन्द्र में आता है। सुप्रियामसी एक फॅर्म में लेडी-टाइपिस्ट है। शिक्षित और कामकाजी

---

[98] सुहासिनी तथा अन्य कहानियांः शैलेश मटियानी, पृ. **14**

[99] सुहासिनी तथा अन्य कहानियांः शैलेश मटियानी, पृ. **15**

होने के कारण वह अपने व्यक्तित्व एवं अस्मिता को पहचानती है और उसे अक्षुण्ण बनाए रखती है। पति की विसंगतियों और अन्तरर्विरोधों को परदाफाश करने में वह समर्थ भी बन जाती है।

'दो अंधेरे'

शादी का आकर्षण प्राय: केवल कुछ दिन ही रहता है। विवाह के प्रारंभिक दिनों में दूल्हा-दुल्हन आपस में प्रेम करते हैं। जीवन साथी की कमियों के बारे में इस वक्त सोचता भी नहीं। धीरे-धीरे जीवन-साथी की कमियॉं, कमज़ोरियॉं आदि बातचीत के विषय बन जाते हैं। कभी-कभी बच्चों के जन्म के बाद आकर्षण समाप्त हो जाता है। पुरूष प्राय: किसी अन्य संबन्ध में पड़ जाता है। आधुनिक नारी यह चुपचाप सहन नहीं करती । शायद उसमें सौन्दर्य और शिक्षा की, नौकरी और अर्थ की कमी हो, पति को अपना सर्वस्व मानती है। पति को अपना ही बनाए रखने केलिए झगड़ा करने केलिए भी वह तैयार हो जाती है।

उषा प्रियंवदा की 'दो अंधेरे' की कौशल्या तीन बच्चों की मां है। पति दिनेश सरकारी नौकरी बदलकर एक प्राईवेट फर्म में काम करता है। जब वह दिल्ली में काम करता है तब वह कौशल्या को भी साथ लेता है। अब वह केरल में काम करता है। अनजान जगह में परिवार को ले जाना उचित नहीं है। इसलिए कौशल्या अविवाहित बहन सुमित्रा के पास कुछ दिनों केलिए जाती है। सुमित्रा नौकरीपेशा नारी है। वह नौकरी करती है और स्वतंत्र और स्वाधीन जिन्दगी बिताती है। बहन की जिन्दगी को देखकर कौशल्या सोचती है कि अगर वह भी विवाह न कर नौकरी कर ली तो वह भी शायद सुखी रहती।

दिल्ली में दिनेश के साथ छोटे सरकारी क्वार्टर में रहते समय कौशल्या खर्च में काट-छॉंट कर घर सजाने केलिए सारा सामान खरीदती है। उसके सारे कपड़े फट जाते हैं। कई बार दिनेश कपड़े खरीद लेने को कहता है पर वह टाल जाती है क्योंकि घर में कुछ और सामानों की ज़रूरत है। इसलिए वह अपने ऊपर कुछ भी खर्च न करती है। धीरे-धीरे दिनेश का प्यार उससे घटता चला जाता है और इस बीच दिनेश का संबन्ध किसी पडोस की लड़की से हो जाता

है।यह जानकर वह चीख उठती है और पति से कहती है कि "तुमने मेरा विश्वास तोड़ दिया दिनेश, तुमने मुझे छला।क्या मैं ने तुम्हें प्यार नहीं दिया, क्या मैं ने तुम्हें अपना शरीर नहीं दिया? मैं कष्टों में भी मुस्कुराती रही, थोडे में ही संतुष्ट रही, उसका बदला तुमने मुझे इस तरह दिया।"[100] इस प्रकार कौशल्या अपनी अस्मिता एवं आत्मसम्मान की भावना को साफ प्रकट करती है।

आर्थिक दृष्टि से पराधीन होने के कारण नारी द्वन्द्व एवं तनाव झेलती है।वह सोचती है कि उसको सुख की, अर्थ की कमी है।परन्तु पति को चुराने केलिए किसी को अनुमती नहीं देती है।छला जाने पर वह क्रोध से भड़क उठती है।

'कगार पर'

दीप्ति खण्डेलवाल कृत 'कगार पर' झूठी अस्मितावाली नारी की कहानी है।नायिका रंजना तीन भाइयों की सबसे छोटी अकेली बहन है।माता-पिता की इसकी कोई स्मृति नहीं है।उसकी परवरिश, भैया भाभी ने की है।वह अति स्वाभिमानी और स्वावलंबी लड़की है।किसी हद तक उदण्ड भी है।कभी किसी के सामने झुकती नहीं।जिन्दगी में किसी की आवश्यकता महसूस नहीं करती है।अपने घर में भी संकुचित, संवेदनशून्य और अमानवीय व्यवहार करती है।

बी. कॉम करते ही वह मुहल्ले के बैंक में ही नौकरी केलिए एपलाई करती है और छोट-बड़े सोसे भिड़ाकर बैंक में क्लर्की पाती है।वह स्वयं बिलकुल 'अपनी' है।वेतन मिलने पर वह भाभी के एहसान चुकाने केलिए पैसे देकर घर में रहने लगती है।'पहला वेतन मिलते ही उसने ढाई सौ में से सौ बड़ी भाभी के सामने फेंक दिए, "अब तुम्हारे टुकड़े नहीं खाऊंगे।ये रहे सौ रूपए मेरे घर में रहने और खाने पीने का खर्च।ज़्यादा हो दिए हैं कम नहीं।मेरे खाने-पीने पर इससे ज़्यादा खर्च नहीं आएगा।धीरे-धीरे अब तक का सारा एहसान चुका दूँगी।"[101]

---

[100] संपूर्ण कहानियाँ ः उषा प्रियंवदा, पृ. **161**

[101] नारी मन ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. **48**

उसके स्वाभाव में विवाह के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं आता है। शादी के समय पति हेमन्त के सामने उसने शर्तें रखी है कि सास, ननद किसी के साथ नहीं रहेगी और न नौकरी छोड़ेगी। इसके अलावा एक ओर शर्त भी वह रखती है कि बच्चे भी कतई नहीं। हेमन्त इन्श्योरेन्स एजेण्ट है। रंजना हेमन्त से गिनकर तीन सौ रूपए प्रति माह रखवा लेती है। वह घर क्या भेजता है, कितना बचाता है, वह एक-एक रूपए का हिसाब पूछती है। हेमन्त और उसके बीच निश्चित समझौता है। अत्यधिक हिसाब और नपी-तुली जिन्दगी वह बिता रही है। इस प्रकार के गणिती जीवन से हेमन्त ऊब जाता है।

एक बार समुद्र के किनारे घूमती-घूमती रंजना डेंजर की तख्ती तक पहूँचती है। अचानक हेमन्त उसे घसीटकर बचा लेता है। प्रस्तुत घटना के बाद, मृत्यु के करीब पहूँचने के बाद, रंजना को जिन्दगी में किसी की ज़रूरत का एहसास होता है। मृत्यु की कल्पना से वह चकित हो जाती है। वह बहूत बदल जाती है । अपनी शर्तें तोड़ने केलिए वह तैयार हो जाती है। गांव से सास को बुलाना चाहती है तथा मां बनना भी स्वीकारती है। 'रंजना ने हेमन्त के गले में बांहें डाल दी, "नहीं तुम मुझे डूबने नहीं देते। मेरे साथ तुम भी डूब जाते। माफ करना, हेमन्त, पहली बार मौत के कगार पर आकर मैं ने जिन्दगी की कीमत समझी है। पहली बार तुम्हें पहचाना है... ।"रंजना शायद जीवन में पहली बार फूट फूट कर रोने लगी थी।'[102]

केवल आत्मकेन्द्रित जीवन बितानेवाली रंजना में मृत्यु के कगार पर आमूल परिवर्तन होता है। वह सहज और संवेदनशील नारी बन जाती है। झूठी अस्मितावाली रंजना अंत में समझती है कि जीने केलिए दूसरों का सहयोग भी आवश्यक है। इसप्रकार अस्मिता संबन्धि रंजना की गलत धारणा बदल जाती है और वह सही अस्मिता से युक्त नारी बन जाती है।

'तपिश के बाद'

स्वतंत्रता के पहले हिन्दुस्तान में प्राय: पुरूष लोग कमाते थे स्त्री लोग केवल गृहिणी बनकर पत्नी धर्म निभाती थी। बच्चों को जन्म देती थी, पालन-पोषण करती थी। पर सत्तरोत्तर

[102] नारी मन : दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. **54**

काल में प्रस्तुत परिस्थिति बदलती दीखती है। आज नर-नारी दोनों समान धरातल पर शिक्षा ग्रहण करते है और सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करते है। स्त्री भी घर के बाहर जाकर नौकरी करती है। पर स्त्री संबन्धी परंपरागत धारणा में पर्याप्त बदलाव नहीं आया है। आज भी वह नौकरी के साथ रसोई का काम भी करने केलिए बाध्य बन जाती है।

'तपिश के बाद' दीप्ति खाण्डेलवाल की कहानी है। आनन्द और सुमी पति-पत्नी हैं, और टीटू है बेटा। आनन्द इन्श्योरेन्स एजेण्ट है और सुमी बैंक में काम करती है। शादी के आरंभिक दिनों में आनन्द सुमी को ज़्यादा प्यार देता था। अब व्यस्तताओं में फंसे आनन्द को प्यार प्रकट करने केलिए फुरसत नहीं होती है। सुमी सबेरे उठकर जल्दी से जल्दी खाना बनाती है। आनन्द और टीटू को तैयार करने के बाद उसे भी स्वयं तैयार होना है।

रसोई में काम करते समय, आनन्द बीच-बीच में ज़रा कोट पहना दो, ज़रा रूमाल दे दो कहते हैं। सभी की सहायता करने के बदले वह उसके जीवन को मुश्किल भी बनाता है। उसकी ज़रा-ज़रा की पूसी करती वह तनने लगती है और बार-बार सोचती है "क्या सारे कर्तव्य मेरे अकेले के ही है, आनन्द तो स्त्री-पुरूष की समानता में विश्वास करते हैं तभी तो कमाऊ बीवी चाहते थे। फिर यह क्यों नहीं समझते कि मुझे भी काम पर जाना है और मेरे भी दो हाथ हैं।"[103]

खाना खाते समय वह प्रतीक्षा करती है कि आनन्द कोई मीठी बात कहें। पर आनन्द जल्दी ही तैयार हो जाता है और 'अच्छा बाय सुमी' कहकर शाम की देर मत करने की भी कहकर चला जाता है। यह सुनकर कुछ पलों की मिठास केलिए छतपटाता मन विद्रोह करने लगता है कि आज घर ही न लौटती है। वह आनन्द से केवल एक चुंबन, एक दृष्टि, एक स्पर्श चाहती है। लेकिन ये देने केलिए आनन्द को फुरसत नहीं हैं। बैंक डयूटी समाप्त करने के बाद वह आनन्द केलिए करेले खरीदती है। तब उसकी सहेली सविता वहाँ पहूँचती है। वह एक फर्म में रिसेप्शनिस्ट है। सविता सुमी को लेकर कॉफी हाउस चलती है। साधारणत: सुमी बैंक की

---

[103] नारी मन : दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. 48

डयूटि के बाद पांच बजे घर पहूँचती है।आज उसका मन विद्रोह से भर जाता है।इसलिए वह सोचती है कि "आज मैं भी आराम से घर लौटूँगी, आखिर मेरे भी कुछ अधिकार है।"[104]कॉफी पीते समय घर के बारे में सोचकर सुमी बेचैन हो जाती है।एकबार देर होने के कारण वह रिक्शा द्वारा घर से कुछ दूर तक पहूँचती है और पैदल घर तक पहूँचती है।यह देखकर आनन्द नाराज़ होकर उसकी असर्मथता की उपहास करता है।सविता को अलविदा देकर सुमी घर पहूँचती है तो छ: बजे हो चुका है।आनन्द नाराज़ होकर देरी से आने का कारण सख्त स्वर में पूछता है।यह सुनकर सुमी कठोर हो उठती है और कहती है कि "छह बजने में पांच मिनट हैं।क्या हुआ यदि एक दिन देर हो गई?"[105] ये सुनकरआनन्द के 'पुरूषत्व' पर चोट लगता है और कुपित होकर कहता है कि पल में वह सुमी को ठुकरा भी सकता है और कमाने के कारण बहूत गर्व की ज़रूरत नहीं है।यह सुनकर सुमी चोट खाकर नागिन-सी फूफकारती है।एक यंत्रणा से छतपटाता मन यंत्रणा के प्रतिकार केलिए पागल हो उठता है।"हॉं, कमाती तो हूँ और इस पर यदि मुझे अभिमान भी हो तो गलत क्या है।"[106] आनन्द उसे तड़ावड़ पीटने लगता है।टीटू ज़ोर-ज़ोर से रोने लगता है और दौड़कर उससे लिपट जाता है।सुमी करेले का बर्तन उठकर फेंक देती है।पल भर भी वहां न रहने की बात कहकर पागल-सी आवेश में वह बेहोश हो जाती है।होश आता है तो दोनों पति-पत्नी फिर कभी ऐसा तूफान न उठाने का निर्णय लेता है।

आज भी अहं से युक्त पुरूष सोचता है कि रसोई में पत्नी की सहायता करना ठीक नहीं है।खाना बनाना, बच्चों का पालन-पोषण करना, घर और घर के चारों ओर साफ करना, कपड़ा धोना ये सब केवल स्त्री का धर्म है।उसकी मदद में एक अंगूठी चलाना अपमान की बात है।स्त्री घर के काम संभालने के साथ-साथ ऑफिस में काम करके अच्छा वेतन कमाती है।ठीक तरह से गृहस्ती चलाने में ये बहूत सहायक है।लेकिन इसके बारे में न सोचने वाला पुरूष सेवा कार्य में

---

[104] नारी मन ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. 68

[105] वही, पृ . 70

[106] वही, पृ. 70

नारी की ओर से कोई कमी होती है तो क्रूर शेर की तरह व्यवहार करता है। ऐसे पुरूष से सुमी लडती है। वह काम करती है और कमाती है। अस्मिता को पहचानकर पुरूष के अहं को चोट भी लगाती है।

'एक अदद औरत'

स्वतत्त्रता के पूर्व, बच्ची का जन्म होने पर लोग प्राय: सोचते थे कि दू:ख झेलने केलिए एक और प्राणी ने भी इस धरती में जन्म लिया है। ठीक है, उस युग में लड़कियॉ माता-पिता के लिए बोझ थीं। पुत्र न जन्में तो नरक में यातनायें भोगना पड़ेगा ऐसा विश्वास करते थे। लेकिन ये सत्य पहचानते ही नहीं है कि अगर लड़की या माता न होती तो बेटा भी नहीं होता। उस काल में बच्ची को जन्म देनेवाली औरत को अनेक प्रकार की यातनायें सहना पड़ता था।

'एक अदद औरत' सतीदेवी नामक नारी की कहानी है। कहानीकार है दीप्ति खाण्डेलवाल। माता-पिता, सीता का ब्याह चौदह वर्ष की उम्र में, नौ साल से बड़े गोविन्दप्रसाद व्यास से कराते है। सीता की बुआ गोरी ने रिश्ता पक्का होने के बाद अंग्रज़ी दरिन्दों का शिकार बनने के कारण आत्महत्या की है। इसलिए इतनी छोटी-सी उम्र में सीता देवी का ब्याह कराती है। गोविन्द विधवा मां का इकलौता बेटा है। क्लर्क की नौकरी है। उसका एक आंख भेंगी है। शादी के बाद ससुराल की ओर चलते समय पति अगाह देता है कि घर में मां की इच्छा चलती है और चलती भी रहेगी। सीतादेवी को किसी बात में बोलने का कोई हक भी नहीं है। घर में सास की इच्छा चलती है। सीता घर का सारा काम संभाल लेती है। गोविन्द प्राय: रात को देर से लौटता है। मुँह से शराब की दुर्गन्ध आती है। सासजी सीता को चेतावनी देती है कि वह साल भर में पोता चाहती है। उस पुरूष के पार्श्व में, जिसकी 'दुर्गन्ध' को सहकर सीता पलकें मूँद लेती है और होंठ भींच लेती है। दो बेटियों को जन्म देकर सीता उस घर में भयानक रूप से अपराधिनी हो जाती है। औरत होने के कारण वह सब कुछ चुपचाप सह लेती है। विवाह के पांचवें वर्ष में वह एक भेंगी आंखवाले बेटे को जन्म देती है। सास बहूत खुश हो जाती है और कहती है कि पूरे पांच बेटे को जन्म देकर दो निगोडियों के कर्ज पूरा होना चाहिए। बेटियों को

सास 'निगोडियॉ' कहने से सीता को क्रोध आता है। वह सास के विरूद्ध पहली बार आवाज़ उठती है। 'सीता ने पहली बार सास के सामने आंखें ऊंची की, "क्यों मांजी, बेटिया ही बेटे जनती हैं, या बेटे आकाश से टपकते है? आप न होतीं, तो आपका बेटा भी कहां से जनमता? क्यों बेटियों और बेटों के परानों में कोई फर्क होता हैं, जो आप रात-दिन विद्या और पद्मा को कोसा करती हैं?"[106] सीता पढ़ी-लिखी नहीं है। फिर भी नर-नारी असमानता के विरूद्ध आवाज़ उठाती है। सीता सास के सामने ही बेटे की खाट पर परे सरकाकर दोनों बेटियों को कलेजे से लगा लेती है। पहली बार सास के सामने सीता की पथरा चुकी आंखों से अविरल अश्रृ झरने लगे है। फिर सीता दो बेटे और को जन्म देती है।

एक बार गोविन्द के दूर के रिश्ते का भाई श्याम नौकरी की तलाश में गोविन्द के घर आता है। वह सीता को कभी-कभी आंखें चुराकर देखता है। होली के दिन में मैदा-चीनी घी न होने के कारण सीता मिठाई नहीं बनाती है। भंग के नशे के कारण न होश होनेवाला गोविन्द झपटकर सीता के केश पकाड़कर तड़ावड़ थप्पड़ जड़ने लगता है। तब रंगों से नहाय श्याम आगे बढ़कर गोविन्द को सीता से अलग करके ज़ोर से धक्का देता है। गिरकर उठने का प्रयास करता है गोविन्द। जब वह होश में आता है तब वह श्याम को घर छोड़ने को कहता है। और कहता है कि अब उसकी सब-समझ में आता है कि श्याम और सती का संबन्ध भौजाई से आसनाई चल रही है। यह सुनकर सीता आग की तरह जल उठती है। जीवन में पहली बार और अंतिम बार सीता पति के विरूद्ध आवाज़ उठाती है कि "क्यों दोष लगाते हो विचारों की। जैसे खुद हो, वैसा ही सबको समझते हो। रोज़ पीकर चमेली का गजरा कलाई में लपेटकर, किसी कोठे से लौटते हो, सो कुछ नहीं मेरे लिए कभी चुट्की भर सिन्दूर भी लाए?"[107] गोविन्द और ज़ोर से दहाड़ने पर सीता, चीख्ती है कि वह आज से उनके जूते नहीं खाएगी। और आधी रात को दरवाज़ा भी नहीं खोलेगी। श्याम सन्दुकची और बिस्तर समेटकर जाते वक्त झुककर सीता के पैर

---

[106] दो पल की छॉह ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. **34**

[107] दो पल की छॉह ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. **36**

छू लेता है। प्रस्तुत घटना के बाद सीता का जीवन एकदम सामान्य बन जाता है। बेटे और बेटियों के ब्याह वह शान से कराती है और नानी भी बन जाती है। बूढ़ी सीता देवी केवल यह प्रार्थना करती है कि अगले जनम में श्याम को पति रूप में मिलना चाहती है।

ससुराल में सीता केलिए दिन-रात, अंधेरे-उजाले, सरदी-गरमी में कोई फर्क नहीं है। काल के प्रवाह में वह मां और नानीमां बन जाती है। अशिक्षित होने पर भी वह अस्मिता को पहचानती है और सास और पति की गलत कार्वाइयों के विरूद्ध आवाज़ उठाती है। प्रस्तुत कहानी पूर्व-दीप्ति शैली में लिखी गयी है।

'झोंका'

विवाहित औरतें पति का एक स्पर्श, एक दृष्टि चाहती है। विवाह के प्रारंभिक दिनों में दोनों आपस में बहूत अधिक प्यार करते है। 'एक दूजे केलिए बनया है' की तरह व्यवहार करते हैं। आगे चलकर चाह-भरी नज़रें समाप्त हो जाती हैं। जिन्दगी में एक तरह की शून्यता भरने लगती है। घर के सारी काम स्त्री को ही निभाना पडता है। पुरूष सोचता है कि घर के काम और बच्चों का पालन-पोषण केवल स्त्री का उत्तरदायित्व है।

'झोंका' दीप्ति खण्डेलवाल की कहानी है। सुधीर और प्रतिभा पति-पत्नी हैं। जीवन में कार और बंगले की हैसियत है। केवल बेटी है। पति-पत्नी के स्वभाव में काफी अंतर है। प्रतिभा की आंखों में आकाश के रंग है तो सुधीर की बुद्धि में मूल्यों की चेतना है। इतवार को प्रतिभा नीले फैले आकाश को देख रही है। सुधीर सोफे पर बैठे अकबार पढ़ रहा है। वह सुधीर को बड़े चाव से घेर-घेर लेना चाहती है। अकबार पर दृष्टि टिकाए सुधीर को देखकर प्रतिभा कोध के आवेश से कांपने लगती है। वह सुधीर के हाथों से अखबार छीनकर फेंकती है और हांफती-सी सोफे पर धम से बैठ जाती है। सुधीर पूछने पर वह 'कुछ नहीं' कहती है। कुछ नहीं कहकर एक विराट-शून्य सा उभर आता है। प्रतिभा को अब लगता है कि सुधीर का अस्तित्व दलदल-सा है और अपना अस्तित्व शून्य-सा है। किसी मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि पुरूष के हृदय का रास्ता उसके पेट से होकर जाता है। प्रतिभा पाक-कला में प्रवीण है। फिर भी सुधीर मिसेज़ साहनी की

प्रशंसा करता है।यह सुनकर प्रतिभा का सर्वांग जल उठता है।भैया-भाभी के फारेंन जाने की बात बताकर प्रतिभा मिसेज़ साहनी की बढ़िया कॉफी वाली बात की चीट का बदला ले लेता है।सुधीर कहता है कि बदकिस्मत के कारण वह फॉरेन क्या इण्डिया भी नहीं घूम सकता है।यह सुनकर प्रतिभा सख्त स्वर में पूछती है कि "तो तुम्हारा बदकिस्मती की जिम्मेदारी क्या मुझपर है?" [108] सुधीर और उसके बीच केवल एक निरर्थक शब्दों का आदान-प्रदान होता है।सुधीर और प्रतिभा समझते है कि इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं है।सारे दिन वेस्ट हो जाने से सुधीर दु:खी हो जाता है और पिक्चर देखने केलिए जाने का वादा करता है।लेकिन सारे फिल्में तो वे देख चुके है।सुधीर के ये आत्मालाप सुनकर प्रतिभा को लगता है वे अनावृत है-सभ्यता के हज़ारों साल बाद भी आदिम-पुरूष और नारी-से अनावृत जो अपनी वृत्तियों में ही नहीं अपनी चेतना में भी अनावृत है।सोच-सोचकर प्रतिभा को सिर में दर्द हो रहा है।प्रतिभा के सिर में बाम लगाकर सुधीर भी जिन्दगी के बारे में सोचकर निराश हो जाता है।वह बेटी के बारे में पूछता है तो प्रतिभा कहती है कि बेटी खेलने केलिए गयी है।यह सुनकर सुधीर प्रतिभा को घूरकर देखता है और सिर्फ एक बच्ची को न संभालने केलिए कोसता है।तब प्रतिभा सख्त स्वर में कहती है कि "बेटी क्या मेरी अकेली की है ?तुम ही क्यों नहीं खयाल रखते?"[109]

पुरूष का स्पर्श, सांत्वना और प्रशंसा हर उम्र की औरतें चाहती हैं।इसमें अभिमान भी करती है।मगर छोटे-बड़े सभी कार्यों केलिए कोसने पर वह खुद ही विद्रोही बन जाती है।अभिमान पर चोट लगाना कोई भी औरत नहीं चाहती है।अस्मिता को धक्का लगने पर जल उठनेवाली औरत के रूप में प्रतिभा का चरित्र-चित्रण हुआ है।

---

[108] वह तीसरा ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. 107

[109] वह तीसरा ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. 110

'अतृप्त आत्माओं का देश'

अकेलापन जिन्दगी की कदाचित सबसे बड़ी सजा है।नर है या नारी दोनों केलिए एकाकिपन शायद सबसे बड़ा दंड है।इसलिए वे दोनों परस्पर आकर्षित हो जाते है और सुख-दु:ख में भागीदार बन जाते हैं।

'अतृप्त आत्माओं का देश' शीर्षक कहानी में मालती जोशी छाया और डॉ. कुमार की कहानी के द्वारा अकेलापन की पीड़ा को व्यक्त करती है।छाया महाविद्यालय में संगीत की प्राध्यापिका है।उसके पति पायलट थे जो एक दुर्घटना में मर गया था।पति के बीमे की रकम और कुछ संजित पूँजी लगाकर छाया कहानीकार के पास एक घर ले लेती है।स्मृतियॉ उसे बेचैन कर रही हैं।सौम्य, मिलनसार, हॅसमुख, शालीन लड़की कहानीकार का मन जीत लेती है।दोनों में गहरा संबन्ध पैदा हो जाता है।एक दिन छाया कहानीकार का परिचय गणित के विभागाध्यक्ष डॉ .कुमार से करवाती है।छाया डॉ.कुमार से शादी करने का निश्चय कहानीकार से बताती है।डॉ .कुमार शादीशुदा है, दो बच्चों के पिता भी है।पर उनकी पत्नी न सुन्दर है, न सुशिक्षित।लडमकिवालों ने केवल पैसे के बल पर गरीब घर के इस लड़के को खरीद लिया है।इसके अलावा, वह महिला हीनता बोध से ग्रस्त है।पति को हर घड़ी शंकालू दृष्टि से देखती है, और चौबीसों घंटे उनकी जासूसी भी करती है।इसलिए वह तबादला लेकर यहॉ पर आता है।अब इन दोनों एकाकी प्राणियों ने एक साथ रहने का मन बना लिया है।पन्द्रह वर्ष दोनों एकसाथ रहते थे।पिछले वर्ष डॉक्टर साहब गंभीर रूप से बीमार हो गए।फेफड़े का कैंसर है।बीमारी के दौरान बच्चों और पत्नी को देखने की इच्छा प्रकट करता है।छाया ने दो-तीन बार फोन भी किया।लेकिन वह आने केलिए तैयार नहीं है।मृत्यु के बाद पत्नी, बच्चे, दामाद और मामाजी तीर की तरह जल्दी ही आते हैं।इन लोगों के मन में डॉक्टर कुमार या छाया के प्रति शोक या सहानुभूति नहीं है केवल संपदा के विचार है।पांच-सात दिन के बाद सिद्धु या सिद्धार्थ वहां आता है।

कॉलेज बस के ड्राइवर मोतीराम के लड़के को डॉक्टर और छाया गोद लेता है। वह बी .ई. पास करके यू.एस.ए. में रहता है। डाक्टर साहब और छाया को टिकट देकर अपने पास आने का निमंत्रण देता है। लेकिन देश प्रेम के कारण वे जाने केलिए तैयार नहीं है। अब डाक्टर साहब की मृत्यु की खबर पाकर वह दौड आता है। जिद करने पर छाया उसके साथ अमेरिका जाने केलिए तैयार हो जाती है। जाने के पहले वह साहब के घरवालों के यहां खबर भेजतीं कि यहॉ आकर उनके हक ले लें। ढलती दोपहर को बेटी-दामाद, बेटा और बहू आते हैं। छाया पिता के सर्टीफिकेट्स, वस्त्र, पेंशन के कागजात, बैंक की पासबुक, बी.एस. सी. और एम. एस. सी. में मिल गये गोल्ड मेडल आदि घरवालों को देती है। बीच में साहब की बेटी अदिथि छाया पर आरोप लगाती है कि उन्होंने उन लोगों की सबसे कीमती चीज़ अर्थात पापा को हथिया लिया है। अंत में छाया इसका जवाब देती है कि उसने पिता को छीन नहीं लिया है। "एक बात और कहना चाहूँगी, फिर कभी शायद कहने का मौका न मिले। वह यह कि एक बात अच्छी तरह समझ लो कि मैंने तुम्हारे पिता को नहीं छीना था जब मेरी उनसे मुलाकात हुई, उन्हें घर छोड़े दो साल हो गए थे। ये अकेलापन ही था जो हम लोगों को पास खींच लाया था। मेरा अकेलापन विधाता की देन थी, पर उन्हें तो उनके अपनों ने ही यह दर्द दिया था।" [110]

पिता को छीनने का बहाना बनाकर छाया को कठघरे में डालने का श्रम अदिथि करती है। लेकिन छाया सही उत्तर देकर साहब के परिवारवालों को पराजित करती है। उन्होंने पिता को जो चोट दी थी, उसको सूखने का श्रम छाया करती है।

'प्रतिरोध'

हिन्दुस्तान में पत्नियों को पति के सामने ऑखें उठाकर बातें करने का ताब प्राय: नहीं है। इसलिए वे अत्याचारों को चुपचाप सहन करती हैं। कभी-कभी पति-पत्नियों के मन में हीनता बोध उठता है। रूप सौन्दर्य में भिन्नता होने के कारण पति या पत्नि में हीनता बोध होता है। इसके फलस्वरूप पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण बन जाता है।

---

[110] वो तेरा घर ये मेरा घर ःमालती जोशी, पृ. **43**

मालती जोशी द्वारा कृत 'प्रतिरोध' नारी अस्मिता की सशक्त कहानी है। गरीब घर की लड़की है मीरा। पर रूप सौन्दर्य में राजारानी सी लगती है। इसलिए सुयश की मां उसे बेटे केलिए मांगती है। मीरा के मां-बाप भी इस प्रस्ताव से खुश होते है क्योंकि दो बेटियों के ब्याह करके वे एकदम विवश हो गए है। दो लड़कियॉ बाकी है। इसलिए दान-दहेज के बिना ऐसा घर और वर मिलने से वे धन्य हो जाते हैं।

सुयश अपने को मीरा के योग्य नहीं समझता है। वह सोचता है कि मीरा परिस्थिति से मजबूर होकर शादी केलिए तैयार होती है। यह एहसास उन्हें बेचारा-सा बना देता है। वह कभी खुलकर बों नहीं करता है और किसी तरह की फरमाईश भी नहीं करता है। घर में कभी उनकी ऊँची आवाज़ भी नहीं सुनाई पड़ती है।

कहानी का खलनायक है मीरा का ननदोई। इस व्यक्ति की खोटी नीयत को शादी के मंडप से आरंभ होती है। मजाक के नाम पर बड़ी भद्दी फब्तियॉ कस रहे हैं और सब लोग 'हा-हो' करके हॅस रहे हैं। इस व्यक्ति के प्रति मीरा के मन में एक वितृष्णा, एक जुगुप्सा का भाव उपजा है। अब तो उसके साथ भय और क्रोध भी जुड़ जाता है। ननदोई की कामलोलुप दृष्टि मीरा को पीछा कर रही है। लेकिन उनके सामने जाने का साहस या इच्छा मीरा में नहीं है। एक दिन वह शाम का खाना बनने में व्यस्त है। दोपहर का खाना खाकर सुयश रोज की तरह दूकान चला जाता है। अम्माजी बिटिया को लेकर सुनार के पास गई है। मीरा घर में बिलकुल अकेली है। इतने में घर का दामाद आकर रसोई की चौखट पर खड़े होकर एक कप चाय मांगता है। मीरा घबराती है और बाहर बैठने का आदेश देती है। फिर वह पानी और चाय बनाकर देती है। दामाद को चाय देने के बाद वह रसोई की ओर मुड़ी है तो वह उसके आंचल को पकड़ता है। वह किसी तरह आंचल छुड़ाती है और अम्माजी को शिकायत करने की धमकी देकर वहॉ से भाग जाती है। रसोई का दरवाज़ा बन्ध करके अपने कमरे में चलती है और अंदर से दरवाज़ा बन्ध करती है। अम्माजी और ननद बाज़ार से लौटने के बाद ही वह कमरे से बाहर आती है। खाना पकाने के बाद वह कमरे में लौट आती है और किताब पढ़ते-पढ़ते सो जाती है। इतने में सुयश लौट आता है। उनका मूड़ काफी उखड़ा हुआ है। मीरा समझती है कि पति ननदोई के

साथ खाना खाता है। ननदोई ने मीरा को धमकी दी थी कि अगर उसने उनकी शिकायत की तो वे मीरा को बदनाम करेगा। अब मीरा को लगता है कि ननदोई यह काम कर रहा है। तब वह पति की सहायता मांगती है लेकिन मिलने की कोई आशा नहीं है। इसलिए वह कहती है कि "उस आदमी को उसकी औकात तो दिखा दूँ। वैसे यह काम आपको करना चाहिए था, पर जब आपको अपनी कुँठाएँ सहने से ही फुर्सत नहीं है तो अपनी लड़ाई मुझे ही लड़नी होगी।"[111]

वह नीचे उतर जाती है। तब वह देखती है कि अम्माजी के कमरे में बैठकर ननदोई मीरा को कोसती है, बदनाम करने की कोशिश करता है। अचानक दरवाज़े खड़ी मीरा को देखकर कमरे में सन्नाटा छा जाता है। मीरा एकटक ननदोई को घूर देख रही है। उसकी दृष्टि का ताप सहा न जाने के कारण वह उठ खड़ा होता है और वहाँ से बचने की कोशिश करता है। तब मीरा लपककर उसका हाथ पकड़ लेती है और ननद की गोद में लेटे बेटे के सिर पर रखकर कहती हैं "अब बोलिए जीजाजी। आप अम्मा को जो गाथा सुना रहे थे, क्या वह सच है। "[112] मीरा का स्पर्श अब वज्र की तरह कठोर और अग्नि की तरह दाहक लग रहे हैं। तब ननद बेटे के सिर पर रखा पति का हाथ जोर से झटक देती है और कहती है "खबरदार, जो मेरे बेटे की झूठी कसम खाई।"उसने फुफकारते हुए कहा, "यह बच्च मैं ने सेंत मेंत में नहीं पाया है ।सैकडों देवी-देवताओं की चौखट पर माथा रगड़ा है तब कहीं यह मेरी गोद में आया है। इसे मैं तुम्हारी काली करतूता पर बलि नहीं चढने दूँगी।" [113] यह सुनकर वह क्रोध से गुर्राती है। लेकिन ननद आगे कहती है "मुझे आंखें मत दिखाओ। मैं कोई गलत नहीं कह रही हूँ। अपने घर को तो नरक बना ही दिया है। अब यहाँ भी गंदगी फैला रहे हो। तुमने क्या समझा कि तुम्हारी भावज की तरह दुनिया की हर औरत इतनी कमजोर है।"[114]अम्मा उसे शांत करने की कोशिश करती है। लेकिन वह चुप रहने केलिए तैयार नहीं है। " नहीं, अम्मा। मैं अब चुप नहीं रहूँगी। मैं अब तर होट सोकर खुन के घूँट पीती रही हूँ, पर अब पानी सर से ऊपर हो गया है। जानती हो, मेरा देवर

---

[111] वो तेरा घर ये मेरा घर ःमालती जोशी, पृ. **13**

[112] वही, पृ. **14**

[113] वही, पृ. **14**

[114] वही, पृ. **14**

छह महीने केलिए विलायत गया तो इन्होंने उसकी बहू को पटा लिया।अभी दूसरों का बखान कर रहे थे।भूल गए कि मेरे घर में मेरी आंखों के सामने रासलीला रचाते रहते हैं।उससे जी नहीं भरा तो अब मेरे भाई के घर में सेंध लगने चले आए है।पर मैं अपने जीते-जी यह नहीं होने दूँगी, ध्यान रखना।" [115] यह सुनकर जीजाजी दरवाज़े की ओर चलता है और फिर पीछे मुड़कर छाया को बुलाता है।लेकिन वह पति के साथ जाने केलिए तैयार नहीं है। "मैं अब उस नरक में लौटकर नहीं जाऊँगी।"[116] वह पहिर में रहने का निश्चय करती है और परिवारवाले भी इसे संत्वना देते हैं।बातचीत के बीच में एक बार फिर अपनी अस्मिता को प्रकट करके मीरा छाया से कहती है कि पति-भक्ति का मतलब यह तो नहीं होता कि उसका जायज-नाजायज सारी बातों को अनदेखा किया जाए। " ....पता नहीं कैसे आप उस गलीज माहौल में इतने दिन रह लीं।पर मुझ में इतनी हिम्मत नहीं है।मैं ऐसे वातावरण में साँस नहीं ले सकती जहाँ चौबीसों घंटे आप पर शंकालू नज़रों का पहरा बैठा हो।जहाँ रोज नए सिरे से अपने आपकी साबित करना पड़े।"[117] मीरा के अस्मिता-भरे शब्दों से सुयश का भी स्वरूप बदलता है।चंदन भी कभी-कभी आग दे सकता है।

मालती जोशी की दो सशक्त पात्रों को प्रस्तुत कहानी में देखा जा सकता है।मीरा स्वाभिमानी है और अपनी अस्मिता की रक्षा केलिए जागरूक है।छाया आंखें उठाकर पति को देखने केलिए तैयार नहीं है।पर अवसर मिलने पर वह भी पति के अनाचारों के विरूद्ध आवज़ उठाती है।

'मेरे कत्ल में तुम्हारा हाथ था'

रंग-बिरंगे स्वप्न और आशाएँ लेकर ही औरतें शादी के बाद ससुराल में जिन्दगी शुरू करती हैं।कभी-कभी उपेक्षाएँ या क्रूरतायें उसे झेलना पड़ता है।पति, सास, ससुर, ननद या

---

[115]वो तेरा घर ये मेरा घर ःमालती जोशी, पृ. **14-15**

[116] वो तेरा घर ये मेरा घर ःमालती जोशी, पृ. **15**

[117] वही, पृ. **16**

देवर से वह प्राय: डरती रहती है।वह तो सारी दुनिया की उपेक्षा सह सकती है,पर पति की उपेक्षा उसे बहूत भारी पड़ती है।

मालती जोशी द्वारा कृत 'मेरे कत्ल में तुम्हारा हाथ था' परिवारवालों द्वारा दी गई यातनाओं के प्रति मानसिक आक्रोश एवं विद्रोह करनेवाली नारी की कहानी है।इसमें सास, ननद और पति की क्रूरता और यातना को देखा जा सकता है।एक समय अपने रूप केलिए, रौब-दाब केलिए, नफासत और आभिजात्य केलिए प्रसिद्ध बीना भाभी अब बेन कैंसर के पकड़ में है।शीतल और भाई उन्हें देखने केलिए अस्पताल पहूँचती है।शीतल के मन में बीना भाभी का कोई ऊँचा स्थान नहीं है।बीना की ननदें-जया और छाया शीतल की सहेली है।वे बीना के बारे में गलत किस्से सुनाती हैं।इसलिए बीना को दूसरों की सहानुभूति भी नहीं मिलती है।भाभी के साथ बातें करती है तो शीतल सत्य को पहचानती है।

जया और छाया हमेशा विसूरती रहती है कि पिताजी उन्हें दूसरों की दया पर छोडकर चले गये है।ऐसी 'इमेशनल ब्लैकमेलिंग' करके प्रमोद की शादी नहीं हो पा रही है।माया की शादी हो गई।पर माताजी जया और छाया की भी शादी के बाद प्रमोद की शादी कराना चाहती है।ताऊजी द्वारा प्रमोद और कालेज अध्यापिका बीना की शादी हो गई।पर माताजी और ननदों के मन में शुरू से यह बात पैठ गई कि ये हमारा हक छिनने आई है।इसलिए सास और ननद आचार विचारों द्वारा बीना से लड़ती हैं।अगर प्रमोद साथ दे तो बेचारी बीना दुनिया की बडी से बड़ी लड़ाई लड़ सकती है।प्रमोद भी उनका साथ नहीं देता, बल्कि उपेक्षा करता है।बीना को पता लगता है उसे अपनी लड़ाई अकेली हो लड़नी है।इसलिए अन्य लोगों से भी कभी ठीक से पेश नहीं आती है।दोनों ननदें बिना पूछे बीना की साडी, लिपस्टिक, नेलपॉलिश या फाउंडेशन लेती हैं।इसके अलावा भाभी के कमरे को ननदें पंचायती कमरा बनाती है।वे वहॉ बैठकर कैरम खेलती, म्यूज़िक सुनती या पढ़ते, पढ़ते बिस्तर पर सो ही जाती हैं।अम्माजी भी बिटिया के साथ बहू को परेशान करती है।मेहमानों को बीना के कमरे में बैठाती हैं, बीना भाभी चुपचाप सहन

करती हैं। इसलिए वह गलत फहमी की शिकार बन जाती है। लेकिन दुर्भाग्य से अब शरीर उसे सर्वाधिक पीड़ा दे रहा है।

बीना के बेटे हैं रोहित और मोहित। जब रोहित पेट में है, तब उसे बहूत तकलीफ होती है। लेकिन सास या ननद के मन में किसी के प्रति सहानुभूति नहीं है। उसके हर तकलीफ को नखरा कहती है। प्रमोद को भी कभी-कभी लगने लगता है कि वह कुछ ज्यादा ही नखरे दिखाती है। बच्चा पैदा होने के बाद दो महीने तक बीना घर में थीं। उसके बादा कॉलेज ज्वाइन किया तो बच्चे की दुर्दशा शुरू हो जाती है। आया को अम्माजी दूसरे कामों में उलझा देती है। दूध या दवाइयॉं तो समय पर कभी भी नहीं देती है। अम्माजी आया पर चोरी का आरोप या बदतमीजी की शिकायत करती है। इसलिए पांच सालों में पच्चीस आया काम कर चुकी है। बीना प्रमोद से बार-बार नौकरी छोड़ने की बात कहती है,नहीं तो बच्चा मर जाने की संभावना है। पर पति तो हर बार हाथ जोड़कर कहता कि सिर्फ बहनों की शादी के बाद इस्तीफा करेगा। बहनों की शादी के बाद इस्तीफा के बारे में कहें तो गुस्से में कर्ज के बारे में कहता है। लेकिन बीना उसका कोई परवाह नहीं करती। वह जया की शादी के तुरंत बाद इस्तीफा देती है। "तुमसे इतना भी सब्र नहीं हुआ। देख तो रही हो, गले तक कर्ज में डूबा हुआ हूँ। पर मैं ने परवाह नहीं की। कह दिया कि तुमने अपनी बहनें ब्याह लीं। अब मुझे अपने बच्चे पालने दो। उस समय मोहित की भी आहट मिल चुकी थी। बस, तय कर लिया था कि जब तक छोटा दस साल का नहीं हो जाता, मैं घर नहीं छोडूँगी।"[118] सुबह से श्याम तक टयूशन करके और रात भर जागकर गाइड बुक्स लिककर वह घर की खर्च भी पूरी करती है। लेकिन अब शरीर तो जवाब दे जाता है।

नारी परिवार की धूत है। शादी के पहले पिता पर, शादी के बाद पति पर और वार्द्धक्य में पुत्र पर वह आश्रित रहती है। किसी की उपेक्षा से उसे जिन्दगी बहूत भारी पडती है। प्रस्तुत कहानी में बीना को उनका पति साथ नहीं देता है, उपेक्षा भी करता है। वह सारी पीड़ायें चुपचाप सहन करती है। अंत में परिवारवालों द्वारा बच्चों की भी उपेक्षा देखकर उसकी अस्मिता को चोट

---

[118] वो तेरा घर ये मेरा घर ःमालती जोशी, पृ. **13**

लगती है।इसलिए पति का सहारा न मिलने पर वह स्वनिर्णय से इस्तीफा देती है, और बच्चों का पालन-पोषण करती है।इसके अलावा ज़्यादा मेहनत कर खर्च तो पूरा करने केलिए पति को सहारा भी देती है।वह मृत्यु से भी भयभीत नहीं होती है।

'बू'

शादी के बाद नारी के सपने में पति और बच्चे होते हैं।पति की आदतें और व्यवहार खराब होने के बावजूद भी वह पति को नहीं छोड़ती।वह सब कुछ सहन करती है और विरोध भी नहीं करती।क्योंकि हिन्दुस्तानी नारी का जीवन पुरूष पर ही आश्रित है।

सविता चड्ढा द्वारा लिखित 'बू' शीर्षक कहानी अपनी अस्मिता केलिए संघर्ष करनेवाली नारी की सशक्त कहानी है।धारा एक सोशल वर्कर है।पति के पुराने दोस्त से मिलने केलिए वह पति के साथ आस्पताल पहूँचती है।वहां मुक्ता-जो धारा की गली कमला नगर में ब्याह कर आई थी- की माताजी से मिलती है।बातचीत के बीच माताजी कहती है कि बेटी मुक्ता को बू आने की बीमारी, कई बरसों से है और वह उसी अस्पताल में है।पति के दोस्त से मिलने के बाद वह मुक्ता को देखने केलिए जाती है।विधा लेते समय धारा अपना विज़िटिंग कार्ड उसे देती है।तब वह अपनी बीमारी के बारे में कहती है।अंधेरा बढ़ जाने पर उसे भयानक दुर्गन्ध का एहसास होने लगता है।धारा और पति घर लौटते है।रात के आठ बजे में मुक्ता धारा को फोन करती है।तब धारा दुर्गन्ध के बारे में पूछती है।कुछ बातें वह कहने की कोशिश करती है।बाकी डायरी में से पढना चाहती है ।जब मुक्ता सत्ताईस बरस की थी और उसे बेटे होनेवाला था तो, एक दिन वह अपने पति को अपनी मेहरी के साथ हम बिस्तर देखती है।उससमय मेहरी के हाथ राख से सने थे।मुक्ता, पति को मेहरी के साथ उसके ही बिस्तर पर देखकर चुप हो जाती है।उसके बाद उसको रोने की बीमारी लग गई।बात-बेबात वह रोती रहती है।मेहरी को अगले दिन ही काम से अलग कर देती है।कुछ दिन बाद वह एक बेटे को जन्म देती है।वह सारे गम भुलाकर उसके लिए जीने लगती है।एक रात पति अपनी गलतियों केलिए मुक्ता से माफी मांगता है।और मनीष, पति के अलावा किसी अन्य पुरूष के साथ शारीरिक संपर्क न करने की

कसम भी लेती है।कुछ दिनों बाद पति और मेहरी की बातें मेहल्ले में सने के कारण वे लोग इलाका छोड़कर एक अच्छी कालोनी में घर ख़रीद लेता है। पति का कारोबार बढ़ जाता है।वह घर से ज़्यादा समय बाहर बिताता है।जब वह लैटता है तब मुक्ता को लगता है कि उनके चेहरे पर मेहरी के हाथों की राख है।और उनके हाथों से बासी सब्जियों की बू आने लगती है।नफरत भरी दृष्टि से मुक्ता पति को देखती है।वह कहती है कि "कई बरसों से मैं जल रही हूँ।अपने पति से मुझे बू आती है।" [119] अब मुक्ता की परवाह न पति करता है और न बेटा भी।बेटा अपने परिवार के साथ मस्त है, जिस बेटे केलिए वह जिन्दगी भर संघर्ष झेलती है।मुक्ता रोते-रोते फोन रख देती है।अगले दिन धारा पति रमेश के साथ नर्सिंग होम पहूँचती है तो वे देखते हैं कि मुक्ता के मूँह के ऊपर तकिया है।तकिया उठाकर छूने पर समझता है कि मुक्ता अब नहीं रही है।मुक्ता की हिलान- डुलाने से नीचे पड़े डायरी में लिखती है कि "अपने रिश्ते के नाम से भी मुझे बू आने लगी है।आज ही मैं ने उन सबको याद किया था।उन्हें मैं और याद करना नहीं चाहती।इसलिए मर रही हूँ।आत्महत्या का कारण बू नहीं, वह काली कलूटी है जिसने इस दुनिया में मुझे ही नहीं कईयों को बरबाद किया है।"[120]

पति द्वारा दी गई यातनाओं के बदले आत्महत्या करती है मुक्ता।कई बरसों से वह विद्रोही भावना को दबाकर अन्दर ही अन्दर घुटती रहती है।डाक्टरों को भी उसकी बीमारी का पता नहीं चलता है।लेकिन वह स्वयं जानती है, इलाज भी करती है।पति के बूरे व्यवहार के कारण उसकी सभी प्रतीक्षाएँ बेटा में है।बेटा भी बड़े होने के बाद निजी परिवार के साथ मस्ती में रहता है और अपने भविष्य निर्माण में व्यस्त हो जाता है।तब मुक्ता घर में उपेक्षित हो जाती है।इसलिए दूसरे लोगों केलिए बोझ न बनना चाहती है।नारी की अस्मिता को संरक्षित करने केलिए वह आत्महत्या करती है।डायरी पति के विरूद्ध सबूत है।

---

[119] नारी अस्मिता व अन्तरवेदना की कहानियॉ ः सविता चड्ढा, पृ. 61

[120] वही, पृ. 62

'बयान'

औरत सारी दुनिया की उपेक्षा सह सकती है। पर पति की उपेक्षा उसे बहूत भारी पड़ती है। बहूत ही स्वप्न और आकांक्षायें लेकर ही वे ससुराल में जिन्दगी शुरू करती हैं। वहॉ पति के साथ अच्छे संबन्ध न होने पर उसको यातनाओं की शिकार होना पड़ता है। यदि पति निष्ठावान नहीं रहता तो हिन्दुस्तानी पत्नियॉ चुपचाप सहन करती हैं। कभी-कभी वह मूक प्रतिशोध करती है या अन्दर ही अन्दर घुटती रहती है। कभी वह मानसिक आक्रोश व्यक्त करती रहती है तो कभी विद्रोह कर उठती है।

डॉ. कामिनी बाली द्वारा लिखित 'बयान' में, पति द्वारा पीड़ा देने पर मूक प्रतिशोध करनेवाली पत्नी की कथा कही गयी है। अपनी अस्मिता केलिए संघर्ष झेलनेवाली है बयान की नायिका नीना। नीना का पति है किशोर। शादी के पहले दिनों में वह नीना के साथ आनन्दपूर्वक रहता है। वह कभी ऊँची आवाज़ में बोलता भी नहीं है। लेकिन पिछले छह माह से उसका रवैया बदलता है। उसने नीना के नाक में दम किया है। न दिन देखता है, न रात, न बच्चों के पास होने की परवाह भी करता है। नीना साधारण नारी की तरह आंसु बहाकर इसके कारण के बारे में सोचती है कि काजी रसूल के सामने अपनी समस्या रखती है। काजी रसूल की चलाई मूठ हांडी या मंत्र कई लोग आजमा चुके थे। नीना को भी उस पर विश्वास है। नीना काजी के आदेश के अनुसार पूजा के सामान केलिए आठ-नौ सौ रूपए इकट्ठा करने में जुड़ी है तो किशोर आकर तलाक देने की धमकी देता है। कुछ दिनों के बाद सरकारी आदमी कोर्ट से आकर एक कागज़ नीना को देता है। दरवाजे की चौखट की लकड़ी भी उसके आंसु पीने लगती है। किशोर ने आखिर गुल खिला ही दिया है। नीना हिम्मत बांधकर कमरे में आती है तो देखती है कि रोशनदान पर से सदियों पुराना चिड़िया का घोंसला अंडों सहित फर्श पर बिखरा पडा है। छोटे-छोटे अधखिले बच्चे लंबी-लंबी सांस लेकर इधर-उधर फुदक रहे है। नीना के बच्चे छोटू और बबली शोर मचाकर इधर-उधर चलते है। नीना को अभी तक चिड़िया के अंड़े के टूट जाने की बदबू आ रही है। दाई आकर सहायता देने की वादा करता है। दूसरी रात एक लावा फूट पड़ा

और बिना ढाई के आए ही सब कुछ शांत हो जाते है।किशोर तो वैसे भी कई रातें बाहर गुजरता है।नीना रात में भी चिड़िया के टूटे अंड़े को याद करती रहती है।नीना सारी रात माथे पर हाथ मार-मारकर रोती रहती है।पांच तारीख को वह समाज सेवक लल्लन के साथ कोर्ट में जाती है।कोर्ट में नीना की आंखें किशोर को ढूँढती है।बारह बजे इनका नंबर आने पर किशोर और वकील कंधे मिलाकर वहाँ आते हैं।नीना दया केलिए किशोर की ओर देखती है।लेकिन वकील नीना पर पराये पुरूष से संबन्ध का झूठा आरोप करता है।नीना सहानुभूति की उम्मीद से किशोर की ओर देखती है।लेकिन उसके होठों पर विजयी कुटिल मुस्कान है।

नीना किसी वकील को न नियुक्त करती है।जज साहब उसे सरकारी वकील देने का वादा करता है तो वह खुद बताने केलिए तैयार हो जाती है।उनके तन और बदन में आग लगते है।तब जज साहब कोई गवाह मांगते हैं तो पम्मी किशार की बगल से उठकर कटघरे में खडी हो जाती है और नीना के विरूद्ध रटे-रटाए नपे तुले वाक्य में गवाही देती है।तब सारा नाटक नीना की समझ में आता है कि किशोर उसे निकालना चाहता है और पम्मी के साथ रहना चाहता है।वह कटघरे में खड़ी होकर बयान शुरू करती है।पहले सच बोलना चाहती है लेकिन उसे हिम्मत नहीं है।किशोर के होठों पर अब भी वही जहर-भरी हॅसी है।तब नीना हिम्मत बांध लेती है।उसकी आंखों की नमी सूख जाती है।वह खुद को संभालकर कहती है कि "सांब आपने जो कुछ सुना सांब वो वाले वकील जो भी बोले, ठकि है सांब पम्मी ने मुझे...देखा था सांब।"[121] जज साहब को लगता है कि नीना कोर्ट की निन्दा करती है।तब वह आगे कहती है "मैंने धोका सांब, शादी कर ली थी सांब।"[122] जज साहब अगाह देता है कि नीना के बयान पर फैसला निर्भर है।इसलिए सोच समझकर बयान देना चाहिए।तब पुरूष की चालाकी के विरूद्ध वह आवाज़ उठाती है कि "जी जज सांब।मैं सच कह रही हूँ किशोर वे तो फरिश्ता है।सांब फरिस्ता।सांब, सांस रोक वह बोली "छोटू, बबाली, मुन्ना इनके नहीं साब।उनके बाप वे नहीं

[121] उस दिन के बाद ः डॉ. कामिनी बाली, पृ. **153**

[122] वही, पृ. **153**

साब"[123] यह सुनकर लोग चौंकते है तो वह कहती है कि "जी, मैं सच कह रही हूँ विलकुल सच।" [124] जज साहब तलाक की अनुमती देता है और बच्चों पर संपूर्ण अधिकार मां को ही देता है।

पत्नी की उपेक्षा करको दूसरी नारी को अपनाने केलिए पत्नी पर झूठा आरोप करनेवाले पति से मूक प्रतिशोध करती है प्रस्तुत कहानी की नायिका नीना। अस्मिता की रक्षा केलिए वह मानसिक और शारीरिक संघर्ष झेलती है। भारतीय नारी की मज़बूरी भी प्रस्तुत कहानी में दर्शनीय है। चिड़िया के अंड़े टूटने के दृश्य से वह प्रभावित होती है। चालाक पति से गिड़गिड़ाने केलिए वह तैयार नहीं हो जाती है। अपनी अस्मिता को खोकर केवल दासी बनकर जीने केलिए वह सन्नद्ध नहीं है। अपने बच्चों पर संपूर्ण अधिकार वह पाना चाहती है और प्राप्त भी करती है।

'ऐसा ही है'

कहावत है नारी का दुश्मन नारी ही है। ठीक है विवाह के बाद सास या ननद नारी को पीड़ा देती हैं। कभी-कभी उसे स्वतंत्र-रूप से जीने नहीं देती है। इसलिए वह कुंठित रहती है। परिवार के बन्धनों के कारण अपनी भावनाओं का दमन भी करती है। कभी-कभी वह तनाव और द्वन्द्व की स्थिति तक पहूँचती है। अंत में वह इन पीड़ाओं के विरूद्ध आवाज़ उठाने केलिए धीरज बन जाती है।

डॉ. महीप सिंह द्वारा लिखित 'ऐसा ही है' कहानी में अस्मिता के बारे में गलत धारणा लेकर जीनेवाली माया जोशी को देख सकते है। माया की मां बचपन में मर गयी। वह अपने बाप को अपनी सौतेली मां के पति के रूप में देखती है। भाइ-बहन तो उसे ऐसे लगते है जैसे दूसरे दर्जे के अनरिज़र्व डिब्बे के यात्री हो, कभी थोडी-सी जगह केलिए झगड़ पड़नेवाले, कभी सीट पर बैठे-बैठे रात में उँघते हुए साथ बैठे यात्री के कंधे-पर सिर टिका देनेवाले। इसके अलावा एक और बात भी उसके मन में बचपन से ही बैठ गई है कि संसार में रिश्ता नाम की कोई चीज़

---

[123] उस दिन के बाद ः डॉ. कामिनी बाली, पृ. **153**

[124] वही, पृ. **153**

नहीं है। ये बनते और बिगड़ते रहते हैं। कोई असली चीज़ है तो वह 'स्व' है। उसी को तृप्त करने केलिए और उसी को जिन्दा रखने केलिए इस दुनिया में सभी काम करते हैं। बड़ी होने के साथ-साथ उसे लगा कि वह बहूत आकर्षक है और उसके पास ऐसा कुछ है जिसे लूटने केलिए बहूत से लोग इधर-उधर मंडरा रहे है।

कॉलेज में इतिहास पढानेवाला लेक्चरर मोहन जोशी के साथ उसका विवाह हुआ। पति के बारे में उसके मन में ऐसा विचार है कि पति कोई बडी महिमाशाली चीज़ नहीं है। अनेक कारणों से जिन्दगी में उसकी ज़रूरत होती है। वह एक बहूत अच्छा सुरक्षा कवच है, दूसरे को 'मीट माय हास्बैंड' कहकर परिचय कराने केलिए उसकी ज़रूरत होती है। इसके अलावा पति कोई बहूत 'लिफ्ट' देने की चीज भी नहीं है। ऐसे विचारोंवाली माया मां बनने के झंझट में नहीं पड़ना चाहती है।

माया को हमेशा लगती है कि मोहन उसे लूटना चाहता है। उन दिनों में माया को एक मल्टीनेशनल कंपनी में अच्छी नौकरी मिलती है। कभी-कभी वह अपनी और मोहन की नौकरियों से तुलना भी करती है। कंपनी द्वारा दिये गये कार और बढ़िया फ्लैट का इस्तेमाल मोहन करते वह डरती है। दीपन के जन्म के बाद वह महसूस करती है कि दीपन तो बिल्कुल अपना बाप जैसा लगता है। उसकी आदतें भी अपने बाप जैसी ही है। इसलिए दीपन ने सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षा पास कर ली तो माया दिपू से खुद कमाने, कोई जाते फेंड बनाने और अपनी ही फ्लैट खरीदने का सुझाव देती है क्यों कि यूरोप में ऐसा ही होता है। वहां लड़का या लड़की अठारह साल के होते हुए खुद अपने पैरों पर खड़े हैं, अपने गर्ल या ब्याय फ्रेंड बनाते हैं और अपना घर अलग लाते हैं। वह बिल्कुल किसी कंपनी ऐक्जीक्यूटिव की तरह बोलती है।

अब दीपन इतना कमाने लगता है कि अपनी पढाई का खर्च भी पूरा कर लेता है साथ ही टूथ पेस्ट, नहाने का साबून या नया कपड़ा का बोझ भी वह खुद उठा सकता है। माया के रिटायर होने के बाद कुछ लाख रूपए हाउसिंग बोर्ड में जमा करके दिपू केलिए एक फ्लैट खरीदती है और बड़े धूमधाम से उसकी शादी भी करती है। हनिमून के बाद दीपन और शालू घर में आते है तो माया अपने घर में वापस जाने केलिए तैयार हो जाती है। यहां रहने का सुझाव देने

पर भी वह लौटती है। लौटते समय माया एक कागज़ दीपन को थमाती है। वह तो कई लाख का हिसाब है। फ्लैट केलिए दिये हुए रूपए, फर्नीचर फिकच्चर की बनवाई पर आय हुआ खर्च, शादी के दिनों में साड़ियों पर किया गया खर्च और अम्त में हनिमून पर जाते समय दिये पांच हज़ार रूपए का हिसाब है। इसके अलावा वरी में रखे अपनी कीमती जड़े सोने के तीन सेट भी शालू से वापस लेती है और अपने घर लौटती है।

जब शालू मां बनने के लक्षण दिखाती है तो शालू की मां आकर सारा काम संभाल लेती है। शालू की मा, बाप, भाई और दीपन आपस में खुसर-पुसर भी कर रहे है। शालू के प्रसव के एक दिन पहले माया भी आती है। लेकिन उसको करने केलिए कुछ भी नहीं है। सारी बागडोर शालू की मां के हाथों में है। माया से कुछ भी पूछा नहीं जा रहे है। माया कोध से उबलती है। एकाएक वह फूट पडी है कि बेटे के घर में उसका अपमान हो रहा है। तब शालू, जो सास से मानसिक और शारीरिक पीड़ा सहती है, करवट बदलकर और ओढ़ी हुई चादर उतारकर बोलती है "आप शायद ये सब काम कर ही देती... और बाद में लंबा-चौड़ा बिल थमा देती।"[125] यह सुनकर अपमानित होकर वह वहां से रोते हुए उतरती है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका माया जोशी नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व पर आस्था रखनेवाली है। पति को परमेश्वर माननेवाली प्राचीन विचारधारा के मिथ को वह तोड़ देना चाहती है। वह अपने व्यक्तित्व को पुरूष के व्यक्तित्व से अलग करके देखती है और अपना जीवन जीती है। अंत में उसकी अस्मिता का चिन्तन गलत राह से चलता है तो उसकी बहू उन गलत धारणाओं को खत्म कर देती है।

'कील'

भारत में शादी की उम्र, पुरूषों केलिए इक्कीस और स्त्री केलिए अठारह है। अब चर्चायें और विवाद भी चल रही है विवाह के आयू के बारे में। कुछ लोग शादी केलिए पुरूषों की उम्र भी अठारह बनाना चाहते हैं। यह भी सत्य है कि जब उम्र के साथ-साथ अनुभूति होती है तब

---

[125] मधुमती ः अप्रैल **2008**, पृ. **72**

उसका समाधान न हो तो बाद में विकृति का रूप धारण कर लेती है।कभी-कभी समाज में वैयक्तिक, आर्थिक या सामाजिक कारणों से सही समय पर शादी संभव नहीं हो पाती है।

महीप सिंह द्वारा लिखित 'कील' विवाह पूर्व अस्मिता की तलाश करनेवाली नारी की सशक्त कहानी है।नायिका मोना अपने पिता के साथ रहती है।उसकी मम्मी गांव में रहती है।पिता के अगे मम्मी की कुछ नहीं चलती।मोना डैडी से लगातार सुनती आ रही है कि वह कोई मामूली लड़की नहीं है।

मोना की उम्र छब्बीस हो जाती है।किन्तु उसकी शादी नहीं हो पाती।पिता बराबर कहते है कि वह कोई मामूली लड़की नहीं है।वह चाहता है कि मेाना अधिक पढ़े, लिखे बड़ी बने और उसे अच्छा वर मिले।कभी-कभी अपने मित्रों के सामने मोना की प्रशंसा भी करता है।वह मामूली लड़की नहीं और उसके लिए मामूली लड़का नहीं चाहिए।चाहने पर भी मोना को अधिक पढ़ने का अवसर नहीं मिलता है।अब उम्र इतने होने पर भी शादी नहीं चलती है।पिता इसमें बाधा बनाते है।इसलिए उसको अपनी भावनायें एवं इच्छायें दबाकर रखनी पड़ती है।वह मन ही मन आक्रोश करती है कि "आखिर वह गैर-मामूली लड़का मिलेगा कहॉ? कब? उसे कौन ढूँढकर लाएगा? या एकाएक वह किसी अवतार की तरह प्रकट हो जाएगा? मम्मी लिखती है, लड़की वह फूल है जो ज़्यादा देर डाल पर लगे रहने से मुरझा जाता है।क्या वह भी मुरझा जाएगी।"[126] उसे अपने चारों तरफ कुछ नज़र नहीं आता।उसकी मम्मी उससे फैसला मांगती है कि वह किससे शादी करना चाहती है।इस पर वह सोचती है कि "फैसला? किसे करना है फैसला? उसे? क्या उसे फैसला करना है? कौन करता है फैसला?" [127] फैसला मांगनेवाली मम्मी का पत्र डैडी देखता है और मोना से पूछता है कि क्या वह सुरेश से शादी करने केलिए तैयार है जिसमें कोई खास बात नहीं है।क्या वह अपनी मर्जी के खिलाफ यह फैसला कर लेती है या

[126] दस प्रतिनिधि कहानियॉ महीप सिंह, पृ. **31**

[127] वही, पृ. **32**

अपनी मां की इच्छा की पूरी करने केलिए। तब मोना कहती है कि "नहीं डैडी, यह फैसला मैं ने खुद किया है।"[128]

विवाह होने में देरी हो जाने के कारण मोना को अपनी भावनायें एवं इच्छायें दबाकर रखनी पड़ती है। और इसके विरूद्ध आक्रोश मन ही मन व्यक्त करती है। प्रस्तुत कहानी में नारी पिता के संदर्भ में अपनी अस्मिता की तलाश करने लगती है। वह अपने अनुरूप जीना चाहती है लेकिन उस तरह जी नहीं पाता तब वह अपने परिवेश में अपने अस्तित्व की तलाश करती है।

'सहचरी'

हिन्दुस्तान में नारी का सबसे प्रमुख कार्य माना जाता है गार्हस्थ धर्म का सही रूप से पालन करना। प्रस्तुत धर्म में सफलता प्राप्त करने केलिए उसे विवाह रूपी पुल पार करना पड़ता है। नारी परिवार या मुख्यत: पति की महत्ता केलिए आत्मसमर्पण करती है। पुरूष के साथ ऐसा कोई बन्धन नहीं है। शादी के बाद अनिच्छा होती तो पति शंकालू दृष्टि से पत्नी को देखता है। ऐसी स्थिति में 'तीसरे' की उपस्थिति संभव्य है। इससे पति और पत्नी के बीच तनाव उत्पन्न होता है। कभी-कभी नारी को प्रस्तुत तनाव अधिक झेलना पड़ता है। इससे पारिवारिक जीवन दुष्कर बन जाता है।

डॉ. कामिनी बाली द्वारा लिखित 'सहचरी' नारी अस्मिता की एक सशक्त कहानी है। कथानायिका 'मैं' है। शादी के बाद उसे लगा कि विवाह जीवन की सबसे बड़ी हार है। इसके अलावा वैवाहिक जीवन तो फूलों की सेज नहीं बल्कि पत्थरों का शहर है। वह परंपरागत विचारोंवाली है। इसलिए मा-बाप द्वारा चुने गये नर के सामने वह सिर झुकाती है। अब उसे लगता है कि यदि मर्जी से शादी कर लेती तो कम से कम संतोष ही मिलता है। 'मैं' का प्रेमी लगातार उससे गिड़गिड़ाता है। लेकिन परंपरा से बुरका के भीतर रहनेवाली 'मैं' उसे अनसुना करती है। वह सोचने लगती है कि वह खंडहरों में भटकती प्रेतात्मा बन गई है। पति के क्रूर व्यवहार पर वह बहेलिए के जाल में फड़फड़ाती चिडिया की तरफ तड़पती है और पंखों के

---

[128] दस प्रतिनिधि कहानियॉ महीप सिंह, पृ. **32**

परखचे आंधी से इधर-उधर फैल जाते है। आत्मा भी कोढ़ी हो जाती है। 'मैं' की बूरी हालत पर परिवारवाले दुखी हो जाते है। लेकिन सहताप से क्या फायदा, भुगतना तो केवल उसी को पड़ता है।

प्रेमी इस दुनिया से पंखें उड़ाकर चला जाता है। उसकी पत्नी अनुष्ठा दृढ़ व्यक्तित्व वाली है । 'मैं' की हालत को देखकर, वह अस्पताल के बहाने एक वकील के पास ले जाती है। कुछ दिनों के बाद पति के पास वकील का नोटीस पहूँचा तो सारा परिवार सकते में आ जाता है। हितैषी, सहायक, बिरादरी, दोस्त, दुश्मन, गवाह, पैरती आगे वह कई तरह के चेहरे देखती है। अनुष्ठा के बल पर वह शकुनी, कौरव-पांडव के समक्ष द्रौपदी बन जाती है। घर में पुलिस छापा मारकर फ्रिज से एल. एस. डी. की गोलियां लेते है तो आत्ममुग्ध और भ्रष्ठ पति भीतर आश्वस्त करता है कि 'मैं' को उसकी हरकतें मालूम नहीं है। अनुष्ठा की मैत्री वह पसंद करती है क्योंकि उसने साबित कर दिया कि स्त्री परिवार की शक्ति है, रीढ़ की हड्डी है, उसके सहयोग के बिना पारिवारिका समस्यायें भीषण रूप धारण कर लेगी। मैं सोचती है कि "कई बार लगता है मध्यवर्गीय परिवार में स्त्री क्रान्ती समर्थक कैसे बनेगी? वह तो अंततोगत्वा केवल शब्दजाल है, भविष्य का एक धुंधला स्वप्न है, जीने केलिए टिमटिमाती रोशनी मात्र है।"[129]

वकील के दफ्तर पहूँचती है तो वह चपरासी को बाहर भेजकर 'मैं' से बैठने को कहता है। कमरे में कुर्सियां और सोफासेट पड़ते है। कुर्सियों पर, मोटी-मोटी किताबें पड़ने के कारण 'मैं' सोफे पर बैठती है। कुर्सियों पर किताबें रखना उसकी कुटिलता का ही हिस्सा है। वहीं वह भी 'मैं' के पास बैठ जाता है और धीरे-धीरे सटने लगता है। वकील भी 'मैं' का शोषण करने लगता है। वह सोचती है कि "बूढ़ा खुसट पुरूष तो पुरूष है, चाहे आठ का हो, चाहे अस्सी का।"[130] एक पुरूय की ज्यादतियों से छुटकारा पाने केलिए दूसरे को सहन करना पड़ता है! वकील की आंखें काली बिल्ली की तरह अंधेरे में चमकती हैं। 'मैं' को लगता है कि सांप से बचने केलिए

---

[129] उस दिन के बाद ः डॉ. कामिनी बाली, पृ. **153**

[130] वही, पृ. **159**

शेर की मांद में वह आ गयी है।किसी न किसी राह से वह प्राण बचाती है।अनुष्ठा द्वारा फोन कर समय तय कर लेने से 'मैं' जज साहब को केस समझाने केलिए जाती है।केस समझने के बाद जज साहब भी उससे सब कुछ मांगते है।उसी भयानक वातावरण से भगवान की या अनुष्ठा की कृपा से वह बचती है। 'मैं' गांधिजी की आत्मकथा पढ़ती और उससे ऊर्जा प्राप्त करती है।गांधिजी जो पहले कमजोर थे और बाद में व्यक्तित्व की दृढता से साहसी, आत्मविश्वासी और शक्तिशाली बन जाते है। 'मैं' सोचती है कि वह भी गांधिजी की तरह है क्योंकि "मैं अपने को कभी दृढ़ नहीं पाती, परन्तु उनके प्रभाव से आत्मविश्वास ज़रूर संजोती हूँ।कहीं हार नहीं मानती हूँ।पहली बार कोर्ट में जाते हुए मुझे गांधिजी की याद आई परन्तु वापस लौटते समय उनके व्यक्तित्व के रूपांतरण का स्मरण कर मेरी गर्दन झुकने की जगह तन गई।मैं भी सत्य की लड़ाई में कूढी हूँ।अत्याचार सहनेवाला भी उतना ही दोषी होता है।"[131] सब जगह अनुष्ठा मिलनेवाला गुजारा भत्ते बैंक में जमाकर, एक दूसरे की हमदर्द 'मैं' और अनुष्ठा एक साथ रहती हैं।

प्रस्तुत कहानी में पति-संस्था के विरूद्ध आवाज़ उठानेवाली नारी को देख सकते है।दूसरी स्त्री की सहायता से वह पति के अत्याचारों के विरूद्ध अदालती कार्वाइयां करती है।अत्याचार के विरूद्ध आवाज़ उठाने पर नारी को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।उसके परिवारवाले भी उसे पीछे हटाने का प्रयास करते हैं।वकील, जज, पौरवी ...उसका शोषण करने लगते हैं।फिर भी अम्त में नारी की विजय होती है।यह तो नारी अस्मिता की ही विजय है।

'ढलान पर'

विवाह स्त्री और पुरूष को स्नेह के बन्धन में डालता है।परंपरागत पत्नी विवाहोपरान्त पुरूष की आज्ञाकाारी बनती है।किन्तु शिक्षा और पाश्चात्य संस्कारों के फलस्वरूप आज की पत्नी पुरूष के आगे पूर्णतया झुकी नहीं है अपितु उसने आत्मसजग होकर अपने व्यक्तित्व को

[131] उस दिन के बाद ः डॉ. कामिनी बाली, पृ. 161

विकसित करने की कोशिश की है। वह पुरूष की भोगवस्तु या केवल बच्चों की मां बनना नहीं चाहती। आज वह स्वयं के प्रति जागरूक है और अपने व्यक्तित्व का पहचान भी चाहती है। अपनी अस्मिता की बचाव करना चाहती है।

'ढलान पर' राजी सेठ की स्त्रीवादी कहानी है। प्रस्तुत कहानी की नायिका चारू लेखिका के सामने अपनी बातें व्यक्त करती है। चारू और चेतन का प्रेम विवाह हुआ था। कुछ दिन बीत जाने पर चारू को लगता है कि विवाह के बाद चेतन काम में अधिक व्यस्त होता है और इससे चारू की ओर लापरवाही होती है। चारू को लगा कि वह अकेली होती है उसे पहलेवाला चेतन चाहिए था। उसे लगा कि वह उपेक्षिता भी है। लेखिका चारू को सांत्वना देने की कोशिश करती है। लेकिन चारू को इससे आश्वासन नहीं मिलता। उसका सतत वही उत्तर होता है, "तो फिर व्याह कर क्यों लाया? ऐसी क्या उतावली थी? काम...काम...काम.. हर समय वही सब लदा रहता है, पूछे तो कहेगा बाहर इतनी बड़ी दुनिया से मुकाबला है, तुम वहॉ खडी होती तो जानतीं। वह तो कहता है जो समय उसे परिवार शुरू करने से पहले चाहिए था वह तक उसे नहीं मिला...ऊपर से मैं उसे पालतू बनाने पर तूली हूँ" [132] फिर लेखिका निष्पक्ष होकर उससे कहती है कि उसको चेतन के संघर्ष को अपना संघर्ष समझकर किसी अन्य काम में मन लगाना है। लेकिन उसमें उसे रूचि नहीं लगती। चारू को प्रेम से भरी हुई जिन्दगी चाहिए, इसका अभाव होने से वह खीजती है।

पति-पत्नी का मां-बाप बनना परिवारवालों और मित्रों केलिए खुशी की बात है। चेतन की परिवारवाले भी चाहती है कि चारू मां बने लेकिन चारू इसकेलिए तैयार नहीं होती। प्रेम की चाहत की पूर्ती केलिए सभी लोग ब्याह करती हैं। पति-पत्नी को एक दूसरे की भावनाओं को समझकर पूरक होना चाहिए। यदि इसमें कोई बाधा आती है तो रिशता भी टूट जायेगा। चारू को चेतन का प्यार पूर्ण रूप से नहीं मिलता है। उसे लगा कि ब्याह होने पर भी वह अकेली है तथा उपेक्षणीय भी है। स्वाभिमानी चारू यह चुपचाप झेलने केलिए तैयार नहीं है। दूसरे शब्दों में, वह

---

[132] यात्रा मुक्त ःराजी सेठ, पृ. **42**

केवल मशीन बनना नहीं चाहती।वंश का जुआ उठानेवाला बैल भी नहीं बन सकता।उसे प्यार चाहिए।ज़रा सी नहीं, पूर्ण रूप से मिलना चाहती है। "हूँ या नहीं, मैं इसे लेकर नहीं बैठी।है तो ठीक...नहीं है तो भी ठीक ।उनके वंश का जुआ उठानेवाला बैल नहीं हूँ मैं।लाये और एक घर में स्थापित कर दिया, जैसे में इंसान को नहीं, घर को ब्याही गयी हूँ।घर तो वहाँ भी था...।"[133]

अनेक दिनों के बाद वह लेखिका के यहाँ फिर आती है।बीते हुए दिनों में लेखिका बार-बार सोचती है कि चारू को पत्र डाल देना या चेतन को बुलाकर इसके बारे में बात करना।अब चारू का मुँ ह देखकर लेखिका को लगता है कि वह इस बार तनाव से मुक्त है।उसमें बौखलाहट और गुस्सा भी नहीं था।वह बहूत बदल गई थी।बच्चों से खेलती और खाना भी खाती।लेखिका के यहाँ आकर सो गई, उठी तो इधर-उधर की बातें करने लगी।शाम को चेतन लेने केलिए आया था।चेतन लेखिका से बातें करते समय चारू ने फिर कहा "यह बातें इन्हें ही क्यों, मैं सबको बताने की तैयार हूँ कि यू निगलेक्ट मी।"[134] चेतन चाय पीने केलिए तैयार नहीं, उसे जल्दी लौट जाना चाहिए।वह चारू का घर छोड़कर कीलाबा वापस वाना चाहता है। "चारू के चेहरे के कड़े से खोल पर एक विजित भाव बिछ गया, शायद चेतन को बुला पाये होने की विजय।ऐसे मात्र देह को खींच लिये होने की परितृप्ति।"[135]

लेखिका चारू को चित्रकार नलिन देवे के साथ किसी रेस्तरों में देखती है।लेखिका को चारू का किसी कलाकार के साथ बैठे होना साधारण बात लगा, दोनों में ज़रूर कोई संबन्ध है।वह सोचती है शायद चारू ऐसे व्यक्ति की तलाश में है जो उसे सम्मान दे, साथ दे और उसके व्यक्तित्व को पहचान दे।पांच-छ: दिन के बाद लेखिका को एक पत्र मिला।चारू का पत्र देखकर लेखिका को लगता है कि चारू बहूत बदल गई थी, उसका व्यक्तित्व प्रेम से भरा हुआ है।लेखिका को आशंका होती है कि यह 'प्यारा' परिवर्तन देव के कारण आया है।

---

[133] यात्रा मुक्त ःराजी सेठ, पृ. 44

[134] वही, पृ. 48

[135] वही, पृ. 48

चेतन चारू की तलाश में लेखिका के यहां आता है। लेखिका झूठ ही कहती है कि वह अभी-अभी यहां से गई है। चेतन के जाने के बाद वह चारू को फोन से सूचना देती है और उसके परिवार को बचाने का प्रयत्न भी करती है। अस्मिता को चोट पहूँचने पर क्षुब्द और निराश नारी की कटू प्रतिकियाओं का चित्रण प्रस्तुत कहानी में हुआ है।

पति-पत्नी एक दूसरे की भावनाओं को पूरी तरह समझना वैवाहिक जीवन की सफलता केलिए बहूत ज़रूरी है। चारू को प्रेम से भरी हुई जिन्दगी चाहिए। वह ऐसे व्यक्ति की तलाश में है जो उसे सम्मान दे, साथ दे और उसके व्यक्तित्व को पहचान दे। वे ये सब चेतन से चाहती थी परन्तु चेतन इसमें असफल रहा। इसलिए वह ऐसे व्यक्ति की तलाश करती है और अंत में नलिन देव पर ऐसे व्यक्ति का पहचान भी हुआ है। चारू स्वाभिमानी लड़की है। वह अपनी अस्मिता को पहचानती है। वह केवल आज्ञाधारक पत्नी, बच्चों की मां या पुरूष की भोगवस्तु न बनना चाहती है। इसलिए ही वह सही गलत की परवाह के बिना अपनी मनचाही जिन्दगी जी रही है। यह उसकी अस्मिता की विजय भी है।

'तीसरा पेंच'

भारतीय समाज व्यवस्था पुरूषों द्वारा निर्मित है। इसलिए उसने समाज के नियमों को अपने अनुकूल बनाया है। लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा और संस्कृति में परिवर्तन होने के कारण नारी जागृत होने लगी है। नारी में नारी चेतना का विकास भी तेजी से होने लगा है।

मेहरून्निसा परवेज़ द्वारा लिखित 'तीसरा पेंच' कहानी में अस्मिता केलिए प्रयत्नशील नारी की विवशता और घुटन देखने को मिलती है। कथानायिका एक दिन प्रोफेसर देव के घर पहूँचती है वह प्रोफेसरों के एक ही तरह के बने क्वार्टर्स में रहता है। कथानायिका दरवाज़े पर खटखटाया और खिड़की के पास मुँह कर पुकारा। उसे अपने आगमन पर दु:ख हो रहा था। वह सोचती थी कि जाने कौन-सी प्रेरणा उसे खींच लायी थी। अंत में देव दरवाज़े पर आ गया। देव के कपड़े देखकर नायिका को सर्कस के जोकर की याद आयी और उसने हंसी को दबाया। उसके आने से देव के चेहरे पर प्रसन्नता का कोई लक्षण नहीं है।

प्रोफेसर देव वस्तुत: दो बार शादी कर चुका है।पहली पत्नी से उसने तलाक किया।दूसरी पत्नी है शीला।शीला का पुराना प्रेमी अचानक अमेरिका से लौट आकर उसकी हत्या की।तीन बच्चों को और अपनी बूढ़ी मां को देव बोझ समझता है और उन्हें साथ रखने केलिए तैयार नहीं होता।इसलिए वह घर में अकेले रहता है।नायिका देव से पहले पत्नी को बुलाने को कहा।तब देव कहते है कि उससे तलाक हो चुका है।तब नायिका कहती है कि "तो क्या हुआ? फर्क क्या पड़ता है, संबन्ध तो मन बनाता है, पहले तुम्हारा-उसका झगड़ा था, पर अब दोनों के मन साफ हो गए होंगे।क्या तुम भी समाज के बनाये बन्धन को संबन्ध कहते हो" [136] वह अपनी पहली पत्नी को वापस लाने के लिए तैयार नहीं है।और अपने घर आयी कथानायिका की ओर आकर्षित हो जाता है।विवाह संबन्धी सामाजिक नियमों को मानने केलिए वह तैयार नहीं है।

देव का घर सुन्दर और सज-संवरे थे।ये सब देखकर कथानायिका उसकी पत्नी बनने की बात सोचती है। "क्या फर्क पड़ता है? भूकम्प आते हैं, कच्चे मकान गिर जाते हैं, पर मलबा हटाकर नयी इमारत भी तो बनाई जाती है।क्यों न कब से बने इस नक्शे पर मकान बना ही लिया जाये? इसकी दूसरी पत्नी भी नौकरी करती थी, वह भी करोगा।पर इसके साथ पत्नियों का भाग्य क्यों नहीं जुड़ा? क्या हुआ, कभी दो पेच से ढक्कान नहीं बैठता, पर तीसरे पेच से बैठ जाता है।"[137] यह बात सुनकर देव का उलझा सा चेहरा साफ हो गया था।देव ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया।और कहा कि "तो मैं समझूँ कि तीसरी गली भी इस सड़क से मिलनेवाली है। "[138] वह आंखें नीचे किए हंस दी।देव का चेहरा खिल पड़ा।उसने उसके कंधे को ज़ोर से दबाया'। प्रोफेसर देव कमरे में चलने का आदेश किया।लेकिन देव के आचरण और बातचीत से उसे खुशी नहीं होती।वह बाथरूम में जाने का बहाना बनाती है।बाथरूम से तुरन्त निकलकर उसने अपना चेहरा कठोर बना लिया।लेकिन देव बहूत प्रसन्न लग रहे थे।तब उसने

---

[136] एक और सैलाब : मेहरून्निसा परवेज़, पृ. **32**

[137] वही, पृ. **34**

[138] वही, पृ. **35**

चिढ़कर पूछा कि "इतने प्रसन्न क्यों हो?"प्रसन्नता इस बात की है कि तीसरी गली पर अब अपना आखिरी मकान बनेगा। "[139] उसने उत्तर नहीं दिया और बिगड़कर देव के घर से जल्दी निकल पड़ी।

नारी शिक्षा और समाज के बदलते मनोभाव ने नारी चेतना को जगाया।लेकिन आज भी नारी पढ़ी-लिखी होने पर भी पुरूष लोगों से कष्ट भोगने केलिए विवश है।उत्तराधुनिक युग में भी वह अपनी अस्मिता की पहचान केलिए प्रयासरत है। 'तीसरा पेंच' की नायिका भी नौकरीपेशा पुरूष से कष्ट भोगती है।लेकिन वह अस्मिता को पहचानती है और देव के घर से जल्दी ही लौट जाती है।

'छुटकारा'

विवाह-पूर्व संबन्धों में भी नारी अपनी अस्मिता की खोज करती है।स्त्री-पुरूष का परस्पर आकर्षण जहॉ सहज है वहॉ एक-दूसरे से संबन्ध स्थापन की प्रकिया भी सकिय है।प्रेम करने से पूर्व अपने निजी अस्तित्व की तलाश को नारी ने महत्व दिया है।पुरूष की परंपरागत दृष्टि और नारी की बदली हुई मन: स्थिति के बीच टकराहट से अस्मिता की तलाश गहरे स्तर तक पहूंचती है।पुरूष प्रेम पाना चाहता है किन्तु नारी उस प्रेम में पड़कर समर्पण करने से पूर्व, प्रेमी में वास्तविक प्रेम और अपने निजी अस्तित्व को खोजना चाहती है।

ममता कालिया की 'छुटकारा' की नायिका विवाह-पूर्व अस्मिता की तलाश करनेवाली नारी है।वह प्रेमी में असली प्रेम को खोजती है।नायिका और प्रेमी बत्रा एम. ए. केलिए एक ही कक्षा में पढ़ रहे थे।वे काफी समय दोस्त चले आ रहे हैं।कभी वह सोचती है कि वे दोनों प्यार करते है और कभी सोचती है कि नहीं।पर प्यार नहीं किया जा सकता क्योंकि दोनों के स्वभाव में काफी भिन्नता होती है।" मैं बत्रा को हमेशा सात सिगरेटों के बाद रोक देती थी।अधिकतर तब हम फिर कॉफी या टोमाटो जूस मॉगते थे।बत्रा को आठवीं सिगरेट जलाते देख मुझे खुशी

[139] एक और सैलाब : मेहरून्निसा परवेज़, पृ. **35**

हुई।सिर्फ दोहराने केलिए दोहराना ऐसा जाता है जैसे पहाड़ें रट रहे हो।"[140] लेकिन एक दूसरे से इस प्रेम के बारे में खुलकर कहने में असमर्थ है।" मैं जानती थी, वह स्वयं नहीं कहेगा।उसने कभी किसी से कुछ नहीं मांगा।जब उसने फोन किया था तब ज़रूर मुझे महसूस हुआ था कि वह एक मांग के रूप में आज का समय चाह रहा है।मैं ने अपने आपको इसके विरूद्ध तैयार कर लिया था।यह एक शर्त थी, जिसे मन में रखकर मैं यहॉ आ गयी थी।पहले कुछ मिनटों में मुझे बत्रा जांच पड़ताल विभाग का अधिकारी लगा था फिर मैं ने पाया हम दोनों हर बार उस 'मांग' को जलाकर जा रहे थे और अपने आप में और उद्विग्न हो गए थे।"[141] वह अपने प्रेमी से न जुड़ पाने और जुड़ पाने की स्थिति का विश्लेषण करती हुई कहती है "मैं चाहती थी, वह ऐसे अकेला न हो, वह उसकेलिए मैं कुछ नहीं कर सकती थी।किसी के अकेलेपन का मर्म समझकर भी उसे बॉट न सक पाना करूण होता है।इतना गीलापन हमारे स्वभावों के विपरीत था।"[142] इस प्रकार वह अपने प्रेमी से छुटकारा पा लेती है।यह उसकी अस्मिता का सबूत है।

'नालायक बहू'

विवाहित नारी का जीवन पुरूष पर ही आश्रित है।किसी भी परिस्थिति में नारी अपनी जिन्दगी को पति से अलग नहीं कर पाती है।कभी-कभी ससुरालवाले उसे कोसती है, शारीरिक और मानसिक पीड़ायें देती हैं।ऐसी स्थिति में भी वह पति के प्रति निष्ठावान रहती है।इसके अलावा वह प्रेम, त्याग, सेवा आदि भावनाओं को वैवाहिक जीवन में महत्व देती है।

मंजुल भगत की कहानी 'नालायक बहू' की कामिनी अपने घर, परिवार और सामाजिक मर्यदा केलिए हर प्रकार का कष्ट भोगती है और त्याग करती है।छुट्टी के दिनों में ननद सुजाता जीजी आती है।उसे देखकर अम्मा भागकर आती है और कामिनी से बच्चों को खाना देने का

---

[140] ममता कालिया की कहानियॉ ःममता कालिया, पृ. **55**

[141] ममता कालिया की कहानियॉ ःममता कालिया, पृ. **55**

[141] वही, पृ. **56**

[142] वही, पृ. **56**

आदेश देती है। सुजाता के पति मेहनतकश सज्जन पुरूष थे, मितभाषी और हर व्यक्ति को यथोचित मान देनेवाले भी।लेकिन सुजाता उसे मान का पात्र नहीं मानती।

कामिनी के पति शेखर की नौकरी छूट जाती है।उन दिनों में सास और ननद उसे अधिक परेशान करती हैं। लेकिन कामिनी पति की मर्यादा और अस्तित्व की रक्षा केलिए सब कुछ चुपचाप सहकर जीवन बितातीा है।दीवाली के दिन में सब कुछ भूलकर कामिनी सजने की ठानी देखकर अम्मा और ननद चौंक जाती हैं और परिहास करती हैं।कामिनी का मन टप से बुझ गया।बोली, "जीजी आज त्योहार के दिन गृहलक्ष्मी ही यदि मनहूस सूरत बनाये फिरे तो फिर जीवन में शुभ हो ही क्या सकता है? और फिर नौकरी छूटी है, जीवन तो शेष ही है।"[143] इसप्रकार प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह धैर्य और साहस का परिचय देती है।

कामिनी का पति शेखर बेकार हो जाने से सास दूसरे बेटे के पास जाने का निर्णय लेती है।तब कामिनी का अन्तस्तल कचोटने लगता है।वह सोचने लगी कि "तुम मां हो न! इसी से एक बेटे की शेखी न बघार पाने पर दूसरे की बखान सकती हो।मैं पत्नी हूँ न, और पति तो दा- चार होते नहीं, इसी से इकलौते पति की कमियों को लेकर भी जीने का प्रयत्न कर रही हूँ।"[144] यही है मां और पत्नी की प्रतिबद्धता का अंतर।दस रोज़ बाद अम्मा कानपूर चली गयीं।कामिनी ने पीतल के सजावटी खिलौने बेचकर रसोई का कार्य संभाला।शेखर इधर-उधर से कुछ रूपए उधार लेकर लाया है।एक बार मायके से पिताजी, बेटी और दामाद को देखने केलिए आया।कामिनी ने सभी बातें छिपाने की कोशिश की।जाते समय पिताजी काम्मिी को एकदम चार सौ रूपए दोने लगे।अभिमानी कामिनी इतने बड़े रकम स्वीकार करने केलिए तैयार नहीं है।कुछ दिनों के बाद अम्मा और पिताजी का खत मिला।अम्मा के खत में घर किराये पर देने की बात है तो पिताजी के खत में कामिनी को एक नौकरी मिलने की बात है।

पिताजी द्वारा दिया गया 'बहादूर' की उपाधी ने उसमें शक्ति और आत्मविश्वास की भावना भर दी।वह पति से अनुमती मांगती है और सास की इच्छा के विरूद्ध नौकरी करने का

---

[143] गुलमोहर के गुच्छे ःमंजुल भगत, पृ. 29

[144] वही, पृ. 31

निर्णय लेती है और गृहस्थी संभालती है। आत्मनिर्भर बनकर वह आत्म सम्मान की जिन्दगी जीती है। कामिनी भाई के ब्याह में भाग लेने केलिए अकेले मायके जाती है। दो दिन के बाद लौटने का इरादा है। उस एकाकीपन के समय शेखर ने एक ट्रांज़िस्टर बनाकर वर्मा की दूकान पर बेचने केलिए रखते है। यह कार्य भी अम्मा को पसन्द नहीं आया। सुजाता जीजी ने अम्मा को संबोधित करके एक बार कहा था "भई मेरा तो अटूट विश्वास है कि स्त्री घर की शोभा है। नारी को अपना व्यक्तित्व पूर्णतया पति की छाया से एकाकार कर देना चाहिए। एवरी ग्रेट मैन हैज़ ए वुमन बिहाइन्ड हिम।"कामिनी और शेखर भी इस संवाद के समय जीजी के दरबार में थे। कामिनी बोली, "पर जीजी, ऐसा करने पर क्या समाज का एक अंग सदा पंगु, सदा अबला नहीं रह जायेगा?"

"अरे, तो घर में इतना कुछ है करने को ?"

"घर का नियमित काम दो-चार घण्डों में समाप्त हो ही जाना चाहिए" कामिनी फिर बोली। तभी अम्मा कह उठी, "अब शेखर कोई बेकार थोड़े ही है। तू किसे दिखाने को काम कर रही है? घर में क्या खाने को नहीं है? दुनिया क्या कहेगी?"

"अम्मा, घर में यदि खाने को न हो तो दुनिया तो आकर खिला नहीं जायेगी? मेरे काम करने या न करने से दुनिया को मतलब? "[145] यह कहकर वह कमरे से खिसक गयी। कामिनी तो घर को संभालने केलिए दोहरा दायित्व वहन करती है। लेकिन ससुरालवालों को यह पसंद नहीं है। अम्मा और जीजी की बातों से यह स्पष्ट होता है। अपनी अस्मिता को चोट पहूँचने पर भी कामिनी पीछे नहीं हटती। सास की इच्छा के विरूद्ध नौकरी करने का निर्णय लेकर गृहस्थी संभालती है।

कामिनि के ससुरालवाले वह माता न बनने से असंतुष्ट हो जाते हैं। कामिनी तो पूर्णतया त्रुटिहीन है लेकिन पति शेखर पिता बनने में अक्षम है। लेकिन कामिनी अक्षम पति को त्यागने केलिए तैयार नहीं है। पति के मन को संतुलित रखने केलिए संतान की कमी को पूर्न करने का

[145] गुलमोहर के गुच्छे ःमंजुल भगत, पृ. **42**

अलग और आदर्श तरीका वह अपनाती है। वह एक अनाथालय के बच्चे को गोद लेती है क्योंकि अनाथ बच्चे को घर, मां, बाप, सुरक्षा, शिक्षा आदि की कमी है। अपने देवर के बच्चे को गोद न लेने के कारण वह सास की दृष्टि में नालायक बहू बन गयी है।

कामिनी स्वाभिमानी और परिपूर्ण व्यक्तित्व की धनी है। वह परंपरागत जीवन जीते हुए भी रूढ़ियों और रीति-रिवाज़ों पर प्रहार करती है। परंपरागत नारी के समान वह आंसु बहाकर निश्चेष्ठ बैठती नहीं। वह परिस्थितियों का सामना करके पति और घर की रक्षा करती है। वह अस्मिता एवं आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़कर परिवार को नई राह से संवारती है।

'चाल'

भारतीय समाज में अर्थ का संबन्ध पुरूष से जुड़ा हुआ है। लेकिन सत्तरोत्तर काल में शिक्षा के कारण नारी भी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनी। आर्थिक स्वावलंबन नारी को आत्मनिर्भर बनाता है। वह आत्मनिर्भर होकर सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में भी कार्य कर रही है। आज नौकरीपेशा नारी को दोहरे उत्तरदायित्वों को निभाना पड़ता है। एक और उसके समक्ष घर की जिम्मेदारियॉं हैं और दूसरी और बाहरी परिवेश भी है। उसे दोनों कार्यक्षेत्रों से जूझना पड़ रहा है। आर्थिक रूप में स्वावलंबी होने पर भी उसे पारिवारिक परंपराओं, रूढियों, प्रथाओं, मान्यताओं एवं मर्यादाओं से पूर्णतया मुक्ति नहीं मिली है। घर के बाहर नौकरीपेशा नारी को कामकाज के दौरान पुरूषों के कई तरह के अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। इससे पति की शंकालू दृष्टि से नारी को तनावों एवं संघर्षों का शिकार होना पड़ता है।

रवीन्द्र कालिया द्वारा लिखित 'चाल' कहानी की नायिका किरण कालेज में अध्यापिका है। वह पति प्रकाश के साथ मछली बाज़ार के पास चाल में रहती हैं। किरण कमा कर लाती है। उसका पति कुछ कमानेवाला नहीं है। फिर भी वह हर समय किरण पर हावी रहना चाहता है और अपनी बातें किरण से मनवाना चाहता है। एक कालेज अध्यापिका केलिए चाल में रहना युक्त नहीं है लेकिन किराये को देखते हुए इससे उपयुक्त स्थान उन्हें नहीं मिलता है।

नौकरीपेशा नारी को कामकाज के दौरान ऐसे व्यक्ति से भी मिल जाते है जो उसे अपनी हवस का शिकार बनाना चाहते हैं।किरण को गुणवन्तराय का सामना करना पड़ता है गुणवन्तराय कॉलेज के स्टाफ-सेकेटरी है।वह अकारण ही किरण को कई सुविधायें देता रहता है।एक बार गुणवन्तराय किरण से मैन्सेस और सैक्स के बारे में कहते है।सारी बातें किरण पति प्रकाश को बता देती है।तभी से प्रकाश शंकालू दृष्टि से किरण को देखता है।प्रकाश की झल्लाहट दिनों दिन अधिकाधिक तीव्र हे उठती है।वह अपनी पत्नी को बोल्ड होकर उसका सामना करने की प्रेरणा देता है।

"तुमने एक थप्पड़ क्यों नहीं धर दिया ?"प्रकाश ने किरण से कहा था।

"मैं बेहद घबरा गयी थी।वह बहूत बेशर्म से मुझे ताक रहा था।" बोला, बेबी, मुझे लगता है, तुम किसी साइका- सेक्सुअल उलझन में हो।तुम्हें मैन्सेस तो समय पर होते हैं?

"हरामज़ादा !" प्रकाश ने कहा, "तुम्हें चप्पल से उसकी पिटाई करनी चाहिए थी।"

"मैं ने उसकी तरफ देखा भी नहीं और दरवाज़ा खोलकर बाहर आ गई।"

"उसने दरवाज़ा बंद कर रखा था ?"

"नहीं! वह दरवाज़ा खुलने पर अपने-आप बंद हो जाता है।कालिज में सभी दरवाज़े ऐसे हैं।"

"तुमने हल्ला नहीं किया ?"

"नहीं, मैं तुरन्त निर्णय नहीं ले पाई।मुझे अभी तक कॅपकॅपी आ रही है।"

"तुम्हें बाहर निकलते देख वह घबरा गया या खलनायक की तरह हॅसने लगा?"

"मैं ने उसकी तरफ देखा भी नहीं।मुझे बुढऊ किस्म के आशिकों से वैसे ही नफरत है।[146]"

[146] रवीन्द्र कालिया की कहानियॉः रवीन्द्र कालिया, पृ. **224**

फिर भी प्रकाश शंका को लिए किरण से पूछता रहता है "तुम मुझसे कुछ छिपा तो नहीं रही? "[147]

किरण इसका जवाब नहीं कहकर घूरकर प्रकाश की तरफ देखती है। प्रकाश का शंकालू मन अपने आप ही सोचता है-"उस हरामखोर ने ज़रूर चुम्बन वगैरह ले लिया होगा, जो अब यह इतना परेशान हो रही है और बार-बार मुँह पर साबुन पोत रही है। "[148]

प्रकाश हर समय हावी रहना चाहता है। अपनी बातें मनवाना चाहता है। लेकिन किरण उसकी बातों को मना कर देती है। प्रकाश ने सुबह से चाय भी नहीं पी थी। किरण कालिज चली गई है। प्रकाश ने कुछ ही दिनों में कई योजनाओं का प्रारूप तैयार कर लिया था। लेकिन किसी भी योजनाएँ 'प्रकाश मे' नहीं आया। उसके मित्र शिवेन्द्र जो एक नन्ही सी एडवार्टेजिंग एजेंसी-पार्क डेविस एण्ड ली-चलानेवाला है घर में आता है। संजना और सुनन्दा भी उसके साथ है। वे लोग मिड आइलैंड पर मिडनाइट पिकनिक मनाने केलिए जाते हैं। शिवेन्द्र, प्रकाश और किरण को भी साथ लेना चाहता हैं और प्रकाश द्वारा किरण से कुछ परॉठे सेंक लेना और नींबू का अचार भी लाने को कह दिया। यह सुनकर किरन को क्रोध आया और कहती है कि "तुमने और तुम्हारे दोस्तों ने मुझे नौकरानी समझ रखा है। सुबह सात से निकली अब लौटी हूँ, और तुमने मेरे लिए दुसरा काम निकाल रखा है कि मैं कहीं सुस्ता न लूँ। रात को भी ठीक से सोने नहीं देते। कह दो जाकर मैं परॉठे नहीं सेंकूँगी। अब यहां मेरे सर पर क्यों खड़े हो? जाकर दोस्तों के संग पियो और मौज उडाओ। तुमसे इतना भी नहीं हुआ कि कालिज चले आते। मेरी मौत भी हो जाए, तुम पर असर नहीं पड़ेगा। पुरूष हो न, इसलिए सब मुआफ़ है। ईश्वर केलिए मुझे कुछ देर केलिए अकेली छोड़ दो।[149]" किरण यह कहकर रोने लगी। इसके बाद वह शिवेन्द्र से 'सॉरी' कहकर टिफिन तैयार करनें लगती है। इस समय वे लोग उसका जल्दी तैयार करने केलिए कहते हैं। नौकरीपेशा नारी की परेशानी पुरूष लोग कभी नहीं समझ सकते हैं। किरण कहती है

---

[147] रवीन्द्र कालिया की कहानियॉः रवीन्द्र कालिया, पृ. **224**

[148] वही, पृ. **224**

[149] रवीन्द्र कालिया की कहानियॉः रवीन्द्र कालिया, पृ. **246**

कि "आज में किसी भी सूरत में नहीं जा पाऊँगी।सब लोग मजे के मूड में हो और मैं थकान-थकान चिल्लाती रहूँ, यह मुझसे न होगा! पिकानिक का मजा तभी है जब सब लोग नाचने गाने के मूड़ में हो।दूसरे, सुबह मुझे कालिज भी जाना है।कामकाज के रोज तुम्हें यह मिडनाइट पिकनिक की क्या सूझी।सैटरडे नाइट को पिकनिक रखते, ताकि सण्डे को सब लोग सो पाते।" [150] शिवेन्द्र और लड़कियॉ पिकनिक केलिए चले गये।

प्रकाश और किरण कमरे में लौट आयी।प्रकाश पलंग पर लेट गया।किरण भी प्रकाश के निकट ही पलंग पर बैठ गयी और प्रकाश का हाथ सहलाने लगी।प्रकाश के मन फिर भी गुणवन्त के साथ-संबन्धों को लेकर सशंकित हो उठता है।वह किरण के हाथ झटक दिये।किरण प्रकाश की और भी निकट आयी।उसकी अस्मिता को चोट लगी।इसलिए विद्रोही स्वर में वह कहती है कि "तुम भी दूसरे गुणवन्तराय हो।तुममें और पाल में कोई विशेष अंतर नहीं है।हमेशा स्त्री पर हावी रहना चाहते हो।तुम चाहते हो, वह तुम्हारे सामने रोती रहे और तुम आंसु पोंछकर बडप्पन दिखाते रहो।तुम अपने को मन में कितना भी उदार समझो, स्त्री के बारे में तुम्हारे विचार सदियों पुराने हैं।तुम चाहते हो, वह बिना किसी प्रतिरोध के तुम्हारे इस्तेमाल में आती रहे।यही समझते हो न? यही नहीं, घर में मेरी औकात नौकरानी, महाराजिन और महरी से ज़्यादा नहीं।झुठला सकते हो मेरी बात हा? " [151] इसपर प्रकाश कुछ नहीं बोलता, तो वह उसकी बनियान के नीचे हाथ ले जाती है।प्रकाश को जड़ और निरपेक्ष प्रकार से दॉतों से काटने लगती है।फिर भी प्रकाश चुपचाप खाट पर सोया रहता है तो नग्न होकर अपने पृष्ट और नान उरोज उसके सीने से टकराने लगती है।वह अपना शरीर प्रकाश पर इस तरह पटक रही थी जैसे प्रकाश पत्थर की सिल हो और वह उससे टकरा टकराकर चकनाचूर हो जाएगी।इस स्थिति में उसकी सांसें तेज हो जाती है।वह कुछ नहीं बोल पाती।फिर भी वह कोशिश करते हुए बोलती है कि "तुम्हें यही घमण्ड है न कि तुम पुरूष हो।मुझसे ताकतवर हो, मुझसे श्रेष्ठ हो।यही समझते हो न? हर पुरूष यही समझता है।मगर मैं आज तुम्हारे दिमाग से

[150] रवीन्द्र कालिया की कहानियॉः रवीन्द्र कालिया,पृ. **247**

[151] रवीन्द्र कालिया की कहानियॉः रवीन्द्र कालिया, पृ. **251**

सदियों से बैठी यह गलतफहमी निकाल दूँगी।"[152] वह उत्तेजना के अंतिम बिन्दु पर पहूँचकर निदाल हो जाती है और प्रकाश के ऊपर गिर पड़ती है।उसका शरीर पसीने से तर हो जाता है और एकदम ठंडा।

प्रस्तुत कहानी की नायिका किरण कामकाजी नारी है।कामकाजी नारी को दोहरा दायित्व वहन कर पड़ता है।पुरूष लोग नौकरीपेशा नारी की परेशानी को भली-भाँती समझ नहीं कर सकते।इसलिए नारी को विद्रोह करना पड़ता है।किरण भी पुरूष की गलतफहमी-वह स्त्री से श्रेष्ठ हो-पर विद्रोह करती है, चुनौती देती है, स्वर भी उठाती है।अंतिम क्षणों तक संघर्ष भी करती है।

'मछलियां'

प्रेम का चरम उत्कर्ष आस्था और विश्वास में है।आस्था, विश्वास और प्रेम के बल पर मानव सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हो जाता है।नर और नारी के बीच आकर्षण शाश्वत है।पिछले कुछ वर्षो में प्रेम शारीरिक आकर्षण और आर्थिक सुरक्षा तक सीमित होता जा रहा है।कभी-कभी प्रेम में नायक और नायिका के बीच एक खलनायक भी होता है।यह खलनायक स्त्री या पुरूष हो सकता है।

उषा प्रियंवदा द्वारा लिखित 'मछलियां' कहानी में दो पुरूषों और दो स्त्रियों के बीच के द्वन्द्व को उभारा गया है। ये स्त्रियॉ-विजी और मुकी-सहेलियॉ है।नयनतारा मुखर्जी या मुकी फाइन आर्ट्स् की छात्रा है, वह तांबे के पात्र गढ़ती है, चित्र बनाती है और सोफेस्टिकेटेड लड़की, नटराजन से सगाई भी हो जाती है।मनीश का मॅगेतर विजी है।वह लगातार पत्र लिखाकर विजी को भारत से बुलाया।और विवाह करने केलिए विजी घरवालों से लड-भिड़कर गर्व के साथ अमेरिका पहूँच जाती है।लेकिन उसके पहूँचने के पहले ही बेहद प्रतीक्षा करने से ऊब गया मनीश अकेला मैक्सिको चल देता है और बाद में कनड़ा भी।हवाई अड्डे पर विजी को लेने केलिए नटराजन आता है।नटराजन मनीश का दोस्त है।अकेली विजी नटराजन को

[152] रवीन्द्र कालिया की कहानियॉः रवीन्द्र कालिया, पृ. **251**

चाहती है। मनीश द्वारा अकेले छोड़ जाने पर नटराजन को भी एक बार उस पर लगाव था। लेकिन उस समय विजी नटराजन को एक करूणामय मित्र की तरह समझती है। नटराजन जानता है कि वह विजी केलिए प्रेमी या पति कभी नहीं हो सकता। इसलिए वह मुकी से संबन्ध स्थापित करता है। इसलिए विजी मुकी से ईर्ष्या करने लगती है। वह समय-समय पर नटराजन को ताने देती है।

विजी, नटराजन की मुकी से सगाई होने पर भी उससे बार-बार मिलती है। विजी का मुकी से क्रोध और ईर्ष्या भाव बढ़ जाता है। प्रारंभ में विजी और मुकी अच्छी मित्र थीं। नटराजन ने विजी को एयरपोर्ट से लेकर मुकी के पास ही छोड़ गया था। मनीश ने विवाह करने केलिए विजी को भारत से बुलाया। पर मुकी जैसी कलाकार नारी ने मनीश को अधिक आकर्षित किया। मनीश को मुकी से प्यार है, यह जानकर विजी दुखी हो गई। एक दिन शाम को मुकी और विजी ने नटराजन और मनीश को भोजन पर बुलाया था। वहॉ विजी और मनीश के बीच वार्तालाप चल रहा है। तब विजी ने कहा कि यहॉ आकर अब तक शादी न होने के कारण उसकी काफी बदनामी हो रही है। इसके बारे में बहस होकर दोनों के बीच झगड़ा हो जाता है और मनीश वहॉ से चला जाता है। तब विजी का इस तरह का बदलाव देखकर नटराजन और मुकी वहॉ दौड़ आते हैं। सारी चीज़ें चारों ओर फेंक दिये जाते हैं। यह देखकर मुकी की अस्मिता को चोट लगती है। वह कहती है कि "इस सब केलिए आप मुझे ही दोषी ठहरा रहे होंग?"... "अगर मनीश को मैं विजी से अच्छी लगती हूँ तो इसमें मेरा क्या दोष? आप ही बताइए, यदि मैं विजी से अधिक आकर्षक और सोफेस्टिकेटेड हूँ, तो क्या यह कोई अपराध है?...मनीश की और मेरी रूचि मिलती है। वह लेखक मैं कलाकार... विजी इज ए नाइस गर्ल, मगर उसमें मनीश-से व्यक्तित्व की आजन्म पकड़कर बॉध रखने को है ही क्या?" [153]

इन सभी लोगों का मित्र है नटराजन। वह छः साल से विदेश में रहनेवाला है। भारत में मन-पसन्द की नौकरी न मिलने से वह वहॉ ठहरते है। नटराजन सब की बात सुनता है। वह एक

[153] कितना बड़ा झूठ ःउषा प्रियंवदा, पृ. 109-110

कन्वीनियंट व्यक्ति है।इसलिए सभी अपने मन की बात उससे कह लेतो है।झगड़े के बाद अस्पताल में भर्ती होने के बाद मनीश विजी को देखने केलिए नहीं आया।जून में मनीश सामान बॉध-बूँधकर कनाडा चल जाता है और विजी वाशिंघटन लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में काम करने लगती है।झगड़े के बाद नटराजन ने विजी को एक नया छोटा सा अपार्टमेंट, लाइब्रेरी के पास ही, ढूँढकर निकला। उसका नटराजन के प्रति प्यार बढता है।लेकिन नटराजन से इसके बारे में चर्चा करने का साहस उनमें नहीं था।अंत में विजी समझ लेती है कि मुकी और नटराजन ब्याह करने जा रहे है।यह सुनकर उसे लगता है कि मुकी ने एक बार फिर उसे पराजित कर दिया है।विजी का मुकी से ईष्या भाव इतना बढ़ जाता है कि विजी की 'अब मुकी की गर्दन पकड़कर सींचने की इच्छा होती है, मन होता है उसकी कॉफी में जहर मिलाकर पिला दें, उसके अपार्टमेंट में आग लगा दें और सिल्क की तहों में लेटी मुकी लपटों में घिर जाये और उसकी चीखें धुयें और चटखती लकड़ियों में खो जायें।'

नटराजन की मुकी से सगाई होने पर भी विजी उससे मिलती है।वह कनाडा जाने केलिए नटराजन से एक हजार डालर मांगती है।नटराजन ने जेब से चेक-बुक निकाली और पन्द्रह सौ डालर का चैक लिखकर दे देता है।और विजी को एयरपोर्ट भी ले जाता है।विवाह के बाद एक साथ रहने केलिए मुकी और नटराजन ने एक नया घर खरीदा।साज-सजावट भी चल रही है।इसी बीच में मुकी को पता मिलता है कि नटराजन की, उससे सगाई होने पर भी विजी से संबन्ध है।नटराजन विजी से विदा लेकर एयरपोर्ट से लौटकर यह बात मुकी को सुनाने केलिए नये घर की ओर चल पड़ता है।लेकिन नटराजन-विजी के संबन्ध के बारे में जाननेवाली मुकी नटराजन को देखकर आक्रामक हो जाती है। 'मुकी ने सिर उठाकर उसे देखा, फिर तेजी से बायीं उँगली से अँगूठी निकालकर उसकी ओर फेंकती हुई बोली, "यह लो अपनी अँगूठी और चले जाओ यहां से।मैं तुमसे बोलना तक नहीं चाहती।"[154] यह सुनकर नटराजन स्तब्ध हो जाता है।उसने मुकी से इसके कारण पूछा लेकिन मुकी ने उत्तर नहीं दिया, उसके शरीर में

[154] कितना बड़ा झूठ ःउषा प्रियंवदा, पृ. **126**

तड़पती मछली की तरह एक लहर दौड़ गई।उसके चेहरे पर गहरी अशान्ति थी और सारे दिन रोने से आखें फूलकर लाय हो गई थीं। "मुझसे पूछते हो? क्या स्वयं जानते नहीं? मुझे तो रह-रहकर यही ऑसता है कि तुम इतने झूठे, चालबाज कैसे हो सके! पूरी गर्मी तुम वाशिंगटन उससे मिलने जाते रहे, मुझसे एक बार भी नहीं बताया।मैं यहॉ फर्णीचर ऑर्डर कर रही थी, पेर्द बना रही थी, तुम वहॉ सैर कर रहे थे।"[155] फिर नटराजन धीरे कण्ठ से कहनेवाले के बारे में पूछा। "जाने से पहले विजी मेरे पास आई थी।जिसे सदा से उसने नफरत की, उसे यह बताए बिना कैसे चली जाती! उसी ने बताया कि तुमने उसे पन्द्रह सौ डालर दिए हैं, डाक्टर के पास जाने और इंडिया लौट जाने केलिए।पहले मैं ने उस पर विश्वास नहीं किया।मुझे ख्याल भी न था कि तुम इतना आगे बढ़ जाओगे।पर...पर आज फर्नीचर की दूकान से फोन आया कि मैं ने जो चेक उन्हें दिया वह बैंक से वापस लौट आया कि वहॉ पर्याप्त धन नहीं है।तुम मुझे लगा कि..." [156] अपनी अस्मिता को होनेवाला चोट न सहकर वह फिर भी कहते है कि "...विजी के सारे अत्याचार मैं ने चुप होकर सहे।सोचती थी कि वह पागल है, और नादान है।मुझसे विवाह का प्रस्ताव करके भी तुम उससे चुपचाप मिलते रहे, तब भी मैं ने कुछ नहीं कहा।सोचती थी कि एकबार जब मेरे निकट आकर पहचान लोगे, तो उसे फूल जाओगे।सोचा था कि तुम्हें इतना सुख दूँगी..." [157] यह सब बातें सुनकर नटराजन ने अपनी ही बात मुकी को सुनाने की कोशिश की।लेकिन मुकी धैर्यपूर्वक कहती है कि " न अब कुछ नहीं सुनूँगी।मैं भी बहूत मानिनी हूँ, नटराजन बहूत दर्प मेरे अन्दर भी है।और मैं ने बहूत धीरज रखा, पर अब और नहीं सह सकूँगी।गो अवे।यह विवाह नहीं होगा।मैं किस प्रकार तुम्हें आदर और श्रद्धा से देख सकूँगी! मुझे तुम्हारा धन नहीं चाहिए था।मेरे पिता के पास बहूत धन है।मैं समझती थी कि तुम छल-कपट से ऊपर, अत्यन्त विशाल हो, और इसलिए मन-ही-मन प्रारंभ से हो तुम्हें चाहती आई

---

[155] कितना बड़ा झूठ ःउषा प्रियंवदा, पृ. **127**

[156] वही, पृ. **127**

[157] वही, पृ. **127**

थी।" [158] इस तरह मुकी और नटराजन विजी से संबन्ध के कारण द्वन्द्व की स्थिति में पहूँच जाती है। विवाह के पहले मुकी अपनी अस्मिता प्रिय पुरूष के सामने छोड़ने केलिए तैयार भी नहीं है।

विजी कुद्ध होकर मुकी को 'डायन' पुकारती है।झगड़े के बाद नये अपार्टमेंट में विजी के सारे सामान मुकी ने पैक कर दी।निराश्रय होकर भारत से आए तो अपने ही घर में स्थान दे दिया।इस सभी प्रकार सहायता करने पर भी विजी अपने मांगेतर से फिर भी संबन्ध जारी रखने से मुकी की अस्मिता को चोट लगती और अपनी अस्मिता की रक्षा केलिए प्रिय पुरूष को छोड़ने केलिए भी तैयार हो जाती है।

'अपने अपने दायरे'

भारत में आज भी नारी की दशा अत्यन्त शोचनीय एवं निन्दनीय है।अक्सर नारी ही नारी की सबसे बडी शत्रु बन जाती है।वह दूसरे को ऊपर उठने का अवसर नहीं देती।और एक नारी दूसरी नारी को सुखी नहीं देख सकती।विवाहपूर्व काल में बेटी किसी न किसी की आश्रिता होती है।प्राचीन भारतीय मान्यताओं के अनुसार बेटी माता-पिता की देखरेख में रहती है।शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन एवं संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों के कारण स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्रियों की मानसिकता में बड़ा अंतर आया है।

सिम्मी हर्षिता द्वारा लिखित 'अपने अपने दायरे' के मुख्य पात्र तीन बहनें हैं-अति, मिति और निति।अति लॅगड़ी है और उसका विवाह नहीं हो सकता।निति अपना कैरियर बनाने केलिए घर से बाहर निकल जाती है।इनकी मां की मृत्यु हो चुकी है।इसलिए इन्हें पिता पर आश्रित होना पड़ता है।इन बहनों के बड़े भाई और पापा भी घुटन-भरा जीवन बिताते हैं।कहानी के आरंभ में बड़े भाई साहब को अपनी दफ्तरी फाइल ढूँढ़ते समय किसी एक पुस्तक से एक पत्र मिलता है।वह मिति और उसकी बड़ी बहन अति से भी इसके बारे में पूछता है।लेकिन दोनों कहती हैं कि वे अनभिज्ञ हैं।इनके घर में संदीप नामक एक लड़का, पेइंग-गेस्ट

---

[158]कितना बड़ा झूठ ःउषा प्रियंवदा, पृ. **128**

के तौर पर रहता है।लेकिन उससे यह प्रश्न पूछने की ताकत बड़े भाई में नहीं है।क्योंकि ऐसे पूछने से अपमान भी हो सकता है, अपना ही और अतिथि का भी। बहनों, भाई और पापा की निराशा, कुंठा और घुटन भरी चिन्ताओं से कहानी आगे बढ़ती है।

अंत में भाई साहब निता को बुलाता है, जो उस पुस्तक की मालकिन है, जिससे यह पत्र निकाल है।निति को घर के सामने के खेल के मैदान से मॅगवाता है।बड़े भाई सौम्य स्वर में बिना किसी संशय से निति से पूछता है।'निति पसीने से लथपथ अभी तक हॉफ रही थी ।फ्राक का घेरा उठाकर मुँह पोंछा और पत्र को बिना लिए-दिए, दृष्टि को चुकाते-उठाते हुए कहा "मैं ने लिखा है।"[159] तेरह-चौदह वर्षीय निति का उत्तर सुनकर अविश्वास और भूलेपन से भाई उसे देखता है।संदीप पेइंग-गेस्ट और भाई साहब के गहरे मित्र के रूप में यहॉ पर रहने केलिए आये तो पापा ने केवल निति पर भरोसा किया था और ऊपर खाना पहूँचने का काम निति को दिया था।निति के विश्वासघात पर कृद्ध होकर, कई दिनों के संशय और अविश्वास जन्य तपाव-तनाव को बडे भाई ने हाथों में भरकर निति को मारा।संध्या को पापा ऑफिस से आए तो निति दौडकर उसके पास पहूँची और लिपटकर कहा कि "पापा! भय्या ने आज मुझे बहूत मारा है। देखो यहाँ, यहॉ, ये ।" [160] पापा ने बड़े ध्यान और प्यार भरे शब्दों में मारने के कारण के बारे में पूछा तब लड़की ने सपाट कहा दिया- " मैं ने संदीप भया को पत्र लिखा था न इसलिए।पापा, मैं संदीप से शादी करूँगी भूली-बिसरी, नगण्य सी निति इतनी स्पष्ट हो गयी कि सबकी आंखें चुंधियाने लगीं ।पापा ने सारी थक्कन उस पर उतार दी और सीधे ऊपर जाकर कह आए " संदीप! तुम आज ही यह कमरा खाली कर दो...।निति ऊपर गई और कमरे के बाहर ताला लगा आई - "संदीप कहीं नहीं जा सकता।मैं ज़हर खा लूँगी...।"[161]

---

[159] कमरे में बन्ध आभास तथा अन्य कहानियॉ ःसिम्मी हर्षिता, पृ.**37**

[160] वही, पृ **38**

[161] वही, पृ.**38**

प्राचीन भारतीय आदर्शों के अनुसार प्रायः स्त्रियां परिवार के बडे भाई-बहनों का अनुसरण करती थी। मां-बाप की इच्छा के विरूद्ध कोई भी शब्द उनके मुँह से नहीं निकलता था, विशेषतः विवाह के बारे में। लेकिन प्रस्तुत कहानी में हम देख सकते हैं कि लड़की ने साहस करके अपने पिता से स्पष्ट कहा दिया है कि वह संदीप से शादी करेंगी। हॉ ठीक है, सत्तरोत्तर काल की नारी अपनी अस्मिता को पहचानती है। अपने अधिकार केलिए स्वर भी निकालती है।

'उसका मन'

सत्तरोत्तर काल में नारी की प्रेम संबन्धी दृष्टि भी बदली है। उसके प्रेम संबन्धों में पहले से ज़्यादा स्वतंत्रता एवं स्वच्छता आयी है। वैश्वीकरण के इस युग में पुरूष के समान स्तर पर आकर नारी ने प्रेम के परंपरागत मूल्यों को बदल डाला है। स्त्री, प्रेम की जिस गहराई को, पूर्णत्व को और अनूभति के जिस रूप को चाहती है उसे समझ पाना और उसकी पूर्ती करना पुरूष केलिए अक्सर संभव नहीं है।

सिम्मी हर्षिता की 'उसका मन' की नारी अपने संबन्धों की तलाश निजी धरातल पर करती है। किन्तु नारी अपनी परंपरागत मानसिकता के कारण प्रेम में पहल नहीं कर पाती। कभी-कभी प्रेम की अभिव्यक्ति वाणी में न होकर मौन में होती है और प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे को देखते-देखते काफी समय बिता देते हैं और वे दूसरों से कुछ कह नहीं पाते। दोनों प्रेमी-प्रेमिका कॉलेज में पढते है। लेकिन अलग-अलग कॉलेज और अलग-अलग विषय में। किन्तु एक ही बस में जाते हैं और लौटते हैं। नारी के कॉलेज के रास्ते पर केवल वही एक बस चलती थी और उसके लिए अनेक बसों की सुविधा थी। लेकिन दोनों एक साथ अपने- अपने घरों से निकलते है और लौटते है। चुप रहने पर भी दोनों के बीच एक मौन-संबंध चलता है। इसमें यह इच्छा प्रबल रहती है कि पहल की जाये, किन्तु पहल करे कौन? जब पहल नहीं हो पाती तो जीवन में गती के स्थान पर ठहराव आ जाता है और मन में कल्पना की गति तीव्र हो जाती है। कई वर्ष बीत गए। नारी फ्राक से साड़ी में बदल लिया, पढाई से नौकरी में बदल लिया लेकिन प्रेम स्वप्न तो यथार्थ में नहीं बदला। वह मन का वश में रखने के कारण मन की बातें केवल मन

में ही रहती है।वह पुरूषों की तरह जीवन जीना चाहती है।वह अस्तित्व की तलाश पुरूषों के व्यक्तित्व से करती है।लेकिन 'उसका मन' की नारी बहूत स्वाभिमानी है।वह अपनी ही राय सभी परिस्थितियों में प्रकट करने केलिए तैयार भी है। "मैं बहूत स्वाभिमानी हूँ।जहॉ मैं काम करती हूँ वहॉ परिस्थिति आ पड़ने पर अपने मुख्याधिकारी के सामने मैं बहस को रोक नहीं पाती।मैं कहती हूँ -अपने अधिकार और सच्चाई केलिए क्यों न लड़ जाए? क्यों किसी का गलत और अकारण दबदबा सहा जाए?"[162] वह चाहती है कि उसका प्रेमी ही पहल करे।वह परंपरागत रूप से चली आ रही प्रेम संबन्धी गलत धारणा के बारे में सोचती है "प्रेम के मामले में अभिव्यक्ति की पहल पुरूष की तरफ से ही होनी चाहिए। ऐसा क्यों है? यह दोनों तरफ प्रतिष्ठा और स्वाभिमान का प्रश्न क्यों है? पुरूष को जब कोई लड़की पसंद होती है तो अक्सर वे अपनी भावना प्रकट कर देते हैं और यदि लड़की की कोई पसंद हो तो?" [163]

एक दिन वह डैडी के ऑफिस में जाकर बार-बार उसके घर का नंबर डायल कर दिया।उसकी आवाज़ 'हैलो हैलो' सुनने पर भी वह कुछ नहीं बोली।अन्त में 'सॉरी' कहकर फोन रख दिया।जब भी शादी और लड़के का सवाल घर में उठता है, वह किसी न किसी कारण से यह तोड़ देती है या अनजाने में ही सब कुछ टूट-फूट जाता है।

शादी के बारे में उसका विद्रोही मन सोचता है कि "मैं किसी ऐसे पुरूष से शादी कैसे कर सकती हूँ जो एक के बाद दूसरी लड़की को रिजेक्ट करते रहते हैं? ऐसे पुरूष अपने-आपको क्या समझते हैं?किसी ऐसे से भी कोई कैसे विवाह कर सकता है जो कहता है लड़की उसके शहर में आए और उससे मिले क्योंकि वह बहूत व्यस्त है और छुट्टी नहीं ले सकता।क्या यह किसी भी तरह से एक सौम्य व्यवहार है? क्या यह कोई नौकरी का इन्टरव्यू है? " [164] उसका स्वाभिमानी मन अपने-आप कहता है "मैं शादी केलिए किसी के भी पीछे नहीं भाग सकती।आज

---

[162] कमरे में बन्ध आभास तथा अन्य कहानियॉ ःसिम्मी हर्षिता, पृ. **141-142**

[163] वही, पृ. **142**

[164] वही, पृ. **146**

का पुरूष आधुनिक और व्यस्त होने के नाम पर या स्त्री की स्वतंत्रता के नाम पर असभ्य या मूल्यहीन क्यों होता जा रहा है।" [165] वह चाहती है कि विवाह आदि के मामले में घरवालों को लड़की की राय भी ली जानी चाहिए और उसे स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वह अपने डैडी से साफ-साफ कह देती है "मैं धर्म, जाती का भेद-भाव नहीं मानती, लड़का अच्छा होना चाहिए।"[166] इसके बाद लोगों के व्यवहार के दोआपन पर कोध प्रकट करते हुए वह सोचती है "क्या हम अपने विचार तक व्यक्त नहीं कर सकते? बाहर लोगों के सामने बड़ी शेखी मारते है धर्म और जाती के विरोध की और घर में ऐसा व्यवहार करते है!पेरेन्टस आर जेनरली हिपोक्रेट।" [167] परिवारवलों को एक लड़के लड़का पसंद है तो वह दृढ़निश्चयी होकर मन में सोचती है "हम जिसे चाहें उससे विवाह करें-उसके साथ रहें यही तो जीवन है।न जान न पहचान और कुछ व्यक्तियों के बीच-बचाव द्वारा शादी हो रही है-चले जा रहे हैं। गांठ में बंधे हुए पीछे-पीछे?ऐसी शादी से न शादी भली।"[168]

सामनेवाले सड़क पर से महिलाओं का एक जुलूस निकल रहा है।आह्लाद भरी शोर चारों ओर गूँजते हैं।लेकिन यह असामान्य धूम-धड़क्का केवल एक दिन का है और फिर जिन्दगी भर तक गहरी बेरौनक चुप्पी।वह खुद सोचती है कि "उसका स्वाभिमान है तो क्या मेरा नहीं? सारी जिन्दगी ही बीत जाए तो भी मैं उसे कभी नहीं कहूँगी।"[169] इसतरह वह अपने अस्तित्व की तलाश अपने प्रेमी और अपने परिवेश के बीच में से करती है।अंत में उसे लगता है 'हम बहूत बदल गये हैं...कभी लगता है समय के साथ हम बहूत बदल गए हैं।कभी लगता है हम ज़रा नहीं बदले केवल समय बदला है।'[170] इस प्रकार उसका मन की नारी विवाह के पूर्व ही

---

[165] कमरे में बन्ध आभास तथा अन्य कहानियॉ ःसिम्मी हर्षिता पृ. **146**

[166] कमरे में बन्ध आभास तथा अन्य कहानियॉ ःसिम्मी हर्षिता, पृ. **146**

[167] वही, पृ. **147**

[168] वही, पृ. **148**

[169] वही, पृ. **148**

[170] वही, पृ. **148**

अपने अस्तित्व के बारे में सचेत है और हर तरह से उस का देखभाल करती है। वह अपनी अस्मिता की तलाश सदा करती रहती है।

'चकभोग'

विवाह-पूर्व काल में स्त्रियॉ प्रायः अपने माता-पिता पर आश्रित होती है। वह साधारणतः अपने माता-पिता की इच्छानुसार और सामाजिक मान्यताओं के अनुसार आचरण करती है। मध्यवर्गीय परिवारों में कभी-कभी आर्थिक अभाव या किन्हीं अन्य कारणों से विवाह में देरी हो जाती है। ऐसी स्थिति में नारी को अपनी भावनायें एवं इच्छायें दबाकर रखनी पड़ती है। लड़की चाहकर भी विवाह की बात परिवार में नहीं कह सकती। वह या तो विद्रोह न किये चुपचाप रहती है या अपना आक्रोश मन ही मन व्यक्त करती है या अपने परिवेश में अपनी अस्मिता की तलाश करने लगती है। सिम्मी हर्षिता द्वारा लिखित 'चकभोग' में नायिका तुषी पिता के संदर्भ में अपनी अस्मिता की तलाश करती है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका तुषि जब छोटी थी उसकी मां की मृत्यु हो गई थी। पिता ने उसे पाल-पोसकर बडा किया था। जब वह छोटी थी तब उसे पापा का प्यार अच्छा लगता था। उसी समय पापा उसकेलिए प्रथम व्यक्ति थे जो उसे लाड-प्यार करता था। तुषि सोचती है कि अब वह बड़ी हो गयी है। मध्यवर्गीय परिवार की साधारण युवतियों की तरह वह भी शादी करना चाहती है और अपने व्यक्तित्व को अलग पहचानना चाहती है। "मेरी सभी सहेलियों का विवाह हो चुका है-सरला का, मीता का और नीता ने तो प्रेम-विवाह किया है। केवल एक राधा और मैं ही रह गए हैं।" [171] वह फिर सोचती हे कि वह बड़ी हो गयी है लेकिन पापा उसकी शादी क्यों नहीं करवाया? वह अपने पिता से के प्रति क्रुद्ध भी हो जाती है ।"मुझे तो लगता है जैसे पापा मुझे भेजना ही नहीं चाहते। पापा मुझे बहूत प्यार करते है न! मैं चाहे कितनी ही छोटी और जवान दिखने का यत्न करूँ फिर भी लगता है कि मैं हर रोज़ बूढी हो रही हूँ। मेरे सिर में जगह-जगह सफेद बाल सुई की नोक की तरह खड़े होने लगे हैं। मैं जैसे ध्यान न देने योग्य वस्तु

[171] कमरे में बन्ध आभास तथा अन्य कहानियॉ ःसिम्मी हर्षिता, पृ. 10

हो गयी हूँ।कहीं कुछ भी ताजगी, नयापन, उत्साह मुझ में शेष नहीं रहा।कभी-कभी मुझे पापा पर बड़ा गुस्सा आता है।हमेशा मुझे छोटी-सी गुड़िया ही समझते हैं।उफ, मैं और कितनी बड़ी हो जाऊँ! लगता है, पापा मेरी शादी कभी नहीं कर पाएँगे।"[172]

तुषि की सहेली राधा की शादी हो गयी है।उसकी विदा ने तुषि को बहूत रूलाया है।राधा की विदाई के समय वह इस चिन्ता पर नहीं रोई कि उसकी सखी जा रही है या उसकी मित्रता और बातों का एकमात्र सूत्र टूट जाएगा, वरना वह खुद नहीं जा सकती थी। "मैं इसलिए नहीं रोई कि राधा मेरी सखी जा रही है, इसलिए नहीं रोई कि राधा की विदा के साथ आज मेरी मित्रता और बातों का एकमात्र सूत्र भी टूट जाएगा, रोना इसलिए था कि मैं नहीं जा रही थी।" [173] पापा से वह अपने विवाह की बात कहना चाहती थी, लेकिन यह बात कहने की शक्ति उसमें नहीं है । "पापा, तुम मेरे लिए चाहे जितना कुछ क्यों न करो चाहे जितना मेरा ध्यान क्यों न रखो पर मेरा एक काम नहीं किया तो में समझूँगी तुमने मेरेलिए कुछ नहीं किया।पापा तुम भी मेरा विवाह करो न।"[174]

तुषि को पालने-पोसने केलिए पिता ने दूसरी शादी नहीं की थी।अब तुषि सोचती है कि उसी तरह पापा उसकी शादी भी नहीं कर पाएँगे।जो पापा उसे पहले अच्छे लगते थे वही उसे आज अच्छे नहीं लगते है।अब उसे पापा की उस पर अधिकार रखने वाली बातें बेमानी लगती हैं।वह अपनी जिन्दगी को पापा से अलग करना चाहती है।वह यह भी चाहती है कि घर में पापा के नाम पत्र न आकर उसके नाम पर आयें।पापा की इस तानाशाही को चुनौती देकर कई बातें जीवन में पहली बार किया है। "आज एक लंबे अन्तराल के बाद कुछ लिखने बैठी हूँ।.. .जीवन में पहली बार एक काम बिना पापा से पूछे होता जा रहा है।" [175]आज जीवन में पहली बार मैं ने घर का बन्ध दरवाजा खोल दिया है, वह दरवाज़ा जो केवल पापा की आवाज़ पर केवल पापा केलिए खुलता था।तुषि अपनी शादी के बात पिताजी को कहना चाहती थी।पर

---

[172] कमरे में बन्ध आभास तथा अन्य कहानियाँ ःसिम्मी हर्षिता, पृ. 11

[173] वही, पृ. 14

[174] वही, पृ. 14

[175] वही, पृ. 17

चाहकर भी वह अपनी बात नहीं कर पाती।जब तुषि को लगता है कि उसके पापा उसकी शादी नहीं करेंगे।तब वह अपने मन ही मन सोचती है 'क्या मेरा प्रवास कभी समाप्त नहीं होगा? मुझे अपना देश क्या कभी नहीं मिलेगा? "[176]

इसप्रकार तुषि विवाह की बात पिता से कहने में संकोच करती है।इससे उत्पन्न पीड़ा को वह चुपचाप सहकर मन ही मन अपने परिवेश में अपनी अस्मिता की तलाश करने लगती है।

'एक और विवाह'

आधुनिकीकरण के इस युग में विवाह एक सामाजिक समझौता मात्र माना जाता है।स्त्री-पुरूष का परस्पर आकर्षण जहॉ सहज है वहां एक-दूसरे से संबन्ध स्थापन की प्रकिया भी हुई है।लेकिन प्रेम करने से या विवाह करने से पूर्व अपने निजी अस्तित्व की तलाश को भी उत्तराधुनिक नारी महत्व देती है।पुरूष को समर्पण करने से पूर्व नारी पुरूष में अपने निजी अस्तित्व को खोजना चाहती है।

मृदुला गर्ग की 'एक और विवाह' की नायिका है कोमल।बचपन में चार बहानों के परिवार में वह सबसे श्रेष्ठ बुद्धि-जीवि मानी जाती थी।पढ़ने-लिखने और बाकी सब काय-कलापों में वह आगे रहती थी।उसके पिता एक कंपनी के मालिक थे और बुद्धिजीवि भी थे।वह पुत्र के अभाव में पुत्रियों को उच्च-शिक्षा और स्वतंत्र विचार-शक्ति देने में जुटे थे।कोमल दिल्ली के कॉलेज में लैक्चरर हो गयी।पढन- लिखने और तर्क करने में समय व्यतीत करती।तब वह कॉलेज के स्टाफ रूम में बैठकर विवाह के बारे में कहती है। "मैं व्यवस्थित विवाह में विश्वास नहीं करती।वह विवाह नहीं, जबरदस्ती किसी का पल्लू पकड़ लेना होता है।दो कारणों से ऐसा करने की आवश्यकता पड़ सकती है, आर्थिक अवलंबन की खोज या शारीरिक सुख।पहले की कम-से-कम हमें ज़रूरत नहीं है और रहा दूसरा, तो उसकेलिए विवाह के बन्धन की आवश्यकता नहीं है।बेहतर है मुक्त प्रेम जो बासी होने पर फेंक दिया जा सकता है।विवाह तब करना चाहिए जब पुरूष को उसके बिना सब अर्थहीन मालूम पड़े और स्त्री उसके

[176] कमरे में बन्ध आभास तथा अन्य कहानियॉ ःसिम्मी हर्षिता, पृ. **21**

बिना भी पूर्ण समर्पण करने को व्यग्र हो, तभी वास्तविक ऐक्य हो सकता है।"[177] आकर्षक व्यक्तित्ववाली कोमल, रोमांस को अधिक महत्व देती है। "जीवन में हमें सेक्स से ज़्यादा रोमांस की खोज होती है और व्यवस्थित विवाह का अर्थ है रोमांस को तिलांजली।"[178]

काल और परिस्थिति के अनुसार नारी की मानसिकता में बदलाव आती है।यहाँ साधारण स्त्री के समान लज्जाशील न होकर विवाह और सेक्स के बारे में अपनी चिन्ता खुले आम प्रकट करती है कोमल।कोमल की सहेली है रानी। वह तो चंचल, आत्मनिर्भर और स्पष्टवादी लड़की थी।उसकी राय में मातृत्व की भूख स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्त्रियों को नहीं होती, कम-से-कम अनिवार्य रूप से नहीं। "विवाह सभी व्यवस्थित होते हैं।यहां बाहरी सज्जा को परख कर और वहां पश्चिम में बाहरी सज्जा में बहकर।सच्चा प्रेम होने से, उसे विवाह की अग्नि परीक्षा में न ही डाला जाए तो अच्छा है।और फिर खुब हंस कर कहा था, "जहां तक अपना सवाल है, मुझे तो बच्चे चाहिए।बिना विवाह के मिल जाएं तो बहूत खुब, वर्ना विवाह करना ही पड़ेगा।"[179]

भारतीय परंपरा के अनुसार विवाह के बिना संतान की कामना करना, विवाह किये बिना अपनी शारीरिक भूख मिटाना निषिद्ध और जघन्य अपराध भी है।इस तरह विवाह को निरर्थक और बेनामी घोषित कर रानी भी अपनी अस्मिता की खोज करती है।

कोमल का मदन के साथ विवाह हो गयी, जो आठ वर्ष अमेरिका में रहकर आया था।दोनों के बीच लंबे संवाद हो जाने के बाद कोमल ने विवाह केलिए अनुमति दी थी "और स्त्रियों की तरह कोमल को अपने मुख या देह के लावण्य पर गर्व नहीं था।शायद वह जानती भी नहीं थी कि वह सुन्दर है या नहीं।पर गर्व था अवश्य।अपनी स्पष्टवादिता पर, अपनी विचारों की स्वतंत्रता पर, अपनी आडंबरहीन आधुनिकता पर।"[180] मदन का प्रथम चुंबन पाकर

---

[177] कितनी कैदें ःमृदुला गर्ग, पृ. 68

[178] वही, पृ. 69

[179] वही, पृ . 69

[180] कितनी कैदें ःमृदुला गर्ग, पृ. 69

कोमल को पुलक का अनुभव नहीं होता। मदन के आलिंगन में भी उसे आकर्षण पुंज को दीप्त करनेवाली झंझा महसूस नहीं होती। "आज रात, कोमल सोचती गयी, आज रात शारीरिक मिलन के बाद हृदय का मिलन। यही होता है, मिलन की चाह में प्रेम या मिलन के बाद प्रेम। बस मुझे लज्जा न रहे यह एक प्रयोग है, एक और प्रयोग।"[181]इस प्रकार विवाह को 'प्रयोग' माननेवाली कोमल मदन के द्वारा सुहागरात के बाद जानेवाले प्यार भरे वक्य 'वाह तुम तो अमरीकन स्त्रियों को भी मात करती हैं' तो कोमल को तनिक सुख और खुश नहीं मिला। प्रयोग तो पूरा हुआ पर परितोष नहीं मिला।

'अभी तो'

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है। यहां घर, परिवार और समाज में पुरूष की ही सत्ता चलती है। सभी कार्यों में निर्णय लेने का अधिकार पुरूष को ही है। स्त्री, पुरूष की अर्द्धा ंगिनी चाहे वह कितना भी योग्य हो, उसकी इच्छा, विचार और निर्णय का अपने ही घर में कोई स्थान नहीं होता। परिवार से या अपने बच्चों से संबन्धित सभी बातों में निर्णय लेने का अधिकार पुरूषों ने अपने पास सुरक्षित रखा है। घर की चहार दीवारी के भीतर रहकर, केवल स्वादिष्ट भोजन बनाना ही स्त्री का कर्तव्य है-यही पुरूष चाहते हैं। हर प्रकार की क्षमता होने पर भी स्त्री असहाय और विवश बनकर रहती है।

पुरूष प्रधान संस्कृति में स्त्री को होनेवाली अवहेलना को चुनौती देनेवाली एक सशक्त स्त्रीवादी कहानी है राजी सेठ की 'अभी तो'। प्रस्तुत कहानी की नायिका वृंदा पढ़ी-लिखी औरत है। वह तथा हिन्दी भाषा की प्रचारक भी है। विवाह के अठारहवीं सालों के बाद वह पियूष की मां बनी। पिछली अठारहवीं सालों से वह निःसंतान स्त्री का दुख झेल रही थी। इस समय उसकी मुलाकात निःसंतान नावैकर दंपति से हुई। वृंदा को इस दंपति से जीने का नया सूत्र, दुःखों को भूलकर पीडितों की सेवा करने का आशय मिलता है। वह अपंगों की सेवा, प्रौढ शिक्षा का प्रसार करते हुए स्कूल में काम करने लगती है। वह दफ्तर, डाकखाना, स्कूल आदि में अंग्रेज़ी भाषा की

---

[181] कितनी कैदें ःमृदुला गर्ग, पृ. **76**

श्रेष्ठता की धारणा को तोड़कर, हिन्दी का प्रचार-प्रसार करती है।लेकिन वृंदा का पति विमल अंग्रेज़ी की श्रेष्ठता का कायल है।हिन्दी भाषा का प्रचार वह स्वयं अपना कर्तव्य मानती है। '.. .फोन पर 'हैलो' कहने की बजाय वह 'जी कहिए' कहती थी और अपनी मौलिकता पर मुग्ध होती थी।आगन्तुकों को 'नमस्कार' कहती थी और विमल के मुँह से कभी 'डार्लिंग' निकल जाने पर तड़प उठती।'[182] एक बार डाकखाने में किसी ने कहा था, 'यह बिना ताज की नन्परदारी।यह भी तो एक तरह है, रास्ता को हाथ में लेने का।उन मामलों में सिर देने का, जी सरकार ने सा तरीके से अपने तहत कर रखे हैं।"घर आकर बहूत बिगड़ी थी "उन्हें नहीं मालूम जब सरकार हार जाती है तो जन मत बनाना पड़ता है।स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद यदि हर बच्चा अनिवार्य रूप से राष्ट्रभाषा पढ रहा हो तो चालीस साल का हर व्यक्ति अपनी भाषा में दीक्षित होता, उसे लादने की ज़रूरत क्या है जिस प्रवाह में लोग नहा रहे हैं बस उसमें रंग डाल दो।अभी तो मिसाल सामने है।चालीस साल में कैसे एक बिलकुल नई और बेगानी भाषा सीख ली गई।"

सौ सालों के कोलोनियल डामिनेशन को भूल जाती हो वृन्दा। "हाउ कैन यू फारगेट हिस्टॉरिकल रीज़ेंस।"ऐसी बातों में भटकती है वृन्दा-"हमारा अपना आत्मगौरव ही मिट्टी है।योग साधना सीखेंगे अंग्रेजी किताबों से।वेद पढ़ेंगे जमीन सूत्रों से।भाषा को खुद ही बाधा बना लिया।अरे, इंसान जिस भाषा में सोचता है, उसी में लिखने लगे।कितना आसान है सब कुछ।अम्ग्रेज़ी भी क्या आसानी से सीख ली गई थी।उसके पीछे कितने दशकों की मेहनत और आत्म प्रेरणा है।ज्यादा सरल रास्ते को अपनाने में यदि प्रेरणा कम है तो समस्या कहीं और... ।"[183]

इस तरह बहसें चल रही है।वृन्दा पूर्ण भरोसे से अपने कर्म के बारे में सोचती है और जोशीले ढ़ंग से कार्य चलाती है।लेकिन बच्चा पीयूष की कान्वेंट स्कूल में दाखिल करने केलिए पति विमल प्रयास करता है।इसके विरोध में वृन्दा कोई ठोस कार्य नहीं कर सकती।वह अपने

---

[182] चर्चित महिला कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियॉ सं.मीना अग्रवाल, पृ.66

[183] वही,पृ.66-67

ही घर में अंग्रेज़ी के बोझ से दब जाती है। बच्चे को अंग्रज़ी स्कूल में दाखिल करने की खबर सुनकर वह विवश होकर क्षितिज [184] की और देखती रहती है और सोचती है "क्या किया जा सकता है इस हीनता के विरूद्ध अबी तो अपने भी उपकरण ढलि-ढाले हैं, अपनी भी निष्ठा पीली पीची।"

वृन्दा अपनी कार्यकलापों से निज की स्वतंत्र पहचान बनाने का श्रम करती है। लेकिन इस श्रम में वह विवश और निःसहाय होकर खुद के घर में हार जाती है। पर अपने अस्तित्व को पहचानने की कोशिश में वह कामयाब हो जाती है।

'हरी बिन्दी'

भारतीय सभ्यता के अनुसार पत्नी का पति के प्रति निष्ठावान रहना आवश्यक है। इसके अलावा, समर्पित और प्रतिबद्ध रहे, पराये पुरूष की ओर ऑखें उठाकर न देखे। अन्य पुरूषों के साथ घुल मिलकर बात भी न करे। उत्तराधुनिक युग में भी, पत्नी को घर की चार दीवारी में बैठकर पति, बच्चे और ससुरालवालों की सेवा करना है, ऐसा माना जाता है। खिड़कियॉ खोलकर शुद्ध हवा से मन और शरीर को शीतल करना कई स्त्रियों केलिए आज भी स्वप्न मात्र है।

परंपरागत लाल रंग की बिन्दी के स्थान पर हरी बिन्दी लगाकर मृदुला गर्ग की 'हरी बिन्दी' की अनाम नायिका, परंपरा के विरूद्ध विद्रोह करती है। प्रस्तुत कहानी के बारे में सरिता सूद लिखती है हरी बिन्दी कहानी में विवाहित नारी की मानसिक दशाओं का चित्रण किया गया है। . . . यह भारतीय परिवेश में नये मोड़ का सूचक है। इस नारी का दायरा बड़े घरानों तक सीमित है जहॉ पश्चिम का गन्ध है या नगल है. . . उसे अपने पति की आदतें अकरती है। वह नयी आदतों की खोज में है। वह पराये पुरूष की संगत में अपने को स्वतंत्र अनुभव करती है. .

[184] चर्चित महिला कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियॉ : सं. मीना अग्रवाल, पृ. **73**

. वह अतीत में रहने की बजाय आगत में रहना चाहती है, लेकिन वह अतीत से छुटकारा नहीं पा सकती। पिक्चर देखने के बाद वह घर लौटने को विवश है।"[185]

पति राजन की अनुपस्थिति में कहानी की अनाम नायिका अपने को पुरूष से मुक्त और स्वतम्त्र मानती है ।इसलिए वह निश्चय करती है कि आज का दिन यूँ ही नहीं जाने देगी। "खेर आज वह स्वतंत्र है। जो चाहे, करे। उसने शरीर को ढ़ीला छोड़ दिया और दुबारा सोने की तैयारी करने लगी। फिर जब वह आंख खुली तो साढ़े आठ बज चुके थे।"[186] वह देर से उठती है, ठण्डे पानी से नहाती है, इसके बाद नीले कुर्ते पाजामे के साथ बड़ी सी हरी बिन्दी लगाती है। "राजन होता तो कहता नीले पर हरा? क्या तुक है?उसने दर्पण में देख रही अपनी प्रतिछाया की ज़बान निकाल कर चिढ़ दिया, कहा, "तुक की क्या तुक है" और खिलखिलाकर हॅस पड़ी' [187]नकली और बड़ी- बड़ी बालियॉ कानों में लटकाती है और बिना कोई निर्णय लेकर अकेले घूमती है। जहॉगीर आर्ट गॅलरी में प्रदर्शिनी देखकर अकेले मुक्त रूप से हॅस पड़ती है। एक रेस्तरॉ में गरमागरम टिकिया की प्लेट और आइस्क्रीम एक साथ मॅगवाकर खाती है। "उसे ठण्डा और गरम एकसाथ खाना बहूत भला लगता है। कहते हैं, दांत खराब हो जाते हैं। कितना चटपट काम हो गया आज, राजन रहता है तो बढ़िया जगह बैठकर आराम से खाने की सूची देखने के बाद सोच-विचार कर आदेश दिये जाते हैं।"[188]

सिनेमा घर में जाकर पति की नापसंद के 'डेनी के' की पिक्चर देखती है और अदाकार की एक मुद्रा पर इतना हॅसती है कि हाथ पास बैठे एक अजनबी पुरूष से टकरा जाता है। सॉरी कहने के बजाय वे पुनः ठहाका लगा लेते हैं और तदनन्तर ठहाका का क्रम-सा चल पड़ता है। "अदाकार की एक खास बेचारगी की मुद्रा पर वह दोनों इतनी ज़ोर से हॅसे की उनके हाथ आपस में टकरा गये। सॉरी कहने के इरादे से वे एक दूसरी की तरफ मुड़े पर माफी मांगने के

---

[185] महिला कहानीकारों की कहानियों में प्रेम का स्वरूप सरिता सुद, पृ . 64

[186] कितनी कैदें मृदुला गर्ग, पृ 31

[187] वही, पृ. 32

[188] वही, पृ . 33-34

बजाय एक ठहाका और लगा गये।"[189] पिक्चर के बाद वह इस अनजान-बेगाने पुरूष के साथ एक रेस्तरॉ में जाती है।दोनों देर तक बातें करते है।अजनबी होने पर भी दोनों एक दूसरे के विषय में पूछताछ न करती हैं और न ही रूमानी बातें करता है। " .....सबसे अच्छी जगह कौन सी लगा।"

"जब जहॉ हुआ",कहकर वह हिचकिचाहट के साथ मुस्कुराया,...."

कॉफी समाप्त हो जाने पर बिल देने की जिद्द न करके उसके व्यक्तित्व को बिखरने से बचा लेता है।अन्त में वह अजनबी पुरूष उसकी हरी बिन्दी की प्रशंसा करता है।

प्रस्तुत कहानी में नायिका का देर से उठना, ठण्डे पानी से नहलाना, नहाने के समय गज़ल गाना, नीले रंग वस्त्र के साथ हरी बिन्दी लगाना, कान में नकली बड़ी-बड़ी बालियॉ पहनना, धुन्ध में खुलापन महसूस करना, अकेले घूमना, जहॉगीर आर्ट गॉलरी में प्रदर्शिनी देखकर मुक्त रूप से हॅसना, रेस्तरॉ में गरमागरम आलू टिकिया के साथ आइस्क्रीम खाना, पति राजन की नापसंद के डैनी के ' का पिक्चर देखना, आदाकार की एक मुद्रा देखकर भारतीय परंपरा के विरूद्ध ज़ोर से हॅसना, अजनबी पुरूष के हाथ सी हाथ टकरा जाने पर ठहाकों का कम सा चलाकर हॅसना, फिर उसके साथ रेस्तरॉ में बैठकर बातें करना, खिलखिलाकर हॅसना,बातें करते हुए एक साथ टैक्सि में वापस जाना, सभी प्रवृत्तियॉ भारतीय संदर्भ पर विद्रोह के सूचक हैं।यहॉ नायिका पति की अनुपस्थिति में स्वतंत्र जीवन का आस्वादन करती है।पुरूष की इच्छा के विरूद्ध अपनी इच्छानुसार सभी कार्य चलती है।वह अपनी अस्मिता को पहचानने की कोशिश भी करती है। प्रस्तुत कहानी की रचना प्रकिया के बारे में श्रीमति मृदुला गर्ग कहती हैं "मुझे याद आता है कि घटाटोप धुध के घिर आने पर मेरे अन्दर वह बेचैन कर देनेवाला सौन्दर्य बोध जगा था जिसने मुझ से हरी बिन्दी कागज़ पर लिखता डाली।"[190]

---

[189] कितनी कैदें मृदुला गर्ग, पृ. **34**

[190] कितनी कैदें मृदुला गर्ग, पृ **36**

'चक्करघिन्नी'

नारी पर परिस्थिति और समय का प्रभाव अत्यधिक होता है। स्वतंत्रता के पहले नारी प्रायः घर की चार दीवारी के भीतर सीमित थी। पतिसेवा, मातृत्व, गृहस्थी आदि को ही आदर्श मानकर वह जीवन यापन करती थी। स्वतंत्रता के बाद नारी चहार दीवारी की जंजीरों को तोड़कर बाहर आयी। और कामकाजी बनकर अग्रसर होने लगी। बच्चों के मन में माता-पिता के प्रति जो छवि होती है इसमें गहरा बदलाव भी आया। अपनी माता की ममता को न पाने के कारण उनके मन में व्यथायें भी उत्पन्न हो गयी। घर और बाहर, परिवार तथा नौकरी में संतुलन बनाने केलिए माता द्वारा किये जानेवाले भरसक प्रयत्न को भी लड़कियॉ भी अच्छी तरह नहीं समझती हैं। अस्मिता की तलाश की झूठी बहाना समझकर वे विद्रोह करती हैं। कभी कभी अंत में वे सच्चाई को जानती है और अपनी अस्मिता को बनाए रखते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करती हैं।

मृदुला गर्ग की कहानी 'चक्करघिन्नी' की विनीता की मां हृदय रोग विशेषज्ञ डाक्टर है और पिता बच्चों के डाक्टर। माता-पिता दोनों डाक्टर होने पर भी विनीता जीवन में डाक्टर नहीं बनना चाहती है। घर में रहकर पति व बच्चों की योग्य देखभाल करने को वह अपने जीवन का आदर्श मानती है।

विनीता के पिता का दवाखाना घर में ही है। उसकी माता अपनी चीफ की ड्यूटी निभाने दिल्ली शहर के नामी पन्त अस्पताल में जाती है। तब विनीता की देखभाल पिता करते है। इसके फलस्वरूप विनीता के मन में बचपन से ही यह गलत धारणा बन जाती है कि उसकी मां आदर्श पत्नी और आदर्श मां नहीं है। लेकिन उसके पिता मां से ज़रा भी असन्तुष्ट नहीं है। दोनों का दांपत्य जीवन सुचारू रूप से चल रहा है। उसे इस बात पर आश्चर्य होता है। कभी-कभी विनीता को मां के असफल पत्नी होने पर सन्देह होने लगता था। वहा सोचती पापा तो ज़रा भी दुःखी या असन्तुष्ट नहीं दीखते। मां उनसे लड़ती भी नहीं। फिर वह असफल पत्नी क्यों है। पर धीरे-धीरे सन्देह कमज़ोर पड़ता गया। बाहरी संसार से मेल-जोल बढ़ने के साथ उसे विश्वास हो गया कि

उसकी मां आदर्श पत्नी और मां नहीं थी।इसके अलावा, आदर्श पत्नी मां की जो छवि फिल्मों और किताबों में मिलती थी वह भी उसकी मां की तस्वीर से भिन्न थी।इसलिए वह तय कर लेती है कि वह बड़ी होकर डॉक्टर नहीं बनेगी कामकाजी नहीं बनेगी घर में रहकर पति व बच्चों को योग्य देखभाल करके आदर्श पत्नी और आदर्श मां बनेगी।इस प्रकार के आदर्श स्वप्नों के बीच वह जीती है।

विनीता ने बी. ए. कर लिया।निर्णय के मुताबिक सेण्ट्रल बैंक के मैनेजर अमित गोयल से विवाह भी हो गया।उसका वैवाहिक जीवन सुनियोजित ढ़ंग से चलता है जैसे पति-पत्नी दोनों एक दूसरे केलिए ही बने हो।पांच साल के अन्दर वह माया और अजय इन दो बच्चों को घी घिलाती मां बन जाती है।पति और बच्चों के प्रति कर्तव्यों को निभाते-निभाते विनीता क जीवन में रस्साकशी शुरू हो जाती है।वह अपने दायित्वों को निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ती।जब बच्चों की झगड़ों की नौबत मार पीड़ तक पहूँच जाती है तब उसे अपनी मां का चेहरा याद आती है।अमित की तींद निकल आती है।यह सब नतीजा था पति व बच्चों के प्रति ज़्यादा ध्यान देने का।आखिर एक दिन उसके बच्चे उसे नौकरी करने की सलाह देते हैं। 'दूपहर के खाने पर विनीता ने बारह वर्षीय माया को खाने के साथ कॉमिक पढ़ने पर टोका तो उसने तड़पकर कहा, "तुम हर वक्त घर पर क्यों बैठी रहती हो? कोई जॉब क्यों नहीं करती।मेरी सब सहेलियों की मम्मी काम करती हैं।"[191] और वापस कॉमिक पढ़ने में तल्लीन हो गई।

अमित भी विनीता का कामकाजी बनना पसंद करते है।जब वह पापा के क्लिनिक में जाता है तब उसकी मां रिटायर होकर उसकी तरह घर पर रहा करते देखा है।तब उसके मन में भी कामकाजी नारी बनने की इच्छा होती है।वह पहचानती है कि आज के भौगोलिक या सुधारवादी युग में कामकाजी पत्नी और कामकाजी मां बनना ही आदर्श है।कामकाजी बनने की इच्छा से विनीता अपनी अस्मिता को पहचान कर सकती है।पति भी पापा की क्लिनिक में रिसेप्शनिस्ट का काम करने का सुझाव देता है।चक्करघिन्नी बनी विनीता बच्चों व पति के

[191] शहर के नाम मृदुला गर्ग, पृ. 57

सुझाव को उचित मानती है और अपने पापा के क्लिनिक में रिसेप्शनिस्ट का काम संभाल लेती है।

इस प्रकार परंपरागत आदर्श पत्नी और आदर्श मां बनने की कामना करनेवाली विनीता अन्त में अपनी अस्मिता को पहचानकर इस सुधारवादी युग के अनुरूप जीवन बिताने का प्रयत्न करती है।

'मीरा नाची'

आधुनिक युग में भी घर-समाज में बेटे को अधिक महत्व मिलता है। वंश को आगे बढ़ाने केलिए पुरूष ही अनिवार्य है। भारतीय जन मानस में रूढ़मूल इस मान्यता के कारण बेटी को समान अधिकार नहीं मिलता है। भारतीय समाज स्त्री को मुख्य रूप से घर से संबन्धित व्यक्ति मानता है। उससे गृहकार्य, पतिसेवा आदि की आशा की जाती है। इसलिए बेटी के प्रति समाज उपेक्षा और घृणा का भाव प्रकट करता है। कभी-कभी माता के मन में भी पुत्री के प्रति हिकारत की भावना उत्पन्न होती है। बेटे के बारे में 'कमानेवाला' और बेटी के बारे में 'खर्च करनेवाली' या 'दूसरी घर की बेटी' का मनोभाव रखकर भेद भाव प्रकट करती है। इसलिए बचपन से बड़े होने तक बेटी पर अनेक प्रकार के कठोर नियंत्रण रखती है। बेचारी बेटी की कोमल भावनाओं को समझने की कोशिश कोई नहीम् करता। कभी-कभी जन्म से पहले ही बेटी को समाप्त कर देना चाहती है।

मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'मीरा नाची' में स्वच्छन्द जीवन जीना चाहनेवाली तथा नाचने की इच्छा रखनेवाली लड़की को देख सकता है। वह लड़की स्कूल में पढ़ती है। वह स्कूल के बारे में सोचती है। लड़कियों से बचपन से ही कहा जाता है कि 'पढ-लिख लो वरना कोई ढ़ंग का लड़का नहीं मिलेगा। सारी उम्र हमारी छाती पर मूँग दलोगी। पढ़-पढ़कर थक जाओ और सुस्ताने को जरा बिस्तर पर अधलेटे हो जाओ तो कहेंगे, अहदन हो जाओगी तो कौन पूछेगा ससुराल में। आजकल के लड़के पतली-छरहरी लड़की चाहते है मूटा गयी तो ढ़ंग का लड़का..."[192]

---

[192] समागम मृदुला गर्ग, पृ. **23**

लड़की के घर के सामनेवाले मकान में एक लड़का हमेशा पढ़ता रहता दीख पड़ता है।लड़की छत पर कपड़े सुखाने केलिए आते समय, चाहे सुबह हो या शाम, हर वक्त उस लड़के को किताबी कीड़े की तरह हमेशा पढ़ता देखती है।एक दिन छत पर कपड़े सुखाने केलिए आये तो वह देखती है कि लड़का छत की मूंडेर के पास खड़ा नाच रहा है।वह सोचती है कि क्या वह लड़का पढ़कर पागल हो गये।लड़के का नाच उसे बहूत पसंद होता है।वह निर्निमेष नाच देख रही है।लड़की की मां पुरानी और संकीर्ण विचारोंवाली औरत है।वह लड़की पर कड़ा नियंत्रण करती है।लड़की नाचना पसंद करती है।पर मां का कड़े नियंत्रण से वह दबी रहती है। 'मेरा कितना मन करता है नाचने को।पूछे पर मां ने चोटी खींचकर उखाड़ ही दी थी समझो।'[193] छत पर लड़के अपने मनमाने ढ़ंग से नाचता है।यह देखकर बेचारी लड़की के मन में भी नाचने की चाह पैदा होती है। "मैं नाचूँ? यहां कौन देखेगा? मैं हौले से छत पर उतरी।नहीं, पैरों की धमक कहीं मां ने सुन ली, अपनी धुन में उनके लौटने का पता भी नहीं चलेगा, सिर कलम कर देंगी।छत पर किसे रिझाने को नाच रही थी शंड।'[194]मिश्रा टीचर की बदौलत वह स्कूल तो जा पाती है।वह पिता द्वारा परित्यक्ता है।मां के साथ जीवन बिताती है।पिता भी न होने पर माता कड़ा नियंत्रण करती है, कभी-कभी घुडकियॉ पिटाई और गालियों से अपना कोध प्रकट करती है।मां के इस बर्ताव से वह बहूत दुःखी हो जाती है।मां पर हरदम गुस्सा आता रहता है।वह लड़की अपने को नकारा समझती है और पढाई में मन नहीं लगाती है।फिर वह सोचती है कि इस घर से निकलने पर ही उसे मुक्ति मिलेगी।पर पिताजी जैसा 'लड़का' मिल जाए तो क्या होगा।वह अपनी मां की तरह दुखी निर्दयी झगडालू बदसलीका औरत नहीं बनना चाहती है।पतंग उड़ाने की इच्छा भी होती है उस बेचारी को।पर मां को पता मिलें तो झिड़केगी। इस स्थिति में निराश होकर वह अपनी तुलना सामनेवाले लड़के से करती है। "अभी मैं पतंग उड़ाना चाहती हूँ,उडा सकती हूँ क्या? उसका क्या है, लड़का है, चाहे कुर्सी पर बैठकर पढ़े, चाहे छत पर नाच-नाच कर पतंग लहराये।अपनी मर्जी का मालिक है।न डांट-

---

[193] समागम मृदुला गर्ग, पृ . **23**

[194] वही,पृ . **24**

फटकार, न ताने-कोसने, न अच्छे लड़के की प्रतीक्षा में जेल की कैद।उससे कोई नहीं कहता होगा, पैदा होते ही क्यों न मर गयी डायन।'[195]वह दुखी होकर सोचती है कि अगर उसकी भाई जिन्दा रहता तो दोनों मिलकर पतंग उड़ाने की आशा पूरी कर सकते।वह जल्दी छत से नीचे न उतर आने पर मां छत पर चढ़कर उसे गालियां देती है और घूसा मारा जाता है।तब वह मोच का बहाना बनाकर वही बैठ जाती है।मलने केलिए मां पैर पर हाथ रखती है तो वह ज़ोर से चीखती है।अम्त में मां मिश्रा बहन जी को बुलाने केलिए नीचे उतरती है।तब वह उठकर उसी प्रकार नाचने लगती है जैसे वह लड़का नाचता था आत्मविभोर होकर।अब उसे लगता है कि हाथ में चरखी और मांझा है और दूर आसमान में ऊपर-ऊपर उठती लहराती पतंग। "मैं उठी और छत पर पांव जमाकर ठीक वैसे ही नाचने लगी जैसे वह नाचा था आत्मविभोर ।मुझे लग रहा था मेरे हाथ में चरखी और मांझा है और दूर आसमान में ऊपर ऊपर उठता लहराती पतंग।'[196]

बंदिशों से मुक्त होकर नाचने की बातें करने की और स्वच्छन्द होकर जीने की इच्छा प्रायः सभी लड़कियों में होती है।लेकिन भारत वर्ष में समाज में नारी को दूसरा स्थान मिला है।जन्म से अम्त तक समाज उस पर कठोर नियंत्रण रखता है।स्वभावतः कठोर नियंत्रण और दबाव में जीनेवाली के मन में स्वतंत्रता की भावना का विस्फोट हो जाता है।कभी-कभी सहनशीलता की भी इति होती है।प्रस्तुत कहानी की नायिका अंत में अपनी अस्मिता को जगाकर आत्मविभोर होकर नाचती है।तब उसे भय नहीं सताता है।वह सचेत हो जाती है और मां द्वारा या समाज द्वारा किये जानेवाला कड़ी नियंत्रण के विरोध में विदोह भी करती है।

'मेरा'

मातृत्व की प्राप्ति स्त्री के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंश है।मातृत्व प्राप्ति की सहज इच्छा प्रत्येक स्त्री में होती है।परन्तु भौगोलिकरण और महंगाई के इस युग में प्रायः सभी पति पत्नियों को एक या दो बच्चे होते हैं। 'डबल इन्कम नो किट्स' का नारा लगाकर आज की स्वार्थी नर

---

[195] समागम मृदुला गर्ग, पृ **28**

[196] वही, पृ .**30**

नारी सुखी जीवन बिताना चाहते हैं। भारत में गर्भपात को भी कानून का संरक्षण मिलता है। कभी कभी पति पत्नी असुविधाओं से बचने केलिए गर्भपात करते हैं।

मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'मेरा' कहानी में अपने मातृत्व के अधिकार की रक्षा करने केलिए जूझनेवाली मीता का चित्रण हुआ है। नायिका मीता सेतु ट्रेवल्स एजेंसी के दफ्तर में काम करती है। नायक महेंद्र अपने बॉस केलिए बंबई-कलकत्ता-मद्रास के टुर की बुकिंग करवाने सेतु ट्रेवल्स एजेंसी के दफ्तर आया था। रिसेप्सनिस्ट अलका छुट्टी पर थी इसलिए मीता ने उसका काम करवा दिया था। अगले दिन महेंद्र फिर आया था धूप का चश्मा दफ्तर में रहने का झूठा बहाना बनाकर वह आया था। अगले हफ्ते के कई दिनों में वह मीता को देखने केलिए आया था। अंत में दोनों ने शादी करने का निर्णय लिया।

महेन्द्र एक छोटी सी फर्म में अप्रेंटिस इंजिनीयर है। वह अमेरिका जाकर एम. एस. स्कौलरशिप के साथ करने केलिए एप्लिकेशन भेजता है। उसकी आशा है कि एम. एस. करने के बाद दो-चार साल नौकरी करे और पैसा कमाकर यहां लौट आये और अपना कोई बिजनेज भी शुरू करें। अबी पांच छः साल बच्चा किसी हाल में नहीं होना चाहिए। फिर मीता चाहे जो करे। दो-तीन, जितने चाहे, बच्चे पैदा करे।

मीता गर्भनिरोधक गोलियॉं दो-एक बार भूल जाती है और गर्भवती हा जाती है। वह संतुष्ट गर्व और सलज्ज मुस्कुराहट के साथ अपना महत्वपूर्ण समाचार पति को सुनाती है। अमेरिका जाने के सपने संजोनेवाला, पैसा कमाने की धुन रखनेवाला, बंगला, गाड़ी, फ्रिज, एयरकांडीशनर, नौकर-चाकर इन सभी सुविधाओं को पाने का इच्छुक महेन्द्र बच्चा इतनी जल्दी आना पसंद नहीं करता। अपनी भावी उन्नती की कामना के संघर्ष में आनेवाले बच्चे को वह बाधक मानता है। महेन्द्र अपनी योजनाओं को साकार करने केलिए जल्दी संतान नहीं चाहता है। वह पत्नी से गर्भपात करने केलिए कहता है। और अगले बच्चे केलिए पांच साला बाद शुरू जाने का वायदा भी करता है।

लेकिन मीता मां बनना चाहती है।

"नही, कभी नहीं" मीता छिटककर अलग जा पड़ी, जैसे बिजली का नगा तार छू गया हो।

"मीता, और कोई उपाय नहीं है।"

"नहीं, कभी नहीं।मैं जानती थी कि तुम इतने क्रूर हो, अपने बच्चे को खुद मारोगे।"

"यह मारना नहीं है।"

"मारना है। बिलकुल है।नहीं, पैदा होने से पहले नहीं मरने दूँगी मैं अपने बच्चे को।"

"मीता समझने की कोशिश करो..."

"नहीं" मीता जोर से चीखी, "तुम जाओ।अभी अमेरिका चले जाओ। तुम हत्यारे हो, अब नहीं तो बाद में मार डालेगे बच्चे को।"[197]

महेन्द्र, मीता के सामने हारना नहीं चाहता।वह अपनी असुविधाओं को दूर करने केलिए फिर भी पत्नी से गर्भपात करवाने केलिए कहता है।मां की सलाह लेने का आदेश देकर वह दफ्तर जाता है।मीता मायके में जाती है।माता भी गर्भपात कराने का सुझाव देती है।वह निराश होकर लौटी।दोनों सुबह डॉक्टर को देखने केलिए अस्पताल गये।मीता एबार्शन केलिए बिल्कुल भी तैयार नहीं है।किन्तु पति की इच्छा से विवश वह अस्पताल पहूँचती है।महेन्द्र डॉक्टर से बात कर रहा था और मीता बराबर डॉक्टर को देख रही थी।

डॉक्टर मेज पर पड़े कागजों की ढ़ेर में से एक फॉर्म निकाला और मीता की तरफ बढ़ा दिया।और सपाट स्वर में फॉर्म भरने को कहा।डॉक्टर से बातचीत करने पर उसे पता चलता है कि यह उसका बिलकुल निजी मामला है।यह समझकर मीता आगे बढ़ाकर महेन्द्र के हाथ से फॉर्म ले लेकर खच से फाड़ डालती है। "अकंपित दृढ़ हाथों के बीच उसने उसे पकड़ा और खाच से चीर डाला।दोनों टुकडों को साथ रखा और फिर खच से चीर दिया।टुकडों को फिर रखा, फिर चीरा, फिर रखा, फिर चीरा और तब तक रखती-चीरती चली गई, जब तक उनकी चिंदी-चिंदी न हो गई।फिर पास पड़ी रद्दी की टोकरी में उनकी बौछार करती हुई वह उठ खड़ी

---

[197] स्थगित काल : मृदुला गर्ग, पृ. 100

हुई।'[198] अब वह तर्कों के घेरो से बाहर निकल जाती है और अपने अकाट्य और ओजस्वी तर्क को हाथ में लेकर स्वनिर्णय के आधार पर बच्चे को जन्म देने का निश्चय कर लेती है।

शिक्षित आत्मसजग, आत्मनिर्भर तथा चेतना संपन्न नारी को प्रस्तुत कहानी में देखने को मिलता है।पूवे दीप्ति शैली में रचित है प्रस्तुत कहानी।पुरूष मानसिकता जो मुखौटा नारी को पहनाती है ।आज की नारी उस मुखौटे को उतारकर फेंक देती है।मातृत्व के संबन्ध में भी आधुनिक नारी अपने स्वतंत्र विचारों से युक्त है।महेन्द्र अपनी योजनाओं को साकार करने केलिए पितृत्व भी डालना चाहता है।लेकिन मीता मां बनना चाहती है और गर्भपाता न करने का निर्णय लेकर अपने मातृत्व के अधिकार की रक्षा करती है।इस प्रकार अपने व्यक्ति स्वातंत्रय का परिचय भी देती है।

'क्षितिज'

दांपत्य जीवन की विसंगतियां नारी अस्मिता को गहरा आघात पहूँचतीी हैं।इस यथार्थ का चित्रण करने में दीप्ति खण्डेलवाल को बड़ी सफलता मिली है।डॉ. पुष्पपाल सिंहा ने ठीक ही लिखा है 'दांपत्यगत दूरियों, अपूर्णता, रिक्तता बोध और एकाकीपन के दंश ने अनेक वैवाहिक संबन्धों को खोखला और मत्र जीने की मजबूरी का रूप दे दिया है, दंपती चुपचापा इस विष को जीने केलिए पीने को अीभशप्त हैं।दांपत्य का यह विष दीप्ति की कहानियों में पूरी तरलता में देखा जा सकता है।"[199]

दीप्ति खण्डेलवाल द्वारा कृत 'क्षितिज' की नायिका मनोविज्ञान में एम. ए. के बाद कॉलेज में मनोविज्ञान पढ़ाती है।पति रवि ऑक्सफोर्ड के ग्रेजुएट है अंग्रेजी के प्रोफेसर है।दोनों का प्रणय विवाह हुआ।क्लास के बाद घर पहूँचने केलिए फ्लैट की सीढ़ियां चढ़ते समय पत्नी स्वयं को सीढ़ी के समान कहती है। "...मुझे लगने लगता है जैसे मेरा अस्तित्वमात्र सीढ़ियों सा है जिन पर मैं स्वयं ही चढ़ा उतरा करती हूँ।' [200]रवि से नायिका का प्रणय चलते समय रवि के

---

[198] स्थगित काल : मृदुला गर्ग, पृ. **123-124**

[199] समकालीन कहानी ःयुगबोध का संदर्भ डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. **156**

[200] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. **9**

दृष्टि निक्षेप से लेकर गूँजती हँसी तक सभी कुछ उसे बिलकुल अपेक्षित थे तो अब ये सब अनपेक्षित में बदलता है। रवि क्लब चलाने को कहते है लेकिन वह तैयार नहीं है। उनका स्वर रूखा है क्योंकि उसे पति संपूर्ण रूप में नहीं पाता है। "मेरा स्वर रूखा है, मेरे मुख पर कठोर रेखाएँ उभर आयी होंगी, रवि का स्पर्श इन्हें कोमल कर सकता है, लेकिन रवि क्लब में बैडमिंटन खेलेंगे, मैं ड्रेसिंग-टेवल के सामने बैठी क्रीम मलूँगी।"[201]

प्रणय-दिनों में या वैवाहिक जीवन शुरू करते समय पति-पत्नी एक दूसरे को वास्तव में प्यार करते हैं। लेकिन आगे चलकर इस संबन्ध में ऊब और दूरियाँ आरंभ होने लगती है। मन भी अतृप्त है। इलस्ट्रेटड वीकली में रवि का एक आर्टिकल प्रकाशित हुआ है जो उसकी अम्ग्रेज़ी थीसिस का एक अंश है। रात के नौ बजे को रवि वीकली के पृष्ठ पलट रहे हैं। यह देखकर पत्नी मैगज़ीन उनसे छनिकर टुकड़े-टुकड़े कर डालना चाहती है। पत्नी मनोविज्ञान में पी. एच. डी . करना चाहती है, विषय भी निश्चित कर लिया है। इसके बारे में पति से कहते समय रवि उबासी लेकर एक कप कॉफी मांगते हैं। तब असमर्थ क्रोध के आवेश से उनकी शिरायें झनझन गई हैं। इन क्षणों में उनकी अस्मिता ओर भी जाग उठती है और वह सोचती है कि "अच्छा होगा मैं रवि से तलाक ले लूँ, ऐसे ठंडे संबन्ध-को कैसे निभाया जा सकेगा जो विष बुझी सुइयों-सा मुझे चुभता है चुभता रहता है... जी स्लो पायज़न-सा धीरे-धीरे मेरे रग रेशों में उतरा जा रहा है जो मुझै एकबारगी ही समाप्त नहीं कर देता वरन् मेरी जीवन की चेतना की अचेत किये देता है।"[202] वह पहचानती है कि शादी एक 'बायेलौजिकल नौसीसिटी' हैं बाकी प्रेम वेम सब बकवास है।'

पत्नी सच्चे दांपत्य सुख केलिए-जो उसको प्राप्य है, तरस रही है मछली की तरह तड़प रही है। तब पति तीसरे की उपस्थिति का वायदा करता है। पत्नी चुपचाप सहने केलिए तैयार नहीं है। वह अपनी अस्मिता को छोड देने केलिए तैयार नहीं है। वह पति के सवाल का जवाब-ई

---

[201] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ . 12

[202] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ . 14

ंट का जवाव पत्थर से-देती है। 'आज वहूत खुश हो डार्लिंग, क्या अजीत आया था?...तुम भी तो बहूत खुश हो, क्या मिस चौधरी को कार लिफ्ट देने का अवसर मिल गया था ?.."[203] दोनों के बीच की दूरियों को मिटाई जा सकती है।लेकिन वे मिटाने को तैयार नहीं है।वे स्वयं ही मिट जाते हैं।पति पत्नी के प्रगाढ़ मिलन क्षणों में भी नारी को विद्रूप और रीतापन झेलना पड़ा है।

प्रस्तुत कहानी की नारी अपने अस्तित्व को कायम रखने केलिए एक शस्त्रविहीन युद्ध करती दिखाई पड़ती है।प्राचीन काल की नारियां सारी पीड़ायें चुपचाप सहती थीं।लेकिन आधुनिक नारियां अपनी अस्मिता की चोट खाने केलिए तैयार नहीं है।वह ईंट का जवाब पत्थर से देती है।इस प्रकार अस्मिता का संरक्षण वह स्वयं करने केलिए जागरूक भी है।

'ढाई आखर प्रेम का'

प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार नारी का जीवन पुरूष पर ही आश्रित होता है।पुरूष से ालग होकर जीवन विताना उसके लिए संभव नहीं है।पति के प्रति जिन्दगी भर निष्ठाावान रहना नारी का पहला धर्म है।पर सन **1970** के बाद इस परिदृश्य पर बहूत द्रुत गति से बदलाव आया है।नारी शिक्षा ने नारी को आगे बढ़ाया।नारी ने घर परिवार की लक्ष्मण रेखा को पार किया।उसने चूल्हे चौके की घुटन को छोड़ दिया और सभी पुरूष क्षेत्रों में समानता के स्तर पर पदार्पण किया।

मणिका मोहिनी की 'ढाई आखर प्रेम का' कहानी नारी के इन दोनों पक्षों को विभिन्न पात्रों द्वारा रूपायित करती है। 'वह' पति द्वारा उपेक्षित है और 'मैं' शादी से पहले प्रेमी से छोड़ा है। 'वह' आधुनिक है।पति के बारे में पूछे तो वह पति को 'बड़ी बकवास चीज़' बताती है।इस प्रकार वह विवाह संस्था को अस्वीकार करती है। " ...यार यह पति बड़ी बकवास चीज़ होता है ।"[204] पारंपरिक विचारोंवाली मैं यह मानने को तैयार नहीं है। 'मैं' के मत में घर में पति हो तो सुख नियमित रूप से मिलता रहता है और दो तीन बच्चे होने पर घर पूरा हो जाता है।लेकिन आधुनिक विचारोंवाली वह अपनी अस्मिता को पति और बच्चों केलिए त्याग देने

---

[203] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल,पृ **15**

[204] ढाई आखर प्रेम का मणिका मोहिनी, पृ . **11**

केलिए तैयार नहीं है। "भीड-भाड़ चिल्ल-पौं की आदत अब खत्म हो गयी है।कितनी अच्छी जिन्दगी है।न कहीं जाने केलिए किसी से आज्ञा लेनी और किसी के लौतने की प्रतीक्षा।मन आये खिचड़ी बनाओ, मन आये बाज़ार में खाओ।कितनी अच्छी जिन्दगी है।है न"[205]

'मै' और 'वह' में एक मूलभूत अन्तर है।इसलिए मैं इस बात को मानने केलिए तैयार नहीम् है।वह तीन बच्चों की मां है।तलाक के बाद तीनों बच्चों को पति द्वारा छीन लेने पर वह बहूत मुक्त अनुभव करती है।एक तरह से अच्छा ही हुआ कि मैम् पूरी तरह से मुक्त हो गयी।बच्चों के रहते औरत कै कोई कीमत नहीं होती।"[206] वह बच्चों के छिन जाने को अपना सौभग्य समझती है।उसकी राय में विवाह आवश्यक है लेकिन आदर्श स्थिति नहीं है आदर्श स्थिति तो अकेलापन है। 'लेकिन उसका कहना था कि विवाह आवश्यक होते हुए भी आदर्श स्थिति नहीं है।आदर्श स्थिति है अकेलापन।विवाह ज़रूर करो, परन्तु कुछ वर्षो के वैवाहिक जीवन का उपभोग करने के पश्चात न चल सके तो उसे छोड़ दो।"[207]यह सुनकर परंपरावादी मैं आश्चर्यचकित हो जाती है।वैवाहिक जीवन टूट जाने पर साधारण स्त्रियों की तरह रोने धोने में वह विश्वास नहीं करते " अब हम रोने धोने में विश्वास नहीं करते .... ।...इश्क करने में ।अब हम हज़ारों इश्क करेंगे।हमें जिन्दगी जीने की पूरी छूट मिली हैं।अब हम जिन्दगी को पूरी तरह जियेंगे... ।"[208]

उसका एक प्रशंसक कई सालों बाद परदेश से लौटा है।इसलिए 'वह', 'मैं' को साथ लेकर डिनर केलिए जाता है।लेकिन 'मै' यह पसन्द नहीं करती है।इतनी रात तक किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ समय बिताने से उसे संकोच हुआ।संकोच को ओढ़ने केलिए मैं फिर उसके साथ कॅफी पीने का वायदा करती है तो 'वह' अपनी अस्मिता की शक्ति को प्रकट करने केलिए कहती है कि "पागल? वह हॅसी थी, "कॉफी क्या मैं और तू अकेले नहीं पी सकते?

---

[205] ढाई आखर प्रेम का मणिका मोहिनी, पृ . 11

[206] वही, पृ . 12

[207]वही, पृ. 13

[208] वही, पृ । 14

किसी का अहसान भी लें तो क्या सिर्फ कॉफी केलिए?" [209] यात्रा के दौरान 'मैं' डर लगने की बात कहती है तो वह अस्मितापूर्वक फुसफुसाती है कि "जब मैं तेरे साथ हूँतो तुझे कैसा डर?"[210]

घर लौटने पर 'मैं' अपनी नापसन्द प्रकट करती है तो 'वह' उस अमीर आदमी से प्रेम करने का वायदा करती है लेकिन 'मै' पूर्णतया इनकार करती है।प्रस्तुत कहानी में नारी की परिवर्तित मनःस्थिति का चित्रण किया गया है।विवाह, प्रेम, पातिव्रत्य और मातृत्व की कामना पर आज की नारी के परिवर्तित दृष्टिकोण को रूपायित करने का सफल प्रयास इसमें हुआ है।आज की नारी प्रेम, विवाह और मातृत्व के नाम पर परिवार केलिए अपनी जिन्दगी कुर्बान करने केलिए तैयार नहीं है।वह अपनी अस्मिता को पहचानकर उसको बनाए रखते हुए जीने केलिए श्रम करती है।

'हम बुरे नहीं थे'

ईमानदार रहना वैवाहिक जीवन की जीत केलिए अनिवार्य है।पति का पत्नी के प्रति और पत्नी का पति के प्रति ईमानदार रहना पहला धर्म है।इस आस्था पर शंका आने पर परिवार टूटते लगता है।जीवन साथी के मित्रों के साथ अच्छी मित्रता निभाना भी आवश्यक है।यदि पति आधुनिक विचारधारा रखनेवाला है तो पत्नी को भी आधुनिक बनाने की ज़रूरत पड़ती है।अन्यथा दोनों के बीच संघर्ष शुरू होता है।

'हम बुरे नहीं थे' मणिका मोहिनी द्वारा कृत सशक्त अस्मितावादी कहानी है।प्रस्तुत कहानी की नायिका 'मैं' अब केवल लाश है। 'मैं' का पति ताश खेलनेवाला है।'मै' रात के बारह बजे तक उसकी प्रतीक्षा करती बरामदे में ऊँगती है।जिस दिन पति ज़्यादा हारता है उस दिन वह ज़्यादा शराब पीता है।और जिस दिन जीतते है उसदिन रातों में पत्नी से प्यार भरी बातें करते है।फिर सुबह उठकर अपने दोस्तों की बीवियों की प्रशंसा करते है। 'मैं' परंपरावादी

---

[209] ढाई आखर प्रेम का मणिका मोहिनी, पृ. 19

[210] वही ,पृ . 19

है।इसलिए क्लब और पार्टी के जीवन को पूर्णतः स्वीकार न कर सकती।वह अपने पति की आधुनिक धारणा के अनुरूप नहीं आ पाती है।

मैं अपनी नियती को पातिव्रत्य में ढालनेवाली मां को कोसती है जिसने मुझे यह संस्कार पढाया है।इससे 'मैं' को यह मॉडन जीवन जीना नहीं आता।मेरी शादी से पहले तो मां मुझे देवी लगती रही लेकिन शादी के बाद मुझे हमेशा यही लगा कि मां ने मेरी मां बनकर बहूत गलती की।

पत्नी, पति की तुलना मकान-मालकिन के छोटे लड़के से करती है।पति के मुंह से बार-बार दोस्तों की बीवियों की तारिफ सुनकर गुस्से में नायिका मकान-मालकिन के छोटे लड़के को राखी बांधकर भाई बनाती है।एक दिन यह राखी बन्ध भाई को पत्नी के कमरे में बैठकर देखें तो पति, व्यंग्य रूप से पूछते है कि वह भाई है या यार? मकान-मालकिन के छोटे लड़के को भाई बनाने से पति को कोध आता है और वह पत्नी को बूरी तरह पीड़ा देता है और दिन-प्रतिदिन गालियां भी देता है।

प्राचीन काल की स्त्रियां पतिदेव की सारी बातें चुपचाप सहकर जीवन बिताती थीं।आधुनिक युग में पढ़ी-लिखी अस्मिता को पहचाननेवाली नारियां अपने अस्तित्व को मर्दो के सामने झुकाने केलिए तैयार नहीं है।प्रस्तुत कहानी की नायिका भी सोचती है कि '...क्यों नहीं है मुझमें हिम्मत यार बनाने की? मैं खुबसूरत हूँ, जवान हूँ, पढ़ी-लिखी हूँ, क्या मैं सिगरेट और शराब नहीं पी सकती? क्या मैं आंखों से इशारे फेंकते हुए लड़कों से बात नहीं कर सकती? मेरे पति ने आखिर समझा क्या है।मैं भी मिसेज कृष्णकान्त की तरह दिल खोलकर पैसे डाल सकती हूँ, मैं भी मिसेज़ सरीन की तरह ब्लाइंड में पुरूषों को मात करने की कला सीख सकती हूँ, मैं भी मिसेज़ शर्मा की तरह हल्के-फुल्के रोमांस कर सकती हूँ।मेरे पति को आखिर घमंड किस बात का है...'[211] आगे चलकर पत्नी मकान-मालकिन के बड़े लड़के को दोस्त बनाती है जिससे पति भी खुश है क्योंकि उसकी पत्नी भी आधुनिक हो रही है।फिर धीरे-धीरे पति से बातें करने के

[211] ढ़ाई आखर प्रेम का ः मणिका मोहिनी, पृ.25

लहजे में अन्तर आने लगा।एक दिन पत्नी ने मकान-मालकिन के बड़े लड़के की बात छेड़ी तो उसकी बात काटकर पति ने कहा "यह तो साला अच्छा-खासा त्रिकोण बन गया।तीन पत्ती घर में शुरू हो गयी।"[212] तब पत्नी का विद्रोही मन सोचती है कि 'बादशाह-बेगम के साथ इक्का आ गया है।फर्स्ट क्लास पाकर भी तुम्हें चैन नहीं है।"[213] लेकिन वह चुप रही पति का ताश खेलकर रात को देर से आने का कम चलता रहता है और पत्नी का इक्के के साथ गम गलत करने का कम भी।

एक दिन पत्नी-पति की प्रतीक्षा करके बरामदे में बैठती है।जब दरवाज़े पर थप-थप की आवाज़ सुनाई वह दरवाज़ा खोलती है।अचानक एक पतली चमकदार तेज धारवाली चीज़ उसकी छाती में घुसता है।अब वह लाश बनकर अतीत की याद करती है।मातम मनाने केलिए आये लोग भी उसे बूरी औरत समझती है तो वह सोचती है कि 'यह बात कहकर उन लोगों का मुँह बन्ध कर दूँ कि 'आई वाज़ नॉट बैड आई वास मेड बैड।'[214] लेकिन अब वह लाश है किसी से कुछ नहीं कर सकती।पति, लाश पर पड़कर सती-सावित्री पुकार कर रोता है।तब पत्नी पति के आंसु को मगरमच्छ के आंसु का विशेषण भी देना चाहती है।

सही है, स्त्रियां स्वयं बैड़ नहीं बनती है समाज या दूसरे उन्हें बैड़ बनाते हैं।परंपरावादी नारी पति द्वारा दी गयी पीड़ा चुपचाप सहती है, लेकिन आगे चलकर अस्मिता को पहचानती है और विद्रोही बन जाती है।

'एक पारो पुरवैया'

वैवाहिक जीवन के प्रति नारियां रंग-भरे स्वप्न बुनती हैं।लेकिन वास्तव प्रायः सपनों से भिन्न प्रकार के होते हैं।विवाह के आरंभिक दिनों में पति पत्नी एक-दूसरे को प्यार करते हैं।आगे चलकर यह प्रेम धीरे-धीरे कम हो जाता है और वे समझ लेते हैं कि सारी इच्छाएं या

---

[212] ढ़ाई आखर प्रेम का ः मणिका मोहिनी,पृ . **25**

[213] वही, पृ . **25**

[214] वही, पृ . **26**

ओभलाषायें कभी भी पूरी नहीं हो सकतीं।दांपत्यगत दूरियां भी बढ़ती हैं।संघर्ष भी पैदा होते हैं।कभी कभी तीसरे की उपस्थिति भी होती है।

दीप्ति खण्ड़ेलवाल कृत 'एक पारो पुरवैया' की सुधा कॉलेज में काम करती है।पति सुरेश एक कंपनी के हैड ऑफिस में काम करता है।एक बेटा और बेटी भी होती है।नौकरीपेशा नारी को दोहरा दायित्व निभाना पड़ता है।सुधा अपने दोहरे दायित्व से थक है।एक दिन वह बाज़ार में मित्र अरूणा दीदी को देखती है।जो उसे 'पुरवैया' पुकारती है बातचीत के बीच वह गट्टे उभर आये हाथ दिखाती है।बहूत कठोर काम करने से हथेली की मृदुता नष्ट हो गया है।तब वह विद्रोही स्वर में सास और पति के विरूद्ध क्रोध प्रकटकर कहती है कि "नौकर आजकल मिलते कहॉ है और मिल भी जाए तो सासजी या पतिदेव उन्हें टिकने कहां देते ह? और फिर तुम्हारी पुरवैया है न दीदी, सारा धन्धा समेटने केलिए" [215] कॉलेज में वह जूनियर लेक्चरर है पर घर में केवल नौकरानी।वह एक कुशल गृहिणी, ममतामयी मां और सेवाभावी पत्नी है।लेकिन वैवाहिक जीवन में वह बेहद असहाय और अकेली है।सुरेश भी स्वस्थ शरीर, संतुलित सा व्यक्तित्ववाला है लेकिन चेहरे की रेखाओं में गणित के आंकड़े, जैसे प्रतिक्षण जोड़ बाकी, गुण-भाग का-हिसाब लगा रहे हों।अपने पुरूष के बारे में सुधा की राय है कि " . . .लौटी तो सुरेश ने दबोच लिया. . . वह पति पुरूष का हक मांगते नहीं, वसूल लेते हैं. . . बहूत कैलक्युलेटिव है सुरेश, हर बात का हिसाब रखते हैं-महरी की तनख्वाह तक का. . . ।दीदी, सुरेश केवल इनमें डुबते हैं।'सुधा ने अपने उन्नत वक्ष पर उंगली रख दी 'और मैं अर्पित होकर भी समर्पित नहीं हो पाती"[216]

कॉलेज में पढ़ते समय सुधा अमित को प्यार करती थी।लेकिन अमित ने उसे ठुकराकर एक मिनिस्टर की बेटी से विवाह किया।आज अमित भारत सरकार के कार्यालय में एक उच्च पद पर कार्यरत है।सुधा साफ सुधरे, स्वस्थ, सुन्दर दो बच्चों की माता होने पर भी अमित को प्यार करती है।उस प्यार को भूलने केलिए वह तैयार नहीं है।प्राचीन काल की पतिव्रता नारी

---

[215] कड़वे सच ः दीप्ति खण्ड़ेलवाल, पृ . 42

[216] वही, पृ . 47

को जीवन में और मन में एक ही पति होता था लेकिन आधुनिक विचारोंवाली युवतियां अपनी अस्मिता को स्थान देती है औरा इच्छानुसार जीवन बिताने का धैर्य दिखाती है। 'सुधा कह रही थी कि "मैं पत्थर हूँ...मैं पत्थर हूँ या मैं ने पत्थर रख लिया है उस मन पर, जिसे मैं ने बार बार बिखरते, टूटते, खंड-खंड होते देखा है।कितने खंड-खंड होते देखे हैं मन में मैं ने कि सोच लिया है मन के इस चपल अश्व की बागडोर खींचकर ही रखूँ, बहकने पर यह अपने साथ अपने रथ और सारथी को भी किस अतल गर्त में जा पटकेगा, कौन जानता है ? फिर भी यह चपल अश्व वह का है...और बागडोर को कसकर खींचते मेरे हाथों में छाले पड़कर रह गए हैं...सुधा नहीं संभाल सकी है इस अश्व को बागडोर उसके हाथों से छूट गई है...मैं खींच दूँ यह बागडोर...शायद सुधा बच जाए।"[217] वह फिर भी अपना प्यार प्रकट करके कहती है कि '...जानती हूँ, मेरा घर है, पति हैं, बच्चे हैं, लेकिन कौन-सा कर्तव्य नहीं निभा रही हूँ में? किस जिम्मेदारी से मुंह फेरा है मैं ने? और फिर भी अमित को नहीं भूल सकी हूँ मैं...पागलपन ही सही, लेकिन यह सच है कि अमित आज मेरे मन में है।"[218] पति और बच्चे होने पर भी वह पूर्व प्रेमी को मन में स्थान देती है और यही सच ऊँचे आवाज़ में प्रकट करने का साहस भी प्रकट करती है।वह परंपरागत पत्नी भी बनना चाहती है। पति द्वारा जूड़े में फूल लगाना, पति के साथ गीत गाना, पति द्वारा मानना ये सब चाहती है।सुरेश कभी-कभी उसे मार बैठते है।दूर के रिश्ते का देवर-जो नगपूर में इंजीनियरिंग पढ़ते है-विजय अपनी भावनाओं से उन चोटों को सेंकने लगाता है।अब उसके मन में विजू है।विजू के बारे में वह कहती है कि " ...मुझे लगने लगा कि विजू साथ रहे तो जिन्दगी का यह सारा जहर मैं पी लूँगी...मेरे दग्ध नारीत्व पर फुहारें बरसा दी थी विजू ने...विजू का स्वर शायद मेरी पुकार का वह प्रत्युत्तर था जिसे हर नारी मन अपने पुरूष से

---

[217] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ . 48

[218] वही, पृ. 48

चाहता है चाहता रहता है।"[219] लेकिन विजू भी उसको छला है। अन्त में वह अपने को पुरवैया नहीं 'पारो' नाम से पुकारती है।

साधारणतः भारतीय नारी विवाह के बाद पतिव्रता बनती है। उसका शरीर और मन पति केलिए अर्पित है। अन्य पुरूषों को देखना या बातचीत करना परंपरा के विरूद्ध है। लेकिन आधुनिक नारियां सचेत हैं और अस्मिता के प्रति जागरूक भी हैं। अपनी अस्मिता को दूसरों के सामने समर्पित करने केलिए वे तैयार नहीं हैं। यहां सुधा भी अपने प्रेमी के प्रति जागृत है। पत्नी का कर्तव्य निभाने के साथ-साथ अपने प्रेम को ऊँचे आवाज़ में प्रकट करने का साहस भी उसमें है।

'शेष अशेष'

कहावत है 'विवाह स्वर्ग में होता है' आधुनिक युग में यह केवल कहावत मात्र है प्रयोग में इसके विरूद्ध ही जिन्दगी चलती है। सदैव एक साथ रहने केलिए प्रस्तुत स्त्री और पुरूष के संबन्ध को विवाह का नाम देते हैं। यह संबन्ध प्यार और घनिष्ठ विश्वास पर आधारित है। और पति या पत्नी के अन्त तक यह संबन्ध जारी रहना चाहते हैं। लेकिन आज वैवाहिक संबन्ध कभी-कभी केवल बंधन हो जाता है। स्त्री और पुरूष परिवार के पूरक है। एक के अभाव में परिवार स्थित नहीं है। प्राचीन काल में परिवार में पत्नी पति के निर्देशक को सिर पर धारण करती थी। आधुनिक युग में नारी शिक्षा ने नारी के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है। नारी अपने को पुरूष के समकक्ष मानती है।

दीप्ति खण्डेलवाल कृत 'शेष अशेष' की नायिका राची कॉलेज में लेक्चरर है। वह नैरेटर मनु जो विवाहित और मधु के पापा भी है से अवैध-संबन्ध स्थापित करती है। राची के कस्बे का गंडा रज्जन ने वर्षों पहले उसका बलात्कार किया था। बाद में चौधरी से राची का विवाह हो गया। लेकन इन दोनों की अपेक्षा नैरेटर के प्रति राची के मन में अधिक लगाव है। एकबार बातचीत करते समय नैरेटर इस संबन्ध को प्यार या विवाह का नाम देना चाहता है तब वह

---

[219] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ . 48

कहती है कि "न मनू प्यार और विवाह जैसे नाम अब मुझे निरर्थक लगते हैं। स्त्री और पुरूष के संबन्ध को सदा इस बंधन में बांधा गया है और फिर ये बंधन इतने कसे गये हैं कि इनमें बंधे संबन्ध सांस लेने केलिए भी घुटते रह गये हैं। शायद तुम कहो कि मैं मुक्तभोग की वकालत कर रही हूँ। नहीं, मनु, मैं मात्र अपने लिए केवल एक सहज स्थित मांग रही हूँ, जो एक पुरूष होने के नाते तुम मुझे दे रहे हो। मैं तुम्हारा घर नहीं उजाड़ना चाहती, न तुम्हें किसी बंधन में बांधना चाहती हूँ। बस, चाहती हूँ कि तुम जिन्दगी के एहसास की तरह मेरे पास कहीं बने रहो कि मैं सकूँ।"[220] इसप्रकार वैवाहिक जीवन संबन्धी अपना अलग दृष्टिकोण बताने का धैर्य वह दिखाती है।

राची अपनी पूर्व कथा मनु को सुनाती है। वह रज्जन से प्यार करती थी। रज्जन कस्बे का एक गुंडा है। जब राची चौदह वर्ष की रही थी तब रज्जन ने उसे शब्द के शारीरिक अर्थ में रेप किया। रज्जन की पशुता ने उसे आहत किया वह छिप छिपकर रोयी किन्तु उसकी आंसुओं में रज्जन इतना प्रतिच्छवित होने लगा कि वह रज्जन केलिए कामना करने लगी। उसने रज्जन के साथ गृहस्थी चलाने का सपना भी देखा। उसने धैर्य संभालकर अपनी इच्छा मां से प्रकट की। लेकिन मां उसे एक गुंडे को देने केलिए तैयार नहीं थी। तब उस छोटी सी ने लड़की सीधे रज्जन से भी पूछ ली। वह भी उसे ब्याह करने केलिए तैयार नहीं था। जिसने उसकी देह को नोचकर अबोध अस्तित्व को आहत किया उसी को वरण करने का आग्रह उसे होती है। अपने अस्तित्व का नाश करनेवाले की जिन्दगी नष्ट करने की इच्छा और विद्रोह की भावना उसके मन में जागृत होती है। तभी कस्बे के चौधरी घराने से ब्याह का संदेश आया। विवाह के बाद वह सेज पर बैठकर रंग-भरे सपने देख रही है तब पति शराब पीकर आते है और उसे पलंग से फर्श पर घसीट लेता है। क्योंकि वह मुंशी की बेटी है, वह अपनी औकात को न भूलने केलिए पति यह कार्य करता है। दो वर्ष तक वह पतिव्रता नारी की तरह सारी पीड़ायें बर्दाश्त करती रही। एक बार ज्वर में तपती उसकी देह को दबोचना चाहकर पतिदेव आते है। तब दो वर्षों से

---

[220] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. **32**

कुचलती उसकी अस्मिता जाग उठती है। वह पतिदेव की इच्छा को इनकार करती है "दो वर्ष तक मैं सब कुछ बर्दाश्त करती रही। एक रात नशे में उन्मत्त पति पुरूष से ज्वर में तपती मेरी देह को दबोचना चाहा, तो मैं ने विद्रोह कर दिया।"[221] क्रुद्ध होकर पतिदेव उसके उदर पर लात मारता है। वह बेहोश हो जाती है और किस स्वप्न को उदर में वह पलती है वह भी नष्ट हो जाता है। लेकिन वह पराजित नहीं होती। वह चौधरी से तलाक लेती है और फिर पढ़ने लगती है। " मैं फिर पढ़ने लगी। अपने भीतर के सारे दरवाज़े बंद कर मैं केवल बाहर की दुनिया में रहने लगी कि मुझे पढ़ना है, कि नौकरी मिले, कि मुझे नौकरी इसलिए करती है कि मुझे जीना है।"[222] हॉ, दृढनिश्चयी मन कभी भी हार नही मानता है। वह पढ़कर कॉलेज की लेक्चरर बनती है। पूर्व पति चौधरी फिर भी उसके पास आते है अब उन्हें जीने केलिए कुछ चाहिए।

मनु को यह पसन्द आता है। तब वह कहती है कि "...लेकिन मैं उस जानवर को भी जीते जी मरने नहीं दे सकती...मैं किसी को भी मरने नहीं दे सकती...।"[223] इतने अधिक पीड़ा सहने पर भी वह पत्नी का धम—पति के प्रति निष्ठावान रहना-नहीं भूलती है। अब भी वह पत्नी के परंपरागत रूप के प्रति निष्ठावान रहकर अपने अस्तित्व को पहचानती है। मनु विवाहित है, यह जानकर भी वह मनु के घर आती है। उसकी पत्नी जो गर्भवती है, यह पसन्द नहीं करती है। वह राची को नमस्कार तक नहीं करती और पति से इस 'डायन' को यहां से ले जाने को भी कहती है। राची को इस पर कोध नहीं आता और उसकी कमज़ोर पत्नी को किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाने केलिए कुछ रूपए भी देती है।

राची को क्षय हो गया और वह मर गयी। यह सूचित करके नैरेटर को पत्र मिलता है। नैरेटर राची के निशब्द टूटने का साक्षी रहा है। और यह निशब्द उनके भीतर अनकहे शब्दों में ध्वनित प्रतिध्वनित होता रहा है।

---

[221] कड़वे सच ः दीप्ति खण्डेलवाल, पृ. 35-36

[222] वही, पृ. 36

[223] वही, पृ. 39

अनेक यातनायें सहकर पत्नी बार-बार टूटती दीख्र पड़ती है।लेकिन वह अस्मिता को पहचानती है और जिन्दगी के अनेक टुकडों को जोड़कर जीति है तथा जिन्दगी में विजय प्राप्त करती है।

'पच्चीस साल की लड़की'

समाज की परंपरागत मान्यता है कि नारी के जीवन का एकमात्र लक्ष्य विवाहित होकर पुरूष की सेवा करना है।समाज की धारणा है कि अविवाहित रहनेवाली नारियां सबके सब बूरी नारियां है।उत्तराधुनिक युग होने पर भी समाज की मन ः स्थिति में उल्लेख्रनीय बदलाव नहीं आया है।विवाहित औरतें अक्सर सोचती हैं कि दुनिया-भर की लड़कियां उनके पति का डाका डालने वाली है।

ममता कालिया द्वारा रचित 'पच्चीस साल की लड़की' की नायिका मिस्टर शर्मा जी की स्टैनो है जो पच्चीस उम्र की है और विवाह अभी तक नहीं हुआ है।वह एक दिन मिस्टर शर्मा के घर, उपनिर्देशक के निर्देशानुसार कुछ कागज़ों पर हस्ताक्षर कराने केलिए आती है।मिसेज शर्मा परंपरागत नारी है।अविवाहित नारियों के बारे में समाज की संकुचित मनः स्थिति देख्रने को मिलता है मिसेज़ शर्मा के शव्दों में।आगे मिसेज़ शर्मा दफ्तर की सारी नारियों का आंकडा लेना शुरू करती है कि कुल कितनी लड़कियां दफ्तर में काम करती हैं, उनमें से कितनी विवाहित-अविवाहित है, कितनी परित्यक्ता और कितनी विधवा? आगे नायिका सहित सभी अविवाहित लड़कियों को सलाह देती है कि "...ज़माना बहूत ख्रराब है।लड़की का पांव जरा फिसला नहीं कि फिसलता चला जाता है।उम्र भर रोना पडेगा फिर।" [224] यह सुनकर नायिका सोचती है कि 'वे अपने जप, तप और व्रत से ही क्यों नहीं सीधे-सीधे मुझे भस्म कर देतीं? क्यों ऐसी की तैसी कर रही है।अगर मैं पापी हूँ, तो उनके ताप से निश्चित जल जाऊँगी।"[225] बॉस की बीवी को नाराज़ करने की हिम्मत और हिमाकत उसमें नहीं है इसलिए उनका विद्रोही स्वर मन में उठती मिटती है '...मेरा मन हुआ, कहूँ, एक ताला शर्मा जी की पैंट की पोटी में अटका कर

[224] ममता कालिया की कहानियॉ : ममताा कालिया ,पृ. **332**
[225] वही, पृ .**332**

उसकी भी चावी अपने गुच्छे में लटका लीजिए और चैन की नींद सोया कीजिए मिसेज़ शर्मा!व्रत के सहारे कब तक पति को साधें रहेंगी।पर मैं छुन्नी बनी बैठी रही।'[226] बातचीत के बीच मिसेज़ शर्मा उससे पूछती है कि तुम शादी कब कर रही हो? तब वह सोचती है कि 'मूर्ख मिसेज़ शर्मा।क्या वे नहीं जानती कि हमारे यहाँ लड़कियाँ शादी करती नहीं हैं, उनकी शादी हो जाती है।'[227] संकोच से नायिका 'कोई मिलता ही नहीं इस लायक' का बहाना बनती है।मिसेज़ शर्मा सभी नारियों को कोसकर कहती हौं तो लड़की कटू जवाब देना चाहती है लेकिन मिसेज़ शर्मा को कोधी बनाने की हिम्मत उसमें नहीं है।इसलिए वह मिसेज़ शर्मा के कहने पर सहमती प्रकट कर माता द्वारा चुने गये लड़के का बहाना बनकर छुट्टी लेकर घर जाने की इच्छा प्रकट करती है।तब मिसेज़ शर्मा तैयारी करने का आदेश भी देती है।

नारी को पच्चीस साल की उम्र होने के पहले ही उसकी शादी होनी है।समाज की इस गलत मनःस्थिति नारी अस्मिता केलिए बाधा डालती है।अस्मिता केलिए प्रयत्नशील और चिंतनशील नारी को भी गुलाम बनानेवाली समाज की मनःस्थिति का पर्दाफाश प्रस्तुत कहानी में हुआ है।समाज में प्रचलित गलत अवधारणाओं पर व्यंग्य भी करती है।

'शहर के नाम'

उत्तराधुनिक युग होने पर भी भारत में स्वयं निर्णय लेने का अधिकार लड़कियों को न मिलता है।पढ़ाई नौकरी और विवाह के निर्णय भी प्रायः माता-पिता लेते हैं।स्वयं निर्णय लेने के उम्र तक बड़ा होने पर भी लड़की के जीवन संबन्धी सभी कार्यों में अन्तिम निर्णय माता-पिता का है।कौन-सा कपड़ा पहनना है या क्या खाना है जैसी छोटी सी बातों में भी निर्णय लेने की अनुमति यहाँ की लड़कियों या युवतियों को अक्सर न मिलती है।

अस्मिता की तलाश में निरत युवतियों को सत्तरोत्तर कहानी में पर्याप्त स्थान मिला है।मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'शहर के नाम' शीर्षक कहानी **1975** के आपात कालीन संदर्भ को लेकर लिखी गई है।मां-बाप को छोड़कर अस्मिता को कायम करते हुए जीवन बिताने का निर्णय

---

[226] ममता कालिया की कहानियाँ : ममताा कालिया ,पृ. **333**

[227] वही,पृ **333**

लेनेवाली लड़की की कहानी है 'शहर के नाम'। लड़की के पिता एक प्रशासक और सरकारी अफसर है। लड़की पिता की इकालौती बेटी है। वह तो राजनीतिके गंदे दलदल में फंस जाती है। वह मज़दूरों की झुग्गी-झोंपड़ी बस्तियों में, गली-गली जाकर शोषण भ्रष्टाचार, प्रदूषण आदि के विरूद्ध आवाज़ उठाकर नाटक किया करती है। इस प्रकार अनभिज्ञों को समझाने की कोशिश भी करती है। लेकिन यह कार्य उसके पिता को पसंद नहीं है। इसलिए वह अपनी इज्जत की प्रतिष्ठा केलिए मान मर्यादा का ख्याल करके लड़की को एम. एस. की पढ़ाई केलिए अमरीका भेज देते है। वहाँ हैरी नामक युवक से उसकी मुलाकात होती है। वह एक भोली-भाली लड़की होने के कारण अपनी इच्छाओं को प्रकट कर एक खत हैरी को भेजती है। लेकिन लड़की के चाह के अनुसार जीवन बिताने केलिए वह तैयार नहीं है। अमरीका में रहना लड़की को पसंद नहीं है। इसलिए वह सोचती है कि 'नहीं रहूँगी और वहाँ, मैं ने तय कर लिया। सब दोस्तों से कह दिया, मैं वापस लौट रही हूँ अपने देश। बप्पा को भी लिख दिया, फौरन टिकट के पैसे भेज दो; मैं लौट रही हूँ अपने शहर तुम्हारे, पास।"[228] खत के जवाब में पिताजी अपनी अनिच्छा प्रकट करके झाड़ू लगाकर या बर्तन रगड़कर स्वयं कमाने का आदेश देता है। इसके अलावा फीस सीधा कॉलेज में जमा करवाने का निश्चय भी करते है। लड़की लौटने की इच्छा प्रकट करते हुए मां को भी खत लिखती है। बप्पा इस बार भी जवाब देता है। एक बार फिर लड़की पिताजी से खत द्वारा पूछती है कि "मैं तो तुम्हारा ही हाथ बँटा रही थी, फिर मेरी वजह से-तुम्हारा अहित-अपमान कैसे हो गया। क्या इतना बड़ा जुर्म था मेरा कि एकदम देशनिकाला दे देना पड़े।"[229]

माताजी अपने खत में याद दिलाती है कि वह इकलौती सन्तान होने के कारण बप्पा की आशाओं-महत्वाकांक्षाओं की पूरा करने का दायित्व उसको है। यह खत पढ़कर लड़की सोचती है कि 'उनकी महत्वाकांक्षा पूरी करने की जिम्मेदारी मेरी क्यों है? अगर बप्पा के एक बेटा भी होता, दो-चार और बेटे बेटियां होते तब भी वे इसी तरह अपनी आशाएँ महत्वाकांक्षाएँ उन सबसे पूरी करवाते? बाप रे, तब तो ढेरों महत्वाकांक्षाएँ ढोनी पड़तीं उनको। या एक ही

---

[228] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ ,100

[229] वही : पृ. 102

महत्वाकांक्षा बंट चुट जाती।'[230] अगले खत में वह कान्वेंट में भर्ती होकर नन बन जाने की इच्छा प्रकट करती है।साथ भी चार बच्चों की मां भी बनना चाहती है।खत पढ़कर पिताजी अपने एक दोस्त को लड़की पर नज़र रखने केलिए लिखता है।लेकिन वह आदमी सिर्फ एक दिन उससे मिलने केलिए आता है, फिर नहीं।

लडकी प्यार बांटना चाहती है।सभी के बीच प्यार बांटते हुए जीना चाहती है।पिता के खत का वह जवाब नहीं देती है।मन-ही-मन निश्चय करती है कि 'बप्पा, अब और यहॉ नहीं रहूँगी।तुमने जो कहा है वही करूँगी, झाड़ू लगाऊँगी, बर्तन रगड़ूँगी और टिकट के पैसे जमा होते ही अपने शहर लौट आऊँगी'[231] जिन्हें समाज इज्जत नहीं देता है वह उन्हीं लोगों से मिलना चाहती है।वह अपनी इच्छा प्रकट करती है कि "मैं उन्हीं लोगों से मिलना चाहती थी जिन्हें समाज इज्जत नहीं देता और इजाजत नहीं देता इज्जत पाने की कोशिश करने की।उस शहर में ऐसे अनेक दूषित कोने थे जहॉ कानून की इजाजत पाकर काम करने केलिए किसी का पूर्वग्रह विशेष था नहीं।'[232] वह पिताजी की इच्छा पूरी करने केलिए जूठन साफ करने का काम करती है।यह जानते वक्त पिताजी उसे लिखता है कि पैसों की ज़रूरत हो तो लिख देना है।एक बार फिर वह अपने शहर लौट जाने का निश्चय करती है कि 'पर एक ज़रूरत मुझे है ज़रूर।वापस अपने शहर लौट जाने की।उसी केलिए कमाकर पैसा जमाकर रही हूँ।'[233] वह आजकल पिताजी को खत नहीं लिखती है। वह सोचती है कि "मैं आजकल उन्हें खत नहीं लिखती।जब लौटकर जाऊँगी अपने शहर तो खुब समझकर बात करूँगी उनसे तुम्हारे पैसों से ही लौटकर आयी हूँ, बप्पा, तुम्हारे कमाये पैसे या तुम्हारी राय से मेरे कमाये, कोई फर्क नहीं है न।मुझे लौटना था मैं लौट आयी।अब से तुम्हारे जूते मैं पॉलिश किया करूँगी।शीशे से चमका करेंगे।पता है मैं कौन हूँ, द ग्रेटैस्ट पॉलिशर ऑफ द वर्ल्ड, द चैंप।प्लेटें चमका चमकाकर

---

[230] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ ,103

[231] वही :पृ 104

[232] वही :पृ 104

[233] वही :पृ 105

ऐक्सपर्ट हो गये हूँ...पर इन्तज़ार करना है अभी। अभी तो जूठन साफ करनी है मुझे।'[234] वह बार बार शहर लौटने की इच्छा प्रकट करती है। "...मैं लौटूँगी अपने शहर...."[235] बप्पा द्वारा भेजा जेब खर्च और प्लेटें साफ करके जमाया पैसे भी जुड़कर वह अपने शहर लौटने केलिए टिकट खरीदती है।लड़की अपनी पढ़ाई अथूरी से छोड़कर विदेश से अपने शहर में पहूँचती है।एक होटल में रूक जाती है।वह समझती है कि इस होटल की जगह पहले एक युवराज का महल था।सन् **1975** में आपातकाल के समय उस युवराज को जो उस समय विपक्ष का संसद था गिरफ्तार कर लिया था।तब युवराज ने स्वाभिमान की रक्षा केलिए कमरे के भीतर खुदकुशी की।और युवराज के घोडों को भी पुलिस ने घेरकर उनके पैरों में नाल ठीक दी थी और रेस के घोड़े बन्द धावक धोड़े बन गए थे।लडकी अपनी तुलना इस युवराज से करती है।जिस समय पुलिस ने युवराज को स्थानभ्रष्ठ किया उसी समय लड़की को भी बप्पा ने देश से निकाल दिया है।वह अपने शहर में लौट आने की तीव्र इच्छा प्रकट करती है।लेकिन लौटने पर उसे लगता है कि यह उसका शहर नहीं है।

लड़की ने जब घोड़ों को देखा तब लड़की की विद्रोही चेतना और अस्मिता की भावना जाग उठती है जैसे घोड़ों से उसे प्रेरणा मिली हो।अन्त में वह निर्णय लेती है कि दुर्बल तथा लाचार लोगें की सहायता केलिए वह अपना जीवन समर्पित करेगी। " मैं याद रखूँगी मेरे पैरों में नाल नहीं ठुकी, मैं खुले मैदान में दौड़ सकती हूँ। अपना रास्ता चुन सकती हूँ।रेस के ट्रैक पर दौड़ना लाजिमी नहीं बना सकता कोई मेरे लिए।मैं आज़ाद रखूँगी खुद की उन लोगों के साथ रहने केलिए जो रेस में शरीक होने लायक नहीं है।"[236] वह इस आशय को प्रकट कर अपने पिता और माता को शहर के नाम लिख देती है और कहानी यहीं समाप्त हो जाती है।

प्रस्तुत कहानी के आरंभ से अन्त तक अपनी अस्मिता के अनुसार जीवन बिताने की तीव्र इच्छा प्रकट करनेवाली लड़की सामने आती है।माता-पिता से बन्दी बनाकर, परंपरा के

---

[234] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ ,**106**

[235] वही :पृ **107**

[236] वही :पृ **112**

अनुसार जीवन बिताना वह नहीं चाहती।स्वयं निर्णय लेकर अपनी रास्ता चुनने का धैर्य उसकी अस्मिता की प्रबल सबूत है।

'अनाड़ी'

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद साठ वर्ष बीत जाने पर भी उच्च वर्ग और निम्नवर्ग के बीच का भेदभाव पहले के समान बना रहता है।दोनों वर्ग आपस में घृणा और द्वेष का भाव प्रकट करते है।अछूतेपन का भाव मन में होते हैं।बाहरी बर्ताव में यह प्रकट नहीम् होता।निम्नवर्ग के लोग आर्थिक दुर्दशा के कारण उच्चवर्ग के यहां नौकर-चाकर बन जाते हैं।नौकर अपनी असमर्थता के कारण खुलकर मालिक के विरूद्ध विद्रोह नहीं कर पाता।इसलिए वह मन ही मन विद्रोह करता हैं।

मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'अनाड़ी' सुवर्णा नामक लड़की की कहानी है।सुवर्णा निम्नवर्ग की लड़की है।अब बारह वर्ष की है।मन करता है स्कूल जाने की, साथ की छोकरी सहेली से खेलने की, झूला झूलने की, बिस्कुट दूध खाने की।अब वह बंबई के एक समृद्ध परिवार में नौकरानी के रूप में बर्तन मलने का काम करती है। जब वह आठ वर्ष की थी तब उसने तीन छोड़ पांच घर में भांड़े मलना शुरू किया था।बाप का काम छूट गया था और मां अकेली क्या कैसे संभाले।इसलिए वह छोटी लड़की होने पर भी काम केलिए निकली।उसे अपने मालकिन के आलसी स्वभाव पर बड़ी चिढ़ आती है।सुवर्णा को देखकर लोग बेचारी लड़की कहती है।लेकिन उसे 'बेचारी' सुनना अच्छा नहीं लगता।स्वाभिमानी सुवर्णा को सेठ और मालकिन की हमदर्द और शब्दिक सहानुभूति से चिढ़ है।इसलिए उसका विद्रोही मन सोचता है कि 'इतना तरस आ रहा है तो भेज दो न इस्कूल।करवा दो उसकी पढ़ाई-लिखाई का इन्तज़ाम।ना, वो इनके बस का नईं।फिर कौन करेगा झाड़ू-फटका, कौन मलेगा भाँदे।चः ।और ये बेचारी-बेचारी बी कितने दिन करेंगे।मक्कार! मतलब पड़ा तो थमा देंगे केला या पाव।नईं चइए सुवर्णा को।उसे चइये बिस्कुट।जब तक मिले।'[237]

---

[237] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ ,46

मालकिन की साज-सिंगार देखकर सुवर्णा के मन में भी साज-सिंगार करने की इच्छा जाग उठती है। वह मालकिन के आईने के सामने बैठकर क्रीम, लाली पाउडर और लिपस्टिक भी लगाती है। एक दिन वह देखती है कि मालकिन एकदम नवा रंग लायी है नरप-रंगने को। चमक से सुवर्णा रिपंची जाती है मालकिन के पास। और अपने हाथ में नेल पालिश लगाने की इच्छा भी प्रकट कती है। मालकिन ज़ोर से हॅसते हुए उसका हाथ पकड़कर उसके नख पर रंग डालती है। जब सेठ खाने केलिए आता है तब सारी कहानी मालकिन उन्हें सुनाती है। तब सेठ ाग बबूला हो उठते हैं। यह सुनकर सुवर्णा डरने लगा कि कहीं छड उठाकर पिल पड़ा तो...सेठ सारा सामान ताले में बन्द करते हैं। एक दिन भॉडे मलने के बाद सुवर्णा बिस्कुट मांगती है तो बाई देकर कहती है "ले मर" यह सुनकर सुवर्णा के मुँह का स्वाद खराब हो जाता है। "मैं क्यों मरूँ? तू मर । 'उसने हिन्दी में कहा। तीन-चार बार। विलेन की तरह मुँह बनाकर। तब भी मन हल्का नई हुआ।'[238] बाई सोचती है कि सुवर्णा हिन्दी नहीं जानती। बाई मराठी नहीं जानती। इसलिए सुवर्णा जानबूझकर मराठी बोलती है उससे। जब बाई बूरे शब्दों में गुस्सा प्रकट करते है तो स्वाभिमानी सुवर्णा भी पीछे हटती नहीं। वह हिन्दी में इसका जवाब देकर अस्मिता को प्रकट करती है।

सुवर्णा किचन से उठकर बैठक में आ जाती है और सोफे पर बैठकर उन्मुक्त भाव से बिस्कुट खाने लगती है। 'चारों तरफ देखकर सबसे बड़े सोफे पर पसर गयी, ये टॉग फैलाकर, एकदम सेठ के माफिक। और उसी के माफिक धीरे-धीरे बिस्कुट कुतरने लगी।'[239] बिस्कुट कुतरने के साथ साथ बदन हिलाकर गाना भी शुरू करती है। तब बाई वहां आ जाती है। उसकी इस धृष्टता से चिढ़कर घर से बाहर कर देती है। हाथ छुड़ाने की कोशिश बेकार हुई तो सुवर्णा ने चिल्लाकर कहा 'कल से नई आऊँगी काम पर 'तब बाई उसका हाथ पकड़ती है और घसीटते हुए घर के दरवाज़े से बाहर धकेल देती है और कल से काम पर न आने का आदेश देकर खटाक से दरवाज़ा बन्द करती है।

---

[238] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ ,48

[239] वही :पृ 49

इसप्रकार सुवर्णा आखिर अनाड़ी निकली।निम्नवर्ग के होते हुए भी वह मालकिन के सामने अपनी अस्मिता को छोड़ने केलिए तैयार नहीं होती।घरेलू नौकरानी होने पर भी अपनी स्वाभाविक इच्छाओं को दबाने केलिए वह तैयार नहीं।दृढ़तापूर्वक वह अपनी इच्छाओं को प्रकट करती है।यह उसकी अस्मिता की सबूत है।

'रेशम'

भारतीय परिवार का केन्द्र पुरूष ही है।वह नारी या पत्नी पर अधिकार जताना चाहता है।परिणामतः स्त्री का व्यक्तित्व अक्सर दमित हो जाता है।परिवार केलिए त्याग और सहनशीलता प्रकट करनेवाली स्त्री भी अक्सर पुरूष के द्वारा पददलित हो जाती है।आखिर कब तक सहा जाय पुरूषों का आधिपत्य? पुरूष की अहमन्यता और अमानुषिक व्यवहार के विरूद्ध नारी का अस्तित्वबोध जाग उठता है।वह स्वयं निर्णय लेकर विद्रोही स्वर उठाती है।

'रेशम' मृदुला गर्ग द्वारा लिखित नारी अस्मिता को अभिव्यक्त करनेवाली सशक्त कहानी है।प्रस्तुत कहानी की नायिका हेमवती पति को परमेश्वर माननेवाली पीढ़ी का है वह पति बाउजी से भय खाती थी क्योंकि उसका पति कठोर नियंत्रण और अनुशासनपूर्ण व्यवहार के आदमी है।पर मुँह खोलकर विरोध भी नहीं करता है।बाउजी और हेमवती के बेटे हैं रामू और राजू।ये दोनों पिता के विरूद्ध फिजूल खर्च है।बेटे के फिजूलखर्च देखकर पिताजी भुनभुनाते है।रामू की शादी के बाद घर में टी. वी. खरीदा है।उस पर हुए खर्च से सख्त नाराज़ होनेवाला पिता ही सबसे ज़्यादा वक्त टी. वी. के सामने गुज़रता है।फिर भी वह बेटे को कोसता है।

हेमवती एक बार नन्हा राजू को कुछ पैसे जमाकर राजू की इच्छा के अनुसार किकेट का बढ़िया बल्ला खरीदती है।बऊजी इस पर नाराज़ होकर उन्हें एक मुश्त घर का खचद्द देना बन्ध कर देता है।तब से उन्हें दिन भर के खर्च केलिए रोज़ सुबह भिखारिन सा हाथ पसारना पड़ता है। 'रोज़ सुबह हिसाब लगाकर दिन भर के खर्च को पैसे पकड़ाते थे और शाम को उनसे पूरा हिसाब तलब कर लेते थे।अगला दिन, अगली सुबह पर।हर सुबह हाथ फैलाकर दस बीस रूपए लेने में वे भिखारिन सा महसूस करती थीं।तमाम दिन पैसे-पैसे की गिनती करते बीतती

थी।शाम तक, हाथ स्वाली होने पर वही भिखमंगापन दूनी ताकत के साथ उन पर हावी हो जाता था।'[240] एकबार रामू की बहू तारा ने बाऊजी के घर लौटने पर उनसे पूछ बैठी थी कि वे महीने का खर्च एक साथ माताजी को क्यों नहीं देते।

"रोज़-रोज़ हाथ फैलाने में आदमी जलील महसूस करता है।"उसने टोका था।

"आदमी?"बाऊजी ने त्योरी चढ़ाकर पूछा था।

"औरत सही" तारा ने कहा था, "औरत भी आदमी, मेरा मतलब, इन्सान होती है।"

सवाल इन्सानियत का नहीं, अक्ल का है।पैसा संभालना आना चाहिए, इनके हाथ पर रख देता तो बना लेता मकान।तब इतने ठाट से रहने की नहीं मिलता, बहू।"[241] रामू ने अपने कमरे में एयरकंडीशनर लगवाया और बैठक में भी कूलर लगवाने का प्रस्ताव किया।वह भी बाऊजी को पसन्द नहीं आता।राजू की बहू प्रीति जो वकील की लड़की ने हेमवती से कहा "सारा कसूर आपका है, माताजी ।पायदान बनेंगी तो पायदान बनाएगा आदमी।साफ-साफ कह क्यों नहीं देती, इतनी कंजूसी करनी है तो खुद चलाओ गृहस्थी।"[242] प्रीति वकील की लड़की होने के कारण कानून की पक्षधर, स्त्री के समानाधिकार पर दो टुक बात करनेवाली भी है।बार-बार प्रीति के कहने पर बाऊजी वसीयत में अपनी पत्नी के नाम कुछ इन्तजाम कर देते है।

एक बार बेा राजू बाऊजी से बिना पूछ-नाछे उनके कमरे में कूलर रख गया है।उसे यह पसंद नहीं है।खाने की मेज़ पर वह दोबारा इसके बारे में कहता है तो प्रीति ने जवाब देती है कि सभा को गरमी तो लगती है।तब बाऊजी कोध से भरकर कहते है कि "हॉ-हॉ क्यों नहीं? ऐसा करो, अपनी सास को लाली-पाउडर लगाना भी सिखा दो।कूलर लगा है तो मेकअप भी होना चाहिए।पसीना आने पर बह नहीं जाएगा।" इस बार प्रीति तैश में आ गयी थी, "तो क्या हुआ?" उसने कहा था "अमरीका में सत्तर-सत्तर बरस की औरतें सज धजकर रहती है।यहॉ .. बाऊजी और ठठाकर हॅसे थे "तो अमरीका चले जाओ तुम लोग।इन्हें भी साथ लेते

---

[240] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ ,78

[241] वही :पृ 79

[242] वही :पृ 80

जाओ।सजा धजाकर दूसरी शादी कर देना।कोई मोटी अक्लवाला फॅस ही जाएगा।"[243] सब भौंचक रह गये थे और प्रीति खाना बीच में छोड़कर उठ गयी थी।जाकर उनके कमरे से कूलर बाहर निकाल लायी थी।फिर किसी ने उनके कमरे में कूलर नहीं रखा था।हेमवती इस बात पर खुश होती है कि उसके दोनों बेटे राजू और रामू पिता के समान नहीं है।दोनों अपनी कमाई पत्नी के हाथ में देते है।कमाते है और खर्च भी करते है।जब राजू और प्रीति ने हेमवती को अमरीका बुलाया था तब बाऊजी ने उन्हें जाने से रोक दिया था।

बाऊजी का देहान्त हो गया।अठावनी के दिन तारा जोर करके बढ़िया रेशम की सफेद साड़ी पहनवा गयी।वे कहते हैं कि इतने लोग आएँगे साड़ी ढ़ंग की होनी ही चाहिए।उस रेशमी साड़ी का बड़ा नरम सा स्पर्श हेमवती की स्पुरदरी हथेलियों को लगता है।रेशम के सुखद स्पर्श और कूलर की हवा के कारण उसे बड़ा ठण्डा लगता है।उसने वहॉ बैठकर कमरे में होनेवाली औरतों की भीड़ को देखा।उसे लगा कि किसी के चेहरे पर हमदर्दी या गम नहीं केवल ऊब और औपचारिकता नजर आती है।पति के देहान्त पर और कोई आदमी दुःखी नहीं लगता है।हेमवती भी बहूत दुःखी नहीं है।वह अनेक वर्षो से पति द्वारा दी गयी मानसिक पीड़ाओं को एक आदर्श पत्नी के बहाने झेलती थी।उनकी अस्मिता को बूरी तरह कुचलकर बाऊजी जिन्दगी बिताता था।हेमवती को लगता है कि अब समय आ गया है।अपनी दबी हुई इच्छाओं की अस्मिता को उठाकर प्रयोग में लाने की बड़ी ज़रूरत है। 'सहसा एक नये अहसास ने उन्हें घेर लिया।वे न हॅसी, न लंबी सांस भी।अपनी सफेद रेशमी साड़ी अच्छी तरह संभालकर उठीं और सीधी खड़ी हो गयी। "चलिए उठ जाइए सब लोग।" सधे स्वर में उन्हों ने कहा "शोक खत्म करो,दरी का कोना मीड़ दो।और चाय बना लाओ, सबके लिए।एक बार उठकर बैठ जाइए आप।'[244] हेमवती के दृढ़ स्वर सुनकर सब औरतें भौंचक उठ खड़ी हुई।उनके व्यक्तित्व में आए परिवर्तन को देखकर बहू तारा तथा अन्य औरतों भी आश्चर्यचकित हो जाती हैं।सोचती है कि यह पागल हो गई है।तब वह 'कमर से सीध खींचकर कद ऊँचा किया और दृढ़स्वर में

---

[243] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ , **83**

[244] वही :पृ **84**

बोली। "मैं कह रही हूँ न, उठावनी हो ली, सीग खत्म। आप लोग चाय पीकर जाओगे तो मुझे अच्छा लगेगा। खड़ी क्यों ही, तारा। जाओ चाय बना लाओ।"[245] हेमवती पहचानती है कि उनका स्वर बहूओं की तरह आत्मविश्वास से भरकर रेशम हो उठा है। वह धीमे से मुस्कुरायी और साड़ी को बदन से कसकर लपेटा और वापस फर्श पर बैठ गयीं।

अनेक वर्षों से हेमवती की अस्मिता पीड।ा सहकर चुप रह जाती है। जब वह अपने आपको पुरूष से मुक्त पाती है तब वह अपने अनुरूप जीवन जीना प्रारंभ कर देती है। समय बीत जाने पर भी वह अपने व्यक्तित्व का चुनाव स्वयं करती है।

'बीच का मौसम'

उत्तराधुनिक युग में नारी घर की चहारदीवारी के भीतर रहना नहीं चाहती। आज नारी चेतना का व्यापक विकास हुआ है। पुरूष के बिना भी जीवन यापन करने केलिए वह सक्षम हो गयी है। वह सोचती है कि पुरूष के साथ कदम मिलाकर चलने से जिन्दगी में बहूत कुछ छूट जाता है। इसके अलावा खुद अपने बच्चे को जन्म देना और पालना ही बहूत मुश्किलहो जाता है। इसलिए नारीत्व की पराकाष्ठा-मातृत्व-को तृप्त करने केलिए किसी भी बच्चे को गोद लेकर नौकरी के सहारे उसका पालन-पोषण और निर्वाह करना ही उचित है।

जवानी और बूढ़ापे के बीच की वयःसंधी की त्रासदी से गुजरनेवाली पम्मी राजश्री माया और क्षिप्रा नामक चार स्त्रियों की कहानी है मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'बीच का मौसम'। इन चारों के जीवन में पुरूष तथा बच्चों का अभाव है। पम्मी स्कूल में टचिर है। वह मोशा नामक कुत्तिया का पालन पोषण करती है और जीवन में कभी भी पति या बच्चे को चाहा ही नहीं। राजश्री ने अपने वैवाहिक बकसे से बाहर निकलकर एक दूकान खोली थी। माया जो कथा नैरेटर है- दिल्ली में महिला और बालकल्याण विभाग में डायिरेक्टर है। उसका पूर्व पति सरकारी अफसर तो है ही काफी पैसेवाला तथा रसूखवाला आदमी है। लेकिन माया को अपनी नौकरी छोड़कर उसके पीछे पीछे घूमना पसन्द नहीं। इसलिए उसने अपने पति को छोड़ दिया है, पर नौकरी

---

[245] शहर के नाम : मृदुला गर्ग, पृ , 84

नहीम्।क्षिप्रा के पति ओबोन का किसी से चक्कर चल रहा है और वह हफ्ते में तीन दिन दौरे का बहाना करके शहर से बाहर रहता है।ये चारों रविवार में क्षिप्रा के बगीचे में सम्मिलित हो गयी।अकेलेपन की समस्या बातों में उमड़ आयी।

पम्मी जो अथ्यापिका है पति या बच्चा चाहा ही नहीं।वह कहती है कि "...मैं मां नहीं बनीं, इसका मतलब यह नहीं, कि जो चाहे मुझे धोका दे ले।पता है, स्कूल में पढ़नेवाले मेरी क्लास के छोटे छोटे बच्चे भी यही सीख कर आते हैं, घर से।औरतें मां है बस और कुछ नहीं।मैं नका भ्रम तोड़ देती हूँ।उन्हें बतलाती हूँ कि उनके मां केलिए बच्चे ज़रूरी नहीं है।"

"वाह क्या खुब" राजश्री कटाक्ष किया "बड़े खुस होते होंगे सुनकर।कितना सुरक्षित महसूस करते होंगे।"

"वैसे नहीं, पैदा करना ज़रूरी नहीं है, कहती हूँ"[246] वह सोचती है कि पुरूष के बिना भी नारी जीवन बिता सकती है।वह शादी-शुदा को बेकार भी समझती है।...तेरा क्या तूने शादी ही नहीं की।"

"इसलिए नहीं की।पति साले सब बेकार होते हैं।द्रौपदी के पांच थे।तो? बचा लिया था उसे ? "[247] वह पति या बच्चे चाहा भी नहीं। उधर पम्मी अब भी चालू थी, कह रही थी " मैं ने पति या बच्चा कभी चाहा ही नहीं। मीरा के रहते हुए मुझे कभी अकेला नहीं लगा।"[248] वह पति औत बच्चे या परिवार के स्थान पर मीशा नामक एक कुत्तिया को बिठला रखा है।वह अपनी अस्मिता पर विश्वास करती है।वह चाहे तो माया की अंगनवाड़ी से एक बच्चा लेकर पाल सकती है पर मीशा के रहते उसे उसकी ज़रूरत नहीं है।किसी अनाथ बच्चे को गोद लेना उसे दिलचस्पी का बात भी नहीं है।"...चाहूँ तो तेरी अंगनवाड़ी से बच्चा लेकर पाल सकती हूँ।पर मीरा के रहते मुझे ज़रूरत नहीं है समझी।पाल ले, पम्मी, पाल ले, क्षिप्रा ने नशीली उत्कंड़ा के साथ कहा इसकी अम्गनवाड़ी का एक बच्चा तो ढ़ंग का जीवन जिये।"

---

[246] समगमःमृदुला, पृ 107

[247] वही :पृ 107

[248] वही :पृ 108

"मुझे दिलचस्पी नहीं है"एक तरफ पम्मी झल्लाई तो दूसरी तरफ मैं।"[249] इस प्रकार वह उत्तराधुनिक नारी बनकर पति और बच्चे के बिना भी जीवन बिताने का धैर्य प्रकट करती है।यह उसकी अस्मिता का सबूत है।

हर आदमी को जवानी और बूढ़ापे के बीच की वय संधि जो कभी शैशव और यौवन के बीच झूल आयी थी गुज़रना पड़ता है।पर औरत को यही हाल अकेलेपन की समस्या ज़्यादा गहराई से छुता है।राजश्री अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहती है कि "मेरे पति बच्चे है।पर उनसे क्या? बच्चों की अपनी अलग जिन्दगी है।पति को ढ़ेरें काम अपनी लगी लगाई नौकरी में ने छोड़ी न होती तो शायद इतना कष्ट उठाकर..."[250] इसप्रकार राजश्री पति और बच्चे होने पर भी जिन्दगी में अकेली हो जाती है।उसका सोचना है कि एक कुत्ते के न रहने पर दूसरा ला सकता है और उसे मीशा का नाम देकर रखा भी सकता है।पर बच्चों के साथ तो ऐसा नहीं किया जा सकता।यह सुनकर माया राजश्री को सुझाव देती है कि अब उसके बच्चे जवान हो गए है।उन्हें आज़ाद छोड़कर किसी अनाथ बच्चे को गोद ले लो।लेकिन राजश्री जानती है कि ऐसा करना आसान नहीं है।मैंने उसका हाथ कस कर नाम लिया।मुँह से निकला "राजश्री, तुम्हारे बच्चे अब जवान हो गए।उन्हें आज़ाद छोड़ दो।हमारे देश में ऐसे बहूत बच्चे हैं जिन्हें, घर की ज़रूरत है।एक बच्चा गोद ले लेना।लेगी? "वह चौंककर पीछे हट गई।"इतना आसान नहीं है, उसने कहा।[251] राजश्री की व्यथा यह है कि उसके दोनों बच्चे बाहर हैं।लेकिन अपनी हो बच्चे के स्थान पर किसी दूसरे को बिठाने का साहस उसमें नहीं था।

क्षिप्रा का दुःख यह है कि उसके पति ओबोन का किसी से चक्कर चल रहा है और वह हफ्ते में तीन दिन दौरे का बहाना करके शहर से बाहर रहता है।"पति क्षिप्रा हँस पड़ी।खाली गिलास सीधा करके उसमें बीयर उंड़ेलते हुए बोली "पति को इसमें नहीं भर सकते।"[252] हर औरत पति को अपना ही समझती है।पति पर दूसरी औरत की छाया भी पड़ना वह पसन्द नहीं

---

[249] समगमःमृदुला, पृ 108 - 109
[250] वही :पृ 105
[251] वही :पृ 113
[252] वही :पृ 104

करती है।क्षिप्रा जिनकी बोतल लेकर लौट आयी तब वह पति के बारे में सहेलियों से कहती है कि "हफ्ते में तीन दिन दौरे का बहाना करके शहर से बाहर रहता है, "पहले यहीं थी, अब लखनऊ चली गई, एक अदद पति भी है न ।तबादला हो गया उसका तो सामान साथ जाना ही था।पर, बोली लगानेवाले, पीछे करने से बाज़ नहीं आते।"[253] उसके मत में वह मां न बन पाने के कारण उसका पति इधर-उधर मुंह मारता घूमता है।मैं मां नहीं बन पाई, इसी से ...इधर-उधर मुंह मारता घूमता है...मैं...सब कसूर मेरा है, उसने कहा"[254] कथा नैरेटर माया और क्षिप्रा के पति ओबोन के बीच के संबन्ध के बारे में क्षिप्रा जानती है।बच्चा न होने का क्षिप्रा का दुःख समझकर एक बच्चे को गोद लेने का सुझाव कथा नैरेटर ने किया।

ओबोन पिता नहीं बन सकता।इसलिए वह क्षिप्रा को कोसता है।और एक अनाथ बच्चे को गोद लेने की अनुमती भी नहीं देता।लेकिन माता की ममता या वात्सल्य की भावना से नारी को अलग नहीं किया जा सकता।नारीत्व की पूर्णता मां बनने में है।मां बनने की नारी की प्रबल इच्छा को दबा नहीं सकता।इसलिए क्षिप्रा भी एक बच्चे को गोद लेने का, पालने का निश्चय करती है। 'उसके स्वर में गहरी आस्था की गूँज थी।मैं ने ललक कर पूछा, "तुम...लोगी न एक बच्चा"

"हां" उसने दृढ़ता के साथ कहा,"ओबोन कौन होता है मुझे रोकनेवाला।बरसों इस घर को बनाया संवारा है मैं ने।मेरी पूरा हक है इस पर।समझ ले यही मेरी नौकरी है।"[255]

पति द्वारा दी गई यातनाओं को चुपचाप स्वीकार कर क्षिप्रा निष्ठावान बन जाती है।क्षिप्रा नौकरी करना चाहती है और मां बनकर नारीत्व की पूर्णता को प्राप्त करना चाहती है।लेकिन पति उनकी इच्छाओं को कुचलते है।अम्त में क्षिप्रा जाग उठती है।मातृत्व के संबन्ध में स्वतंत्र निर्णय लेने का धैर्य वह दिखाती है।इसमें पति का कोई बन्धनकारक आदेश मानने

---

[253] समगमःमृदुला, पृ 107

[254] वही :पृ 107

[255] वही :पृ 114

केलिए वह तैयार नहीं।वह अपनी अस्मिता के अनुसार जीवन बिताने केलिए दृढ़ निश्चय भी करती है।

कथा नैरेटर माया दिल्ली में महिला और बाल कल्याण विभाग में डायरेक्टर है।उसका पूर्व पति सरकारी अफसर है जो काफी पैसेवाला तथा रसूखवाला आदमी है।अपनी मनपसंद नौकरी को छोड़कर पति के पीछे भागना वह पसंद नहीं करती।माया के अनुसार नौकरी कर लेने से ही नारी की अस्मिता सुरक्षित हो जाती है।इसलिए उसने अपने पति को तो छोड़ दिया है पर नौकरी नहीं। "पर मैं ऐसी धत्ती थी कि मुझे न अपनी नौकरी छोड़कर, या मातहत पदवियां स्वीकार करके उसके पीछे-पीछे घूमना मंजूर था न उसकी अतिरिक्त कमाई से समझौता करना।तलाक लेते समय अपने स्वतंत्र अस्तित्व का उदात्त आदर्शों का निजी अस्मिता का कितना ढ़ोल पीटा था मैं ने।"[256] न वह अपनी स्वतंत्रता को किसी के हाथों सौंपना चाहती है न दूसरों केलिए विशेषकर परिवार केलिए अपनी ही भावनाओं का बलिदान करना चाहती है।तलाक लेकर वह स्वतंत्र रूप से काम करती है फिर वह सोचती है कि "पर क्या वाकई, कोई स्वतंत्र अस्तित्व बन पाया मेरा? घर के बाहर जाकर नौकरी कर लेने से ही क्या अस्मिता सुरक्षित हो जाती है ? "[257] क्षिप्रा के पति ओबोन और माया के बीच संबन्ध है।आगे चलकर क्षिप्रा के बातचीत से कथा नैरेटर समझती है कि ओबोन की जिन्दगी में इन दोनों के अलावा एक और औरत भी है।तब वह समझती है कि पुरूष के साथ कदम मिलकर चलने से बहूत कुछ छूट जाता है।इसलिए वह दृढ़निश्चय लेती है कि अब से वह मनमाने ढ़ंग से जीवन बितायेगी। "जाने दो ओबोन को।दूसरी औरत उसे मुबारक हो।बसन्त के इस छोटे से वक्फे को मैं मौसम की तरह जिऊँगी।दुनिया में कितना कुछ है, देखने, करने की।दिलचस्प लोग, दर्शनीय स्थान, अधूरे उद्देश्य ।सच, पुरूष के साथ कदम मिलाकर चलने के किस्से में, बहूत कुछ छूट जाता है, जीवन में।अब वक्त आ गया है कि मैं अपनी रातों पर जिऊं, पुरूष के ही नहीं, पुरूष सत्ता

---

[256] समगमःमृदुला, पृ 106

[257] वही :पृ 106

के साथ भी।"[258] छोड़ क्यों नहीं दिया ऐसे पति को, अपनी मर्जी की ख़ुद मालिक क्यों नहीं बनी, मेरी तरह मैंकहने को हुई पर, उस क्षण, अपने से बेईमान नहीं हो पाई।"[259]

वह सरकारी अफसर होने पर भी भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज़ उठाया नहीं बरसों से चली आ रही भ्रष्ट व्यवस्था को समूल ख़त्म करना चाहती है।अंत में वह समझती है कि नौकरशाही का सफाया किया जा सकता है उसे साफ नहीं किया जा सकता।वह अपनी नौकरी छोड़कर भी बच्चा गोद लेना चाहती है।वह राजश्री और पम्मी को एक बच्चे को गोद लेने का सुझाव देती है।पम्मी इनकार करती है और राजश्री इसे मुश्किल समझती है।तब माया दृढ़तापूर्व क कहती है कि "...फिर भी मैं तो लूँगी।और यह नौकरी भी छोड़ दूँगी।कुछ ऐसा करूँगी जिसमें वाकई कुछ कर सकूँ।"[260] तब क्षिप्रा माया को नौकरी न छोड़ने का सुझाव देती है कारण बच्चे की ज़रूरतें पूरी करने केलिए पैसा भी तो चाहिए।साधनहीन इन्सान कुछ नहीं कर पाता।इसलिए उसको नौकरी नहीं छोड़ना चाहिए।

आज नारी 'स्व' की अनुभूति तथा व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना को ऊँचा स्थान देती है।शिक्षा के आधार पर उसे नौकरी मिली और यह नारी को आत्मविश्वास आर्थिक सुरक्षा तथा आत्मसजगता प्रदान करती है।आज की नारी किसी भी हाल में अपने आप को पुरूष से हीन मानने को तैयार नहीं है।उनका अस्तित्व पुरूषों के समकक्ष है।वह अपनी अस्मिता को पहचानती है।इसके अनुसार जीवन बिताने केलिए जागृत भी है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि सत्तरोत्तर काल में नारी अस्मिता को अभिव्यक्त करनेवाली सैकडों हिन्दी कहानियों की रचना हुई है।सदियों-सहस्राब्दों से पीड़ित-प्रताड़ित भारतीय नारी की मुक्ति केलिए इन कहानियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

---

[258] समगमःमृदुला, पृ **108**

[259] वही :पृ **110**

[260] वही :पृ **113**